नेहरू :
सोवियत दृष्टि में

नेहरू :

सोवियत दृष्टि में

सम्पादक :
लियोनिद मित्रोखिन
एवं
निकोलाई फेदिन

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली • पटना

अनुक्रम

नेहरू :
सोवियत दृष्टि में

दिल्ली १९६१ : जवाहरलाल नेहरू और लिओनिद ब्रेज़नेव
एक कृषि प्रदर्शनी देखते हुए

मास्को, जून १९५५ बच्चे सम्मानित भारतीय अतिथि का फूलों और मुस्कान से स्वागत करते हुए

मास्को क्रेमलिन मे दर्शनीय स्थान देखते हुए

जून १९५५ : जवाहरलाल नेहरू
और इंदिरा गांधी क्रेमलिन
के फेसेट्स् पैलेस में
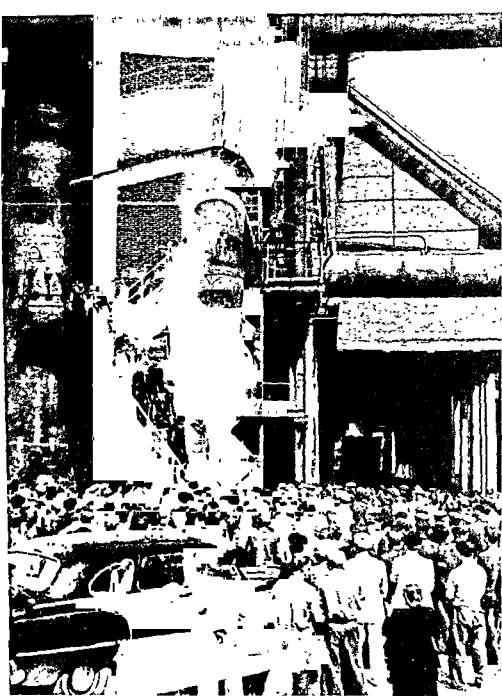
रुस्तावी, जॉर्जियन एस एस आर के एक इस्पात कारखाने में भारतीय मेहमान

जॉर्जिया की राजधानी त्बिलिसि के एक अंगूर-बागीचे में
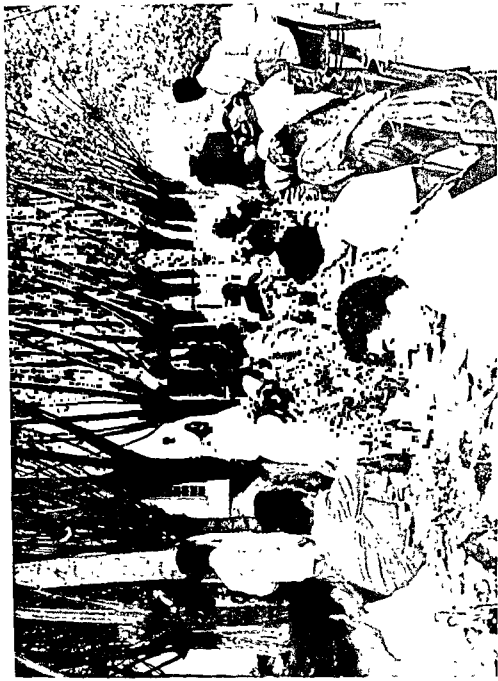
उज्बेक कलेक्टिव फार्म मे स्वागत

मास्को जून १९५५

अल्ताई क्षेत्र में

एक प्रेस कांफ्रेंस
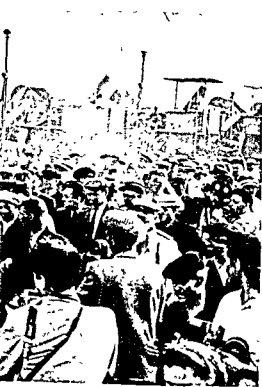
के एक खेत में

जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गाँधी पुराने समरकंद में, जो अपनी शिल्प कला के खजाने के कारण प्रसिद्ध है

सावोहत आज़िम्जातोवा, निदेशिका ओरियंटोलॉजी इंस्टीट्यूट ऑफ उज्बेकिस्तान एकेडेमी ऑफ साइंस के साथ इस संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रंथ देखते हुए
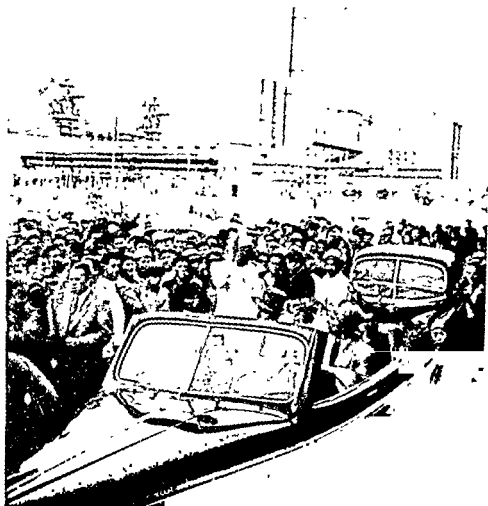
माग्नितोगोर्स्क स्टील प्लाट के मजदूरो मे मिलते हुए

जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी : सोवियत राज्य के सस्थापक
व्लादीमिर इलियच लेनिन की समाधि पर माल्यार्पण
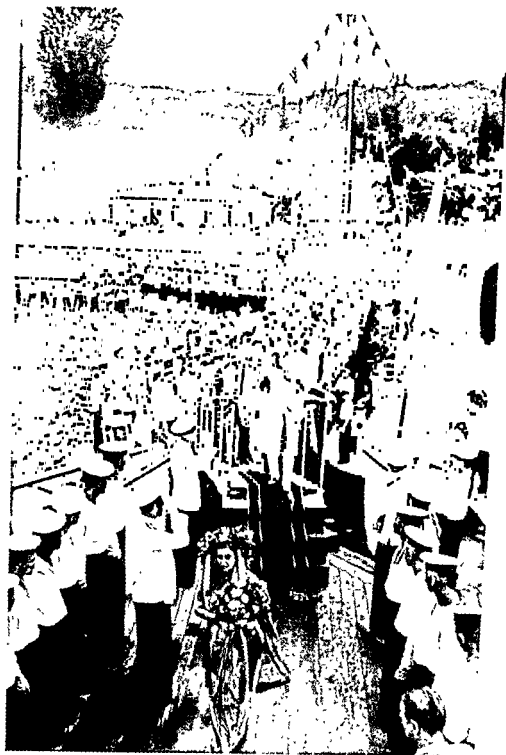
आतंक से विदाई

उज्बेक किसानों से मुलाकात

ताशकन्द ऑपेरा एण्ड बैले थियेटर मे

सितम्बर १९६१ : जवाहरलाल नेहरू मास्को के सेंट्रल चिल्ड्रन थियेटर के कलाकारों के साथ रामायण के मंचन के बाद

मास्को में राष्ट्रीय आर्थिक उपलब्धि-प्रदर्शनी के पंडाल में

वोल्गोग्राद मे मामायेव हिल पर उन रूसी सैनिकों के स्मारक पर
जो १६४२ में नाज़ी आक्रामको से लड़े

भारतीय मेहमानों को फूलमालाएँ व तोहफे

लेनिनग्राद टर्बाइन प्लांट मे

भिलाई इस्पात कारखाने में धमन भट्टी में पिघला हुआ इस्पात देखते हुए

कलकत्ता, फरवरी १९६० · इण्डो-सोवियत मैत्री की एक मीटिंग में
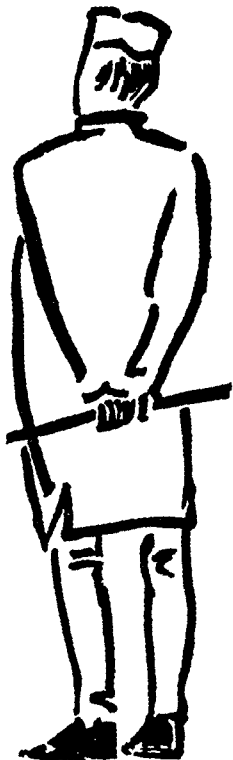
जवाहरलाल नेहरू : सोवियत इण्डोलॉजिस्ट एम० पोतावेंको द्वारा अंकित एक रेखाचित्र। रेखाचित्रकार ने इसका शीर्षक दिया था : 'राजपथ'

जवाहरलाल नेहरू और सोवियत संघ

२०वीं शताब्दी के भारत के राजनीतिक इतिहास में जवाहरलाल नेहरू एक अद्वितीय स्थान के अधिकारी है। "इतिहास और उनके समकालीन उन्हें एक *ऐसे व्यक्ति के रूप में स्मरण करते है जिसमे गहन दार्शनिक प्रज्ञा, प्रगाढ* मानवतावादी दृष्टि, सामाजिक अन्याय के प्रति उत्कट विरोध-भावना थी, जो साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का प्रवल शत्रु, शान्ति और प्रजातंत्र का समर्पित योद्धा तथा सोवियत संघ का मित्र था।"[1]

सिद्धान्तकार और राजनीतिवेत्ता के रूप में नेहरू के जीवन को, उस जीवन को जो संघर्ष और जिज्ञासा से भरा हुआ था, सापेक्ष रूप में ही देखा जा सकता है और उसका मूल्यांकन उन क्रांतिकारी परिवर्तनो की रोशनी में ही किया जा सकता है जो हमारे युग की विशिष्टता रहे है, उस युग की जिसकी शुरुआत रूस मे १६१७ की सफल सामाजिक क्रांति के साथ होती है।

नेहरू अपने पूरे जीवन-काल में सचेत मन से भारत को उपनिवेशवादी बन्धनों से मुक्त कराने, उसे एक महान् प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य की स्थिति तक पहुँचाने के लिए अथक प्रयत्न करते रहे। भारत के सामाजिक और आर्थिक पुनर्जीवन को, विश्व-शान्ति और विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले देशों के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए संघर्ष को नेहरू के अपरिसीम योगदान का समुचित मूल्यांकन विद्वानों तथा राजनीतिक पत्रकारो के सम्मिलित प्रयास से

१. प्रोफेसर आर० उल्यानोव्स्की, नेहरू : बिल्डर ऑफ दें न्यू इण्डिया, इन्टरनेशनल अफेयर्स, न० ६, १६७४, पृष्ठ १०६।

किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय सीमित होते हुए भी काफी विस्तृत है। इसमें नेहरू और सोवियत संघ विषय पर या यों कहें कि इसके एक पक्ष पर विचार किया गया है, और वह पक्ष है विभिन्न सोवियत विद्वानों, वैज्ञानिकों और सरकारी अधिकारियों द्वारा भारत और सोवियत संघ के पुनर्मिलन को सम्वर्धित करने में नेहरू की भूमिका, और साथ ही भारत की आन्तरिक तथा विदेश-नीति के निर्माण और भारत एवं सोवियत संघ के बीच विश्व-शान्ति तथा सामाजिक प्रगति के लिए इन दोनों देशों के सम्मिलित कार्य में सर्वतोमुखी सह-योग की भूमि तैयार करने मे नेहरू के योगदान का मूल्यांकन।

भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को विक-सित और सुदृढ़ करने में जवाहरलाल नेहरू के कार्य की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। नेहरू उन लोगों मे से थे जिन्होने इन सम्बन्धो की आधारशिला रखने तथा सोवियत-भारत मैत्री की स्थापना करने मे प्रत्यक्ष योगदान किया है। यह मैत्री आज विश्वास, समानता और पारस्परिक लाभमूलक सहयोग की सुदृढ आधारशिला पर स्थित है।

उपलब्ध अभिलेखो का सावधानी के साथ अध्ययन करने से हम सोवियत संघ के प्रति नेहरू का रुझान किस प्रकार विकसित हुआ, इसके विषय में कुछ नये तथ्यो से परिचित होते हैं और कुछ पहले से परिचित तथ्य काफी स्पष्ट होकर हमारे सामने आते हैं। एक समय यह धारणा प्रचलित थी कि नेहरू ने सोवियत संघ की 'खोज' १९२७ मे पहली बार यूरोप जाते हुए की थी जब वे कुछ समय के लिए मास्को मे रुके थे और उसी समय वे पहली बार समाज-वादी विचारों से आकर्षित हुए थे। वस्तुत' बहुत पहले १९१९ में लिखे गये अपने लेख 'भारत की स्वाधीनता' में नेहरू ने अपने-आपको समाजवाद का समर्थक बताया था और भारत के भविष्य के लिए रूस की समाजवादी क्राति की महत्ता तथा प्रासंगिकता पर विचार किया था। उसी लेख मे उन्होने कहा था कि अक्तूबर क्रान्ति को जिन विचारों ने सम्भव बनाया था उनका पूर्वाग्रह-मुक्त एवं आलोचनात्मक अनुसंधान उस समय भारत के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं के समाधान के लिए महत्वपूर्ण होगा।

जवाहरलाल नेहरू महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के १०वें वार्षिक समारोह के लिए नवम्बर १९२७ के प्रारम्भ मे मास्को पहुँचे थे। उस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता उनके पिता मोतीलाल नेहरू, उनकी पत्नी कमला और उनकी छोटी बहन कृष्णा उनके साथ थी। वह यात्रा एक

ऐसे समय में की गयी थी जब ब्रिटिश उपनिवेशवादी भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच अभेद्य दीवार खड़ी करने की भरसक चेष्टा कर रहे थे, सोवियत-भारत सम्बन्धों के इतिहास में एक उल्लेखनीय घटना थी।

भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेताओं द्वारा सोवियत संघ की यात्रा का श्रेय अन्य बातो के अलावा इस तथ्य को था कि १९२०वें दशक के उत्तरार्द्ध मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपना रुख प्रतिक्रियावादी ताकतों के विरुद्ध सोवियत सघ के नेतृत्व में साम्राज्यवाद-विरोधी ताकतों के संघर्ष की रोशनी मे तय कर रही थी। यह यात्रा उस समय सोवियत देश मे होने वाले समाजवादी कायाकल्प में उन नेताओं की रुचि से भी समान रूप से प्रेरित थी। जवाहरलाल नेहरू, जो उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वामपथी दल के नेता थे, अपनी पार्टी की विदेश नीति के भावी निर्माताओं में से एक थे और बाद में प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने भारतीय गणतंत्र की विदेश नीति का भी निर्माण किया।

फरवरी १९२७ में जवाहरलाल नेहरू ने उपनिवेशवादी दमन और साम्राज्यवादी दमन के विरुद्ध ब्रसेल्स में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। बेल्जियम की राजधानी में वे एक मान्यताप्राप्त नेता के रूप में पहुँचे थे। नेहरू उन कुछ तरुण काग्रेस सदस्यों में से एक थे जो रूस की सफल अक्तूबर क्रान्ति से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। अपने राजनीतिक जीवन के इस काल का स्मरण करते हुए नेहरू ने पत्रकार टिबोर मेन्डे को १९५६ में बताया था कि "बोलशेविक क्रान्ति सचमुच बड़ी उत्साहवर्द्धक घटना थी। उस समय हमें इसके बारे मे ज्यादा जानकारी नही मिली…लेनिन और दूसरे नेताओं के साथ हमारी बहुत ज्यादा सहानुभूति थी…"[1]

मास्को पहुँचने से कुछ सप्ताह पूर्व भारत के समाचार-पत्र 'फारवर्ड' मे नेहरू का लेख 'भारत की विदेश नीति' छपा था, जिसमें उन्होने व्यापक भारत-सोवियत सम्बन्धों का समर्थन किया था। उन्होने लिखा था, "कोई कारण नही है कि भारत रूस के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित न करे।"[2] नव सोवियत राज्य ने अपने देश की शिक्षा, कृषि तथा औद्योगीकरण के विकास के लिए जो रचनात्मक पद्धतियाँ अपनायी थी, नेहरू ने उनके सतर्क अध्ययन की आवश्यकता का प्रतिपालन किया था।

१. जे० नेहरू, द फर्स्ट सिक्स्टी ईयर्स, न्यूयॉर्क, १९६५, खण्ड १, पृष्ठ ५७।
२. फॉरवर्ड, २६ अक्तूबर, १९२७, पृष्ठ ७१।

उसी लेख में नेहरू ने ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन की उन चेष्टाओं का फर्दाफाश किया था जो सोवियत संघ को भारत का शत्रु प्रमाणित करने के लिए की जा रही थीं। नेहरू ने लिखा था, "रूस के अलावा शायद ही कोई दूसरा देश शान्ति की इतनी आवश्यकता महसूस करता है, और केवल भय अथवा उसके नियन्त्रण से बाहर परिस्थितियाँ ही उसे युद्ध की ओर धकेल सकती हैं...भारत का रूस के साथ कोई झगड़ा नहीं है, वह उसके साथ पर्याप्त सहानुभूति रखता है और रूस में ऐसा बहुत कुछ है जिसकी भारत प्रशंसा करता है।"[1] नेहरू ने अपने साथी देशवासियों को एक और खतरे से आगाह किया था, एक बहुत वास्तविक खतरे से कि भारत को कहीं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हित के लिए रूस के विरुद्ध लड़ाई में न धकेल दिया जाय।

नेहरू परिवार ८ नवम्बर, १९२७ को मास्को पहुँचा था। बाद में नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा, "हमें खुशी थी कि हम थोड़े समय के लिए ही सही, वहाँ गये लेकिन वह थोड़ी-सी झलक भी हमारे लिए मूल्यवान थी। नये रूस के बारे में इससे हमें ज्यादा जानकारी नहीं मिली और न मिल ही सकती थी, लेकिन इससे हमें अपने अध्ययन के लिए एक पृष्ठभूमि मिल गयी।"[2]

मास्को में नेहरू का प्रवास अल्पकालीन किन्तु वहाँ उनका कार्यक्रम व्यस्त था। उन्होंने सोवियत जीवन के हर पहलू में जीवन्त दिलचस्पी ली। नेहरू परिवार लेनिन की समाधि पर गया, उसने क्रान्ति संग्रहालय देखा, क्रेमलिन और कला प्रदर्शनी देखी, बोलशोयी थियेटर देखा, एक अस्पताल और केन्द्रीय कृषि भवन का निरीक्षण किया।

जवाहरलाल नेहरू और उनके पिता वरिष्ठ सोवियत अधिकारियों से मिले, जिनमें सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष, मिखाइल कालिनिन और विदेश मंत्री जी० चिचेरिन भी शामिल थे। स्वदेश लौटने से पहले नेहरू परिवार सोवियत सरकार द्वारा अक्तूबर क्रान्ति के १०वें वार्षिक समारोह में सम्मिलित होने के लिए आये हुए विदेशी अतिथियों के सम्मान में आयोजित एक स्वागत समारोह में सम्मिलित हुआ।

अपनी मास्को यात्रा पर नेहरू ने अपने विचार सबसे पहले सोवियत संघ में निवास के तीसरे दिन १० नवम्बर को व्यक्त किये थे। अपनी बड़ी बहन विजयलक्ष्मी पंडित को एक पत्र में लिखा था, "....सच्चे अर्थों में पत्र लिखने

१ फारवर्ड, २६ अक्तूबर, १९२७, पृ० ७१।
२. जे० नेहरू, ऐन आटोबायोग्राफी, लन्दन, १९८२, पृ० १६४।

का समय मेरे पास नहीं है, लेकिन फिर भी मास्को से कुछ पंक्तियाँ लिख भेजना चाहता हूँ···। हमें यहाँ आये केवल ३६ घंटे हुए हैं और इस थोड़े से समय में ही हमारे ऊपर जो प्रभाव पड़े हैं और जो अनुभव हमें हुए हैं उनका विवरण देने मे दिन का एक बहुत बड़ा हिस्सा और कई पन्ने खर्च हो जायेंगे। हम एक अद्भुत देश में हैं। यहाँ आदमी के सारे पुराने मूल्य उलट-पुलट जाते हैं और जीवन एक विचित्र पहलू मे ढल जाता है।"[1] नेहरू ने आगे लिखा था, "यहाँ हर आदमी 'तोवारिस' (कॉमरेड—सम्पादक) है। बैरे या द्वारपाल या कुली को भी हमें 'तोवारिस' कहकर बुलाना पड़ता है, और सोवियत जनगण के सभापति को भी गरीब से गरीब किसान को पुकारते समय इसी शब्द का इस्तेमाल करना पड़ता है। सिद्धान्त मे यह बात बिल्कुल सही लगती है, लेकिन व्यवहार मे इसका अभ्यस्त होने के लिए कुछ समय चाहिए···। समानता की भावना यहाँ प्रबल है। हम यहाँ एक दिन विलम्ब से भी आये और महान् समारोह से वंचित रहे। लेनिन की समाधि के सामने सेना का विशाल प्रदर्शन हुआ था और पन्द्रह लाख लोग जुलूस मे निकले थे। यह एक दर्शनीय नजारा रहा होगा।"[2]

सोवियत संघ में रहते हुए नेहरू ने एक और पत्र लिखा था जो हमें लाहौर के समाचार पत्र 'ट्रिब्यून' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। पत्र १३ दिसम्बर, १९२७ का है। एक और पत्र दिल्ली के उर्दू समाचार पत्र 'हमदर्द' मे १४ दिसम्बर, १९२७ को प्रकाशित हुआ था। भारत लौटने पर नेहरू ने अपनी सोवियत संघ की यात्रा का वर्णन करते हुए अनेक लेख लिखे, जो हिन्दू, यंग इंडिया और दूसरे पत्रों मे प्रकाशित हुए थे।[3] १९२९ में यह लेख 'सोवियत रूस' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। बाद में स्वाधीन भारत के भावी प्रधानमंत्री ने अपनी पुस्तकों के सम्पूर्ण हिस्से सोवियत रूस के बारे मे लिखे। इन पुस्तको में विश्व इतिहास की झलक, आत्म-कथा और सुप्रसिद्ध भारत की खोज शामिल हैं। पर ऐसा प्रतीत होता है कि मास्को से लिखे गये नेहरू के पत्र और कहीं प्रकाशित नहीं हुए।

विजयलक्ष्मी पंडित को लिखे गये अपने १२ नवम्बर, १९२७ के पत्र में

१. लिंक, १९६७, नं० १३, पृ० ४०।

२. वही।

३. सोवियत रूस पर नेहरू के लेख दूसरे पत्रों मे भी प्रकाशित हुए थे। उदाहरणार्थ, 'हमदर्द' ने ६ अक्तूबर तथा २२ अक्तूबर, १९२८ को सोवियत रूस की शिक्षा प्रणाली पर लेख प्रकाशित किये थे।

इस बात के लिए खेद प्रकट किया है कि वे मास्को में कम से कम एक दिन और नही रुक सके। अपने पत्र को समाप्त करते हुए उन्होने लिखा है, "देश का विद्युतीकरण बडी तेजी से हो रहा है और अब तक यहाँ दर्जनों बिजली-घर बन चुके है जो बहुत बडे हैं और सारे देश मे फैले हुए है। किसानों के मुकाबले औद्योगिक कर्मचारी ज्यादा बेहतर ढंग से संगठित है। सब कही उनके अपने ट्रेड यूनियन भवन है जहाँ प्राय: भाषणो का आयोजन किया जाता है, सुन्दर वाचनालय है, और इनमे से अधिकांश पुराने सामन्तों के महल हैं जो अब कर्मचारी क्लबो या किसान भवनो में परिवर्तित कर दिये गये है। इसमें कोई संदेह नही किया जा सकता कि आम गरीबी और कम मजदूरियों के बावजूद रूस मे किसानों और कर्मचारियो की हालत दूसरे देशो के मुकाबले कही अच्छी है। इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनका नैतिक स्तर उन्नत हुआ है और भविष्य के प्रति उनके मन मे आस्था है और विश्वास है।"[1]

ये सोवियत रूस की अपनी यात्रा के दौरान जवाहरलाल नेहरू के मन पर पडे हुए कुछ बुनियादी प्रभाव थे।

भारत लौटने पर अपने अनेक सार्वजनिक भाषणो और वार्ताओ मे नेहरू ने सोवियत सघ मे होनेवाले सामाजिक परिवर्तनों तथा सोवियत सरकार की शान्ति-मूलक विदेश-नीति का आख्यान किया। नेहरू, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे, एक ऐसी पद्धति की तलाश कर रहे थे जिसके द्वारा सोवियत संघ के रचनात्मक अनुभवो का स्वाधीन भारत के निर्माण मे उपयोग किया जा सके। सोवियत सघ मे नेहरू ने जो कुछ देखा था उसके प्रति अपने पूर्वाग्रह-मुक्त उदार दृष्टिकोण के कारण ही वे सोवियत विकास की अनिवार्य तटस्थ झाँकी प्रस्तुत कर सके थे हालाँकि सोवियत जीवन के कुछ पहलुओ और कुछ सामाजिक प्रक्रियाओं को पूरी तरह समझने मे वे असमर्थ रहे थे।

कलकत्ता मे २२ सितम्बर, १९२८ को अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन को संबोधित करते हुए नेहरू ने कहा था कि वे साम्यवाद को आदर्श समाज के रूप में देखते है। उन्होने आगे कहा था कि पूर्व मे रूस एक विजेता के रूप मे या अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने वाले देश के रूप मे नही आ रहा है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि यहाँ रूस का स्वागत किया जाये। एक दूसरे अवसर पर १९२८ मे उत्तर प्रदेश स्थित झाँसी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने बार-बार इस बात पर बल दिया था कि उनकी

१. लिंक, १९४७, न० १३, पृ० ४१।

राय में भारत को उसकी सारी बुराइयों से मुक्ति दिलाने की एकमात्र वास्तविक आशा समाजवाद मे ही निहित है और यही कारण है कि समाजवाद हमारा सर्वोच्च राष्ट्रीय लक्ष्य होना चाहिए।

उसी साल अमृतसर में एक भाषण मे नेहरू ने पुराने विचारों को तोड़ने का आह्वान किया था जिससे कि उन विचारों को अपनाया जा सके जो वास्तविकताओं पर आधारित हों। एक बार फिर नेहरू ने यह कहते हुए रूस का उदाहरण दिया कि उत्पादन और वितरण के साधनो पर सार्वजनिक स्वामित्व तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के उन्मूलन को जोड़ने वाला समाजवाद ही एकमात्र ऐसा रास्ता है जिस पर चलकर भारत स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है।

भारत में जो लोग 'साम्यवाद' के नाममात्र से आतंकित रहते थे उनकी आलोचना करते हुए नेहरू ने कहा था कि रूस साम्राज्यवाद का बहुत बड़ा शत्रु है। उन्होने अपने देशवासियो को समझाया था कि अन्तर्राष्ट्रीयता एवं समाजवाद के आदर्श ही भारत के नवयुवकों के लिए एकमात्र विकल्प हैं। कुछ वर्षों बाद अपने राजनीतिक जीवन के इस काल का स्मरण करते हुए नेहरू ने अपनी आत्मकथा मे लिखा, "हर कहीं मैं राजनीतिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वतंत्रता का समर्थन करता रहा हूँ...। मैं चाहता हूँ कि समाजवाद का आदर्श प्रचारित हो, विशेष रूप से कांग्रेसकर्मियों और बुद्धिजीवियों के बीच, क्योंकि ये लोग जो आन्दोलन की रीढ़ है, ज्यादातर अत्यन्त संकुचित राष्ट्रीयतावाद के रूप मे सोचते है।"[1]

नेहरू ने अपने लेखो और अपनी पुस्तकों में सोवियत सघ में विद्यमान स्थिति का मूलतः एक तटस्थ चित्र प्रस्तुत करके सोवियत विरोधी उस प्रचार पर बड़ा प्रहार किया जो भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन द्वारा किया जा रहा था। लाखों भारतीयो के लिए इन पुस्तकों और लेखों में जैसे कोई रहस्योद्घाटन किया गया था, वे इनके माध्यम से नये रूस की पहली बार 'खोज' कर रहे थे।

नेहरू द्वारा सोवियत रूस की पहली यात्रा पर ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन मे आक्रोशमूलक प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी थी, जिसका प्रमाण ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों मे मिलता है। १९३५ में अफगानिस्तान स्थित सोवियत राजदूत की प्रस्तावित भारत यात्रा से सम्बन्धित जो पत्र-व्यवहार लंदन और दिल्ली के

१. जे० नेहरू, ऐन ऑटोबायोग्राफी, लन्दन, १९५३, पृ० १८२।

बीच हुआ था उसमें ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन के एक अधिकारी की इस आशय की टिप्पणी सम्मिलित है कि भारत स्थित ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीय अधिकारियों के शिष्ट-मण्डल को रूस न जाने देने का निर्णय किया था क्योंकि उनके वहाँ जाने से यह डर था कि उन पर अवांछित प्रभाव पड़ेंगे।

भारत मे ब्रिटिश गुप्तचर सेवा के अध्यक्ष ने भारतीयों और सोवियत नागरिकों के बीच किसी भी प्रकार के सम्पर्क का स्पष्ट रूप से विरोध किया था।[1]

सोवियत जीवन का शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो जिसका जवाहरलाल नेहरू अपने अनेक लेखों और भाषणों मे उल्लेख करने से चूके हों। सोवियत संघ मे समाजवादी विकास की जो प्रक्रिया चल रही थी उसके प्रत्येक स्तर मे नेहरू की जीवन्त रुचि थी। इस विकास के कुछ पक्ष ऐसे थे जो विशेष रूप मे सहानुभूति उत्पन्न करने वाले थे, खासकर वे जो नेहरू की राय मे राष्ट्रीय मुक्ति और पुनर्जीवन के लिए भारत के संघर्ष मे प्रासंगिक थे। उदाहरण के लिए आर्थिक पिछड़ेपन का उन्मूलन औद्योगीकरण तथा आर्थिक नियोजन, विदेशी पूँजी के प्रति रवैया, सहकारी आधार पर खेती का पुनर्निर्माण, एक पृथक् बहुराष्ट्रीय राज्य के ढांचे में राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा अन्य समस्याएँ।

सामान्य रूप से कहे तो समाजवाद के मूल तत्त्व पर और समाजवाद के अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति तथा समाजवादी आधार पर समाज का पुनर्निर्माण करने के तरीकों पर विचार करते हुए नेहरू का ध्यान सोवियत संघ के अनुभवों पर गया था। साथ ही यह बात भी स्पष्ट रहनी चाहिए कि समय-समय पर नेहरू सोवियत जीवन के कुछ पक्षों की आलोचना करते थे। लेकिन हमेशा वे सावधानी के साथ अपनी आलोचनाओं को यह कहकर हल्का कर देते थे कि उन सारी कमियों के बावजूद, जो उन्हें सोवियत रूस मे समाजवादी पुनर्निर्माण की पद्धति मे दिखायी देती हैं, उन्हे इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि रूस सच्चे अर्थों मे समाजवादी देश है जो किसी भी पूँजीवादी देश की तुलना मे मूलतः भिन्न है। नेहरू इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे: "सोवियत क्रान्ति ने मानव समाज को अचानक बहुत आगे बढ़ा दिया था और एक ऐसी आलोक शिखा प्रज्वलित कर दी थी जिसे बुझाया नही जा सकता था और उस नवीन सभ्यता की आधारशिला स्थापित कर दी

१. नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इण्डिया, फॉरेन एण्ड पॉलिटिकल डिपार्टमेन्ट, सीक्रेट फाइल नं॰ ७२-एफ (३५), १९३५, नोट्स, २।

थी जिसकी तरफ संसार आकर्षित हो सके।"[1]

नेहरू फासिज्म तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध लडाई में सोवियत संघ को एक प्रमुख रक्षक के रूप में देखते थे। २५ दिसम्बर, १९४१ की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति के 'गोपनीय' प्रारूप प्रस्ताव मे नेहरू ने सोवियत संघ पर नाजी जर्मनी के विश्वासघाती आक्रमण की तीव्र निन्दा की थी। अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता पर उन्हें पूरा विश्वास था कि अन्तिम विजय सोवियत जनता की होगी जो अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए और साथ ही अन्य लोगों को नाजी बन्धन से मुक्ति दिलाने के लिए लड़ रही थी।

नेहरू ने सोवियत संघ की दूसरी यात्रा अपनी पहली यात्रा से लगभग तीन दशक बाद १९५५ में की थी। इस बार वे प्रभुसत्ता-सम्पन्न भारत के प्रधान-मंत्री के रूप में सोवियत संघ पहुँचे थे। अब तक नेहरू के मन में यह धारणा स्थापित हो चुकी थी कि भारत और सोवियत संघ के बीच मैत्री तथा सहयोग विकसित करने की आवश्यकता है। अपनी यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व उन्होंने घोषित किया कि भारत और सोवियत संघ दोनों पारस्परिक मैत्री तथा विश्वास से लाभान्वित होगे। उन्होने आगे कहा कि वे सोवियत जनता से मिलने के लिए उत्सुक हैं। वे सोवियत सघ जाकर प्रत्यक्ष देखना चाहते थे कि सोवियत लोगों ने क्या किया है और उससे वे कुछ सीखना चाहते थे।

१९५५ मे सोवियत संघ की यात्रा के दौरान नेहरू ने जो कुछ देखा उसका उनके मन पर गहरा प्रभाव पडा। नेहरू का कहना था कि उन्होंने वहाँ ऐसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखे जिन्होने उस विशाल देश का कायाकल्प कर दिया था और इसका श्रेय सोवियत जनता के उस कठोर परिश्रम तथा आश्चर्यजनक महत्त्वाकांक्षाओं को है जो उसे अपने जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा दे रही थी।

सोवियत सरकार के नेताओं के साथ नेहरू की मुलाकातें और वार्ताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण थीं। वार्ताओं के अन्त मे एक सम्मिलित वक्तव्य जारी किया गया था जिसमें अन्य बातों के साथ इस बात का भी उल्लेख था कि अनेक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर भारत और सोवियत संघ के दृष्टिकोण में समानता अथवा निकटता है और जिसमें दोनो महान् देशों के बीच सहयोग की भावना को सुदृढ और विस्तारित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी थी।

१. जे० नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, लन्दन, १९५१, पृ० १४।

नेहरू की यात्रा के लिए बहुत विस्तृत कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। सोवियत संघ मे वे अपनी बेटी इन्दिरा गांधी के साथ पहुँचे। सोवियत जीवन के हर पक्ष से परिचित होने का उन्हें प्रत्येक अवसर प्रदान किया गया। मास्को मे रहते हुए नेहरू ने लिखा कोव मोटर वर्क्स, एक विमान कारखाने, राष्ट्रीय आर्थिक उपलब्धियों की प्रदर्शनी, मास्को विश्वविद्यालय तथा सेकेण्ड्री स्कूल नं० ५४५ का अवलोकन किया। वे मास्को मैंट्रो, 'भारतीय सस्कृति और कला' प्रदर्शनी, मास्को क्रेमलिन देखने के लिए भी गये और लेनिन की समाधि पर फलमाला चढाई।

इसके बाद नेहरू और उनकी बेटी सोवियत संघ का भ्रमण करने के लिए मास्को से विदा हुए, और ओरुगोग्राद पहुँचे जहाँ उन्होंने स्थानीय कारखाने तथा अन्य रोचक स्थानों को देखा। क्रीमियाँ में उन्होने आरोग्य भवनों तथा विश्रामगृहों और आर्टे यग पायनियर कैम्प का अवलोकन किया। जोर्जिया मे वे मुस्तागी नगर और दिगोमी स्टेट फार्म देखने के लिए गये। अश्खाबाद में कुछ समय रुकने के बाद भारतीय प्रधानमन्त्री ताशकंद गये। उन्होंने प्राचीन नगर समरकंद का भ्रमण भी किया, वहाँ स्थानीय कपास उत्पादकों से मिले तथा उज़्बेक विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिकों के दल से मिले। अल्टाटेरीटरी की ओर जाते हुए नेहरू अल्मा-आता मे रुके। अल्टाई टेरीटरी मे उन्होने कुरयीन स्टेट फार्म का अवलोकन किया जिसका निर्माण १६५४ मे बंजर भूमि कृपिकरण अभियान के समय किया गया था। इसके अनन्तर भारतीय प्रधानमंत्री मैग्नीटोगोर्स्क, स्वर्दलोव्स्क और लेनिनग्राद गये। औद्योगिक उद्यमों का अवलोकन करते समय नेहरू ने औद्योगिक प्रक्रियाओ, क्षमता तथा निष्पादन मे और औद्योगिक उपकरणो तथा मशीनी औजारो की विशेपताओं मे अत्यधिक रुचि ली। इसके साथ ही कामगरों की कार्यकारी तथा आवासिक अवस्थाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं मे भी उन्होने दिलचस्पी दिखायी।

मास्को मे नेहरू और इन्दिरा गाधी बोलसोई स्थित फाउन्टेन आफ बाख्वी सराय तथा स्वानलेक देखने के लिए गये। लेनिनग्राद मे उन्होंने किरोवओपेरा तथा बैलेथियेटर से 'द स्लीपिंग ब्यूटी' देखा। त्बिलिसी मे उन्होने त्बिलिसी ओपरा तथा बैलेथियेटर मे 'गोदा' नामक बैले देखा। ताशकंद और स्वर्दलोव्स्क मे भारतीय अतिथियो के सम्मान मे विशेप संगीत सभाओं का आयोजन किया गया था।

मास्को स्थित डायनमो स्पोर्ट्स स्टेडियम मे २१ जून, १६५५ को अस्सी हजार लोगों का जुलूस भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच बढ़ती हुई

तथा मजबूत होती हुई मैत्री का प्रत्यक्ष प्रदर्शन था। उस अवसर पर जुलूस को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि उन्होंने सोवियत संघ में लगभग तेरह हजार किलोमीटर यात्रा की है, प्रमुख नगरों का अवलोकन किया है और उन बहुत सारी चीजों को देखा है जो उनके लिए बहुत अधिक दिलचस्प हैं। किन्तु; नेहरू के शब्दों में उनकी यात्रा का उल्लेखनीय तथ्य वह हार्दिक स्वागत था जो उन्हें हर कहीं प्राप्त हुआ, और मैत्री की वह भावना थी जो सोवियत जनता के साथ मुलाकातों के दौरान इतनी मुखर होकर सामने आयी थी। नेहरू ने कहा कि वे सोवियत जनता द्वारा किये गये हार्दिक स्वागत और उसकी मैत्री के लिए उसके आभारी हैं और उन्होंने स्वीकार किया कि सोवियत जनता के प्रति अपना आभार प्रकट करने के लिए उनके पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं।

स्वदेश के लिए विदा होने से पहले नेहरू ने कहा, "सोवियत संघ में अपनी १६ दिन की यात्रा के दौरान मेरे मन पर जो प्रभाव पड़े हैं उनका वर्णन करना मुझे कठिन लग रहा है। यह एक बहुत लम्बी कहानी है। केवल मैं ही नहीं बल्कि भारत की जनता भी इसे सदैव याद रखेगी। मुझे जो हार्दिक मैत्री और आतिथ्य यहां मिला है वह मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। मेरी सबसे सुखद स्मृति उन मैत्रीपूर्ण मुलाकातों की होगी जिनसे पता लगता है कि हमारे सम्बन्धों में कितनी हार्दिकता आ गयी है।"[1]

नेहरू ने १९६१ में सोवियत संघ की अपनी तीसरी और अंतिम यात्रा की। सोवियत जनता ने एक बार फिर अपने मित्र राष्ट्र भारत के प्रधानमंत्री का उत्साहपूर्ण स्वागत किया। इस अवसर पर अपनी राजकीय यात्रा के दौरान नेहरू ने सोवियत नेताओं से तात्कालिक महत्त्व की बहुत-सी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर बातचीत की और भारत-सोवियत सहयोग की सम्भावनाओं पर विचार-विमर्श किया। उनकी बातचीत की समाप्ति पर जो संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गयी उसमें कहा गया था कि शान्ति कायम रखना दोनों देशों का सम्मिलित लक्ष्य है और भारतीय तथा सोवियत जनता के आपसी हितों को दृष्टि में रखते हुए दोनों देशों की मैत्री प्रगाढ़ होती जा रही है। यात्रा के दौरान अपने एक भाषण में नेहरू ने कहा, "मैं यहां पिछली मरतबा छह साल पहले आया था। हम सब जानते हैं...कि इन छह बरसों में हमारे दोनों देशों के बीच मैत्री-सम्बन्ध तेजी से विकसित हुए हैं और इस बीच हमारे आर्थिक तथा सांस्कृतिक

१. फोटो-एलबम, जवाहरलाल नेहरू इन द सोवियत यूनियन मास्को, १९५५।

सम्बन्ध भी बढ़े हैं···

"इस दौरान हमें आपकी ओर से बहुत-सी चीजें मिली हैं, लेकिन उन सबमें सबसे ज्यादा कीमती चीज आपकी दोस्ती ही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह दोस्ती आगे बढ़ेगी और भविष्य में और भी मजबूत होगी।"[1]

लगभग ३७ वर्षों तक जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ के साथ—यानि संयुक्त सोवियत संघ की विभिन्न प्रजातियों के प्रतिनिधियों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बन्ध सूत्रों मे बंधे रहे हैं। नेहरू ने लाखों सोवियत लोगों के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी है। २९ मई, १९६४ को सोवियत प्रधानमंत्री एलेक्सी कोसिगिन ने दिल्ली में बोलते हुए कहा था, "जवाहरलाल नेहरू का नाम क्योंकि एक ऐसे राष्ट्र के साथ जुड़ा है, जो कि उपनिवेशवाद को उसके हर सम्भव रूप में समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है और जो तमाम विवादग्रस्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल बातचीत के द्वारा शान्तिपूर्ण तरीकों से निकालने में विश्वास रखता है, यही कारण है कि सोवियत जनता को यह नाम बहुत प्रिय हैं। वह शान्ति के प्रचंड प्रहरी और विभिन्न राष्ट्रों में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के प्रबल समर्थक थे। वह गुटनिरपेक्षता की नीति के निर्माता थे। भारत सरकार आज भी इसी नीति पर आचरण कर रही है। इस सूझ-बूझ वाली नीति के कारण भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है और अब उसे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपेक्षित स्थान मिला है तो इसके पीछे भी यह नीति ही है।

"१९५५ और १९६१ मे जब जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ मे थे, उन दिनों की याद सोवियत जनता के दिलों में हमेशा ताजा रहेगी। उन दिनों हमारे देश के लोगों को एक ऐसे देश के नेता का स्वागत करने का मौका मिला, जिसने कि अपने को साम्राज्यवाद से अलग कर लिया है और अब अपने स्वतंत्र विकास मे लगा हुआ है।"[2]

सोवियत जनता नेहरू की बहुत प्रशंसा करती थी और उन्हें बहुत प्यार करती थी। बहुत से सोवियत नागरिकों ने उन्हें बधाई-पत्र लिखे हैं और उनके प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकट की है।

यहाँ बहुत से उदाहरणो मे से केवल एक प्रस्तुत है। प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार और अब भारतीय संसद् सदस्य हर्षदेव मालवीय १९६३ मे सोवियत जार्जिया की यात्रा पर गये थे। उन्होंने कारवेटिया के गुर्दजानी जिले के संयुक्त

१ सोवियत लैंड, १९६४, सख्या १२।

२. सोवियत लैंड, १९६४, सख्या १२।

लेनिन फार्म को देखने के बाद लिखा, "भारत की जनता और उसके महान् नेता श्री नेहरू के प्रति उन लोगों के मन में गहरी सद्भावना थी।" द्मित्री मामिदायसी ने कहा, "हम भारत को एक महान् राष्ट्र और उसके निवासियों को एक महान् जनता के रूप में जानते हैं। हम जानते हैं कि भारतीय जनता को कितना लम्बा संघर्ष करना पड़ा और किस हद तक साम्राज्यवादियों के शोषण का शिकार बनना पड़ा।

"लेकिन अब भारत ने अपनी स्वाधीनता प्राप्त कर ली है और उसके पास नेहरू जैसा महान् नेता है। नेहरू दो बार जार्जिया आ चुके हैं। एक बार तो अपनी बेटी के साथ आये थे। हमने उन्हें देखा है। वे हमारे मित्र हैं। वे विश्व शांति के लिए जो संघर्ष कर रहे हैं, हम उसके बारे में भी जानते हैं। उनके प्रति हम सबके दिलों में बहुत आदर है। वे अपने देश की आजादी को मजबूत बनाने और आर्थिक प्रगति करने के लिए अपनी जनता का नेतृत्व कर रहे हैं।"[1]

सोवियत संघ के सैकड़ों, बल्कि हजारों नागरिक भारत के उस महान् सपूत, असाधारण राजनीतिज्ञ, शांति के प्रहरी और भारतीय तथा सोवियत जनता की *मैत्री एवं सहयोग के प्रबल समर्थक जवाहरलाल नेहरू से व्यक्तिगत रूप से* मिलने और बातचीत करने का सुअवसर पा चुके हैं। सोवियत जनता नेहरू को सदा याद करती रहेगी।

१. सोवियत संघ, १९६३, संख्या १९।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नेहरू की भूमिका

भारत के प्रधानमंत्री और साथ-ही-साथ विदेश मंत्री होने के नाते जवाहरलाल नेहरू देश की विदेश नीति के निर्माता और प्रयोक्ता थे।

भारत के स्वाधीन होने से काफी पहले १९२७ में ही नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक संघर्षों का विश्लेषण करके कहा था कि भारत और सोवियत संघ के बीच मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है। उस समय साम्राज्यवाद कमजोर पड़ रहा था और संसार के पहले समाजवादी राष्ट्र को कुचल डालना चाहता था। नेहरू ने कहा था कि जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे इस बात को पूरी तरह साफ कर देना चाहते हैं कि ब्रिटेन के हित मे जो साम्राज्यवादी खेल खेला जा रहा है, उसमें ब्रिटेन किसी भी कीमत पर उन्हे मोहरो की तरह इस्तेमाल नही कर सकेगा। १९२७ के अन्त मे राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो प्रस्ताव पास किया उसकी मुख्य धारणा यह थी कि भारत को किसी साम्राज्यवादी लड़ाई मे न घसीटा जाये और यह माँग भी की गयी थी कि भारत को किसी भी लडाई मे हिस्सा लेने के लिए मजबूर न किया जाये। वह प्रस्ताव भारतीय कांग्रेस की विदेश नीति के सिद्धातो का निर्माण करने वाला पहला दस्तावेज था। बाद के वर्षों मे कांग्रेस ने बार-बार उस प्रस्ताव के मूल बिन्दुओ को ही उभारा और द्वितीय विश्व युद्ध तक यह प्रस्ताव ही कांग्रेस की विदेश नीति का निर्णायक आलेख बना रहा।

हिटलर के सत्ता मे आने, फासिस्ट इटली द्वारा अबीसीनिया की जनता के विरुद्ध आक्रमण करने और स्पेन मे गृह युद्ध होने के दौरान फासिस्टवाद और नाजीवाद का प्रबल विरोध करना नेहरू की विदेश नीति के प्रमुख अंग थे।

नेहरू फासिस्टवाद को साम्राज्यवाद और नस्लवाद का सबसे विकृत रूप समझते थे। और भारत इन्हीं शक्तियों के विरुद्ध तो लड रहा था।

२२ फरवरी, १९४० को अबुल कलाम आजाद के नाम एक पत्र में नेहरू ने लिखा कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नीति "रूस को कमजोर करने की कोशिश" की रही है। नेहरू ने आगे लिखा, "इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि हम रूस के बारे में ब्रिटेन की वर्तमान नीति के सम्बन्ध मे अपने तईं स्पष्ट रहे और घोषणा कर दें कि हम इस नीति के विरुद्ध हैं। यदि ब्रिटेन रूस के विरुद्ध कार्रवाई करता है तो हम न तो उसे उचित समझेंगे और न ही उसका समर्थन करेंगे।"[1]

दूसरे विश्वयुद्ध के चरित्र का विश्लेषण करने के बाद नेहरू ने युद्ध में भाग न लेने सम्बन्धी अपने पहले विचारों को बदल दिया और इस नतीजे पर पहुंचे कि भारत ब्रिटेन और फासिस्टविरोधी मोर्चे के दूसरे देशों के साथ युद्ध में भाग ले सकता है, बशर्ते कि उसकी राजनैतिक आजादी को बाकायदा मंजूर कर लिया जाये।

दूसरे महायुद्ध में नाज़ी जर्मनी और सैन्यवादी जापान की पराजय के परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी शक्तियों का ह्रास शुरू हो गया और अन्य शक्तियों का रुख उनके पक्ष मे बदल गया जो कि स्वाधीनता और प्रजातंत्र के लिए लड रहे थे। भारत की जनता अपने देश को आजाद कराने के संघर्ष मे कूद पड़ी।

७ सितम्बर, १९४६ को अन्तरिम सरकार के सर्वोच्च पदाधिकारी के रूप में अपने पहले रेडियो भाषण मे जवाहरलाल नेहरू ने भारत की राष्ट्रीय सरकार की विदेश नीति के मूल सिद्धांतों का निरूपण किया। नेहरू द्वारा निरूपित शांतिप्रिय विदेश नीति, जो कि 'नेहरू कोर्स' के नाम से प्रख्यात है, नये उपनिवेशवाद से अलग रहते हुए और उसका विरोध करते हुए भारत का स्वतंत्र राष्ट्रीय विकास करने की नीति थी। नेहरू की विदेश नीति का मूल बिन्दु किसी भी प्रकार सैनिक गुटों में सम्मिलित न होना था। स्मरणीय है कि जब विंस्टन चर्चिल ने संयुक्त राज्य अमेरिका के फुलटन नामक स्थान पर अपना वह शरारत से भरा भाषण दिया, जिससे शीतयुद्ध का आरम्भ हुआ, उसके छह महीने बाद नेहरू ने विदेश नीति सम्बन्धी अपनी मान्यताओं की घोषणा की।

इन परिस्थितियों में नेहरू द्वारा निरूपित विदेश नीति के महत्त्व को आंकने

१. जवाहरलाल नेहरू, ए बंच ऑफ ओल्ड लैटर्स, बम्बई १९५८, पृष्ठ ४१९।

जो देश उपनिवेशवादी गुलामी का जुआ उतार फेंकने और स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उनमे से अधिक से अधिक ने भारत की सकारात्मक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। खास बात यह हुई कि जो भी देश उपनिवेशवादी परतन्त्रता से अपने को मुक्त करते गये, उन सभी ने सकारात्मक तटस्थता की नीति को अपनी विदेशी नीति घोषित किया।

नेहरू बांडुग कान्फ्रेन्स के प्रस्तावकों और आयोजकों मे से एक थे। इस कान्फ्रेन्स ने एशिया और अफ्रीका के नवोदित राष्ट्रों के लिए एक स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्माण किया।

सोवियत जनता नेहरू को एक असाधारण राजनीतिज्ञ, परम विद्वान्, मानवतावादी और दार्शनिक के रूप में ही नहीं, बल्कि गुटनिरपेक्षता की नीति के निर्माता के रूप में और सोवियत संघ के एक सच्चे मित्र के रूप में भी याद करती है।

सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी राष्ट्रों के साथ मित्रता स्थापित करना भारत की विदेश नीति का एक आधारभूत सिद्धान्त है। इस नीति का निर्धारण और पालन जवाहरलाल नेहरू और उनके अनुगामियों द्वारा होता रहा है। इसका एक अच्छा उदाहरण ९ अगस्त, १९७१ को सोवियत समाजवादी गणतन्त्र संघ और भारत गणतन्त्र के बीच शान्ति, मित्रता और सहयोग की सन्धि पर हस्ताक्षर होना है। इस सन्धि ने दोनों देशों के सम्बन्धों को विकसित करने तथा आपसी सहयोग को बढाने और साथ ही एशिया और पूरी दुनिया में शान्ति कायम रखने के लिए सम्भावनाओं के नये द्वार खोल दिये हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के जनरल सेक्रेटरी लियोनिद ब्रेझनेव ने अपनी भारत यात्रा के दौरान नवम्बर १९७३ में एक भाषण मे कहा, "सोवियत संघ और भारत के प्रतिनिधि, जो कि कई वर्षों से दोनों देशों के सम्बन्धों के रूप और प्रकार की पहचान में लगे हैं, उनका कहना है कि हमारे इन दोनों देशों के सम्बन्ध शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के आदर्श सम्बन्ध हैं, यह कथन एकदम सही है। यह दो भिन्न प्रकार के सामाजिक ढाँचे के पडोसी देशों के बीच शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व है। यह निश्छल तथा उदार सहअस्तित्व शान्तिप्रियता में से जन्मा है और दोनों देशों के लिए उपयोगी है।"[1]

1. एल. आई. ब्रेझनेव, अवर कोर्स : पीस एंड सोशलिज़्म, पार्ट-४, नोवस्ती प्रेस एजेन्सी पब्लिशिंग हाउस, मास्को १९७४, पृष्ठ १२१।

भारत का राष्ट्रीय नेता

इवान मायस्की

अकादीमीशियन, ब्रिटेन में सोवियत संघ के भूतपूर्व राजदूत (१९३३-१९४३)

भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने के समय तक नेहरू और सोवियत नेताओं के आपसी सम्पर्कों के बारे में सामग्री की खोज करते हुए हमने दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय को लिखा तो संग्रहालय के डिप्टी डायरेक्टर वी. एस. जोशी ने तुरन्त उत्तर दिया और ब्रिटेन में सोवियत संघ के भूतपूर्व राजदूत इवान मायस्की को १० अक्तूबर, १९३८ को पत्र की फ़ोटो प्रति भेज दी। पत्र इस प्रकार है :

"प्रिय नेहरू,

मुझे यह जानकर कि इस समय आप सोवियत संघ की यात्रा पर नहीं जा सकते, बहुत खेद हुआ; क्योंकि मुझे इस बात का पूरा-पूरा एहसास है कि इस यात्रा के लिए आप कितने उत्सुक थे। बहरहाल, मैं आशा करता हूँ कि इस समय कारणवश जिस यात्रा को स्थगित करना पड़ा है, भविष्य में आप उसके लिए अवसर निकाल सकेंगे।

जनेवा में आपसे मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। उस भेंट की याद मेरे दिल में हमेशा ताजा बनी रहेगी।

मैं आशा करता हूँ कि अब तक आपकी बेटी और बहन यदि पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुई होंगी तो काफी हद तक सँभल अवश्य गयी होंगी।

आपका

आई. मायस्की"[1]

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि किन परिस्थितियों में जनेवा में भेंट हुई ? इस बारे में स्वयं नेहरू ने कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। अपनी आत्मकथा में उन्होंने रूस की यात्रा करने के अपने इरादे का कोई जिक्र नहीं किया, न ही इस बारे में इवान मायस्की से हुई भेंट का कोई उल्लेख किया। ऐसी स्थिति में हमारे पास इवान मायस्की के पास जाने और उनसे स्पष्टीकरण माँगने के अलावा कोई उपाय न रहा।

१. ए बन्च ऑफ ओल्ड लैटर्स, बम्बई १९५९, पृष्ठ २९१।

हम श्रकादीमिशियन मायस्की से उनके मास्को स्थिति फ्लैट में मिले। उन्होंने जो कुछ बताया, वह इस प्रकार है :

मैं याद करने की कोशिश करूँगा कि स्विट्जरलैंड में नेहरू से मेरी भेंट कैसे हुई। उस समय मैं ब्रिटेन में सोवियत राजदूत था। मेरे और नेहरू के बीच सम्पर्क अधिकारी नेहरू के प्रिय मित्र और उनके अनुगामी वी. के. कृष्णा मेनन थे। मैं कृष्णा मेनन से विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए कई बार मिल चुका था। उन समस्याओं में भारत और सोवियत संघ के जन-नेताओं और राज-नेताओं के आपसी सम्पर्क का प्रश्न भी था। नेहरू के साथ मेरे पत्र-व्यवहार को भी कृष्णा मेनन ही सँभालते थे। अब, लगभग चालीस साल बाद उस पत्र-व्यवहार की कथा को पूरी तरह याद कर पाना आसान नहीं है। मुझे याद है कि नेहरू ने सोवियत संघ की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की थी और मैंने उनकी प्रस्तावित यात्रा के लिए समुचित प्रबन्ध करा दिये थे। लेकिन परिस्थितिवश और कुछ ऐसी कठिनाइयों के कारण जिन पर कि हमारा वश नहीं था, नेहरू अपनी उस यात्रा पर नहीं जा सके। जिस पत्र की प्रतिलिपि आपके पास है, उस यात्रा के रद्द हो जाने के सम्बन्ध में लिखा गया था। ब्रिटेन में सोवियत राजदूत रहने के दौरान मैं कई बार जनेवा गया। वहीं नेहरू से मेरी कई मुलाकातें हुईं। इन मुलाकातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उन दिनों नेहरू सोवियत संघ के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने और दोनों देशों के सम्बन्ध को विकसित करने के लिए कठोर परिश्रम कर रहे थे। आप आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि उन दिनों यह काम आसान नहीं था, जबकि भारत और सोवियत संघ के बीच किसी प्रकार के शासकीय सम्बन्ध नहीं थे और अंग्रेज अधिकारी भारत और सोवियत संघ के बीच सम्पर्क स्थापित न होने देने के लिए पूरी चेष्टा कर रहे थे।

मुझे एक घटना की याद आती है। भारत के एक संस्थान ने सोवियत विदेश व्यापार प्रतिनिधि के द्वारा रूस में बनी टैक्सटाइल मशीनरी खरीदी थी। मशीन को लगाने के काम की देखभाल के लिए एक सोवियत इंजीनियर को भारत भेजा गया। लेकिन आश्चर्य कि वह इंजीनियर भारत में पहुँच नहीं सका। हमने ब्रिटिश अधिकारियों को लिखा और भारतीय संस्थान ने भी अनुरोध किया लेकिन अंग्रेज अधिकारियों ने कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं दिया और इंजीनियर को भारत में प्रवेश करने का विसा देने से साफ इन्कार कर दिया। मुझे इसमें कतई शक नहीं है कि अंग्रेजी उपनिवेशवादी प्रशासन नेहरू को सोवियत देश आने से रोकता रहा। लेकिन नेहरू किसी भी किस्म के खतरे

की परवाह किये बिना यूरोप में वामपन्थी ताकतों से सम्पर्क बनाये रहे और यहाँ तक कि सोवियत प्रतिनिधियों के सीधे सम्पर्क में भी आये :

मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे उस अद्भुत व्यक्ति जवाहर-लाल नेहरू से मिलने के अवसर मिले। वह एक असाधारण राजनीतिज्ञ और सही मायनों में भारत के राष्ट्रीय नेता थे। उन्हें यूरोप तथा एशिया की विभिन्न राजनैतिक शक्तियों के आपसी तालमेल और उनके बीच होने वाले संघर्षों की गहरी समझ थी। उन्होंने उस समय अपने देश में व्याप्त कठोर परिस्थितियों का अच्छी तरह जायजा लिया और सोवियत जनता से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने चाहे। हमारी आपसी बातचीत में नेहरू ने बार-बार कहा कि एक बार फिर रूस जाने और १९२७ की उनकी पहली यात्रा के बाद वहाँ जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हे देखने की उनकी हार्दिक इच्छा है। नेहरू समझते थे कि रूस की और भारत की जनता मे बहुत-सी बातें समान हैं और इन दोनों देशों की महान् जनता को एक-दूसरे के साथ शान्ति तथा मित्रता का व्यवहार रखना चाहिए।

मैत्री का शिलान्यास

पावेल येरज़िन

भारत में सोवियत राजनयिक प्रतिनिधि (१९४७)

१९४७ में १४-१५ *अगस्त के बीच की रात* भारत के इतिहास में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना हुई। उस रात भारत स्वतन्त्र हो गया।

नवोदित भारत राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी देशों के साथ भारत की मित्रता और आपसी सहयोग अपरिहार्य आवश्यकता बन गयी।

जैसे ही अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा उत्पन्न औपचारिक बाधाएँ समाप्त हुईं; दोनों देशों के सम्मिलित प्रयत्नों से भारत और रूस के बीच दौत्य सम्बन्ध स्थापित हो गये।

नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित सोवियत संघ में भारत की प्रथम राजदूत नियुक्त की गयीं। भारत मे सोवियत संघ के प्रथम राजदूत एक प्रमुख राज-

नयिक के. वी. नोविकोव थे। उन्होंने नवम्बर १९४७ में अपना कार्यभार सँभाला।

मुझे भारत में सोवियत दूतावास के औपचारिक उद्घाटन में सम्मिलित होने और फिर लगातार पाँच वर्षों तक भारत के नेताओं तथा जनता के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों से मिलने के सुअवसर मिले।

मैं सोवियत राजदूत के आने से एक महीने पहले भारत आ गया था। मेरा काम तमाम आवश्यक प्रबन्ध करना और दूतावास के लिए तथा उसके कर्मचारियों के लिए उपयुक्त भवन की तलाश करना था। इस सम्बन्ध में भारत सरकार के अधिकारियों ने मेरी बहुत सहायता की। दिल्ली आने के अगले ही दिन मैं जवाहरलाल नेहरू से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि भारत सरकार ने सोवियत दूतावास के लिए एक उपयुक्त भवन खोज लिया है और जल्दी ही बाकी स्थान की व्यवस्था भी कर दी जायेगी। राजदूत नोविकोव भारत आये तो वह यह देखकर बहुत खुश हुए कि दूतावास को भूतपूर्व त्रावणकोर नरेश के प्रतिनिधि का निवास-स्थान दिया गया था। यह भवन दिल्ली के सबसे सुन्दर भवनों में से एक है।

भारत की स्वाधीनता के प्रारम्भिक वर्षों मे दिल्ली में राजनयिक शिष्टाचार उतना औपचारिक नही था। प्रधानमन्त्री विभिन्न विदेशी राजनयिक संगठनों अथवा राष्ट्रीय संगठनों द्वारा दी गयी प्रायः सभी दावतों में सम्मिलित होते थे। इसके अलावा प्रायः रोज ही किसी न किसी वैज्ञानिक शोध संस्थान अथवा शैक्षणिक संस्थान का शिलान्यास होता रहता था। नेहरू ऐसे समारोहों में अवश्य सम्मिलित होते थे और उन अवसरों पर संक्षिप्त भाषण भी देते थे। हमें अवसर उनसे अनौपचारिक रूप से मिलने का अवसर मिल जाता था। मुझे ऐसा कोई अवसर याद नही आता जब कि नेहरू ने सोवियत राजनयिकों से मिलकर यह न पूछा हो कि सोवियत दूतावास का कार्य कैसे चल रहा है और उनके सामने कोई कठिनाई तो नही है। वह सोवियत दूतावास द्वारा आयोजित किये जाने वाले हर समारोह मे और हर दावत में अवश्य ही शरीक होते थे और जो भी सोवियत प्रतिनिधि मंडल भारत आते, स्वयं उनका स्वागत करते थे।

सोवियत दूतावास के कार्यकर्त्ता जब से भारत आये, तभी से उन्हें इस बात का पूरा-पूरा एहसास था कि भारतीय जनता सोवियत संघ के बारे में कितनी दिलचस्पी रखती है। जैसे ही समाचार पत्रो मे सोवियत राजनयिकों के भारत आने के समाचार प्रकाशित होने शुरू हुए, सोवियत दूतावास मे भारत के कोने-कोने से पत्र आने शुरू हो गये। हमारे भारतीय मित्रो ने अपने पत्रों मे दोनों देशों

के बीच दौत्य सम्बन्ध स्थापित होने का स्वागत किया था और सोवियत जनता को समाजवादी निर्माण में सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रकट की गयी थी। बहुत से पत्र सोवियत संघ के जन-जीवन के बारे में जानकारी देने वाली फिल्म, फोटो और पैम्फलेट्स आदि भेजने के आवेदन के साथ समाप्त होते थे।

धीरे-धीरे सोवियत संघ और भारत के बीच आर्थिक सम्बन्ध विकसित हो रहे थे। आरम्भ मे अधिकांशतः आदान-प्रदान के समझौते हुए। सोवियत संघ ने रासायनिक खाद, अखबारी कागज और कुछ औद्योगिक मशीनें भेजीं। इनके बदले भारत ने अपनी परम्परागत निर्यात की वस्तुएँ चाय, रुई और जूट सोवियत संघ को दी।

१९५५ की गर्मियों में जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ आये तो दोनों देशों के आपसी सम्बन्धों को एक व्यापक आधार और दृढ़ता मिली। उसके बाद दोनों देशों की सरकारों के प्रतिनिधि नियमित रूप से एक-दूसरे के देशों में जाते रहे हैं।

नेहरू से चन्द मुलाकातें

मिखाइल मेनाशीकोव

भारत में सोवियत राजदूत (१९५३-५७)

मैंने १९५३ में भारत में सोवियत राजदूत का कार्यभार सँभाला। दिल्ली जाने वाला मेरा वायुयान कुछ देर के लिए बम्बई रुका तो वहाँ सबसे पहले मेरी भेंट 'भारत-सोवियत सांस्कृतिक समिति' के कार्यकर्ताओं से हुई। वे बधाइयाँ और शुभकामनाएँ, लोगों का हाथ मिलाना और उनकी फूलमालाएँ मुझे आज भी याद हैं।

भारत के बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए सोवियत संघ की रेड क्रास तथा रेड क्रीसेंट सोसायटियों की कार्यकारिणी समिति की ओर से मुझे २५०,००० रूबल का एक चेक नेहरू को भेंट करने का निर्देश दिया गया था। चेक स्वीकार करने के पश्चात् नेहरू ने धन्यवाद दिया और बताया कि प्रायः हर साल देश का काफी बड़ा हिस्सा सूखे और बाढ़ से और कभी-कभी भयानक तूफानों तथा भूकम्पों से कुप्रभावित होता है, इस कारण देश की आर्थिक दशा और भी

बिगड़ गयी है। सरकार इस समस्या की विकरालता के प्रति पूरी तरह सावधान है लेकिन प्राकृतिक विपदाओं का सामना करने के लिए हमारे पास साधनों की कमी है।

नेहरू ने मुझे परामर्श दिया कि मैं देश की यात्रा करूँ। भारत के बारे में बहुत से लोगों ने लिखा है और उन लोगों में एक मैं भी हूँ, नेहरू ने मुस्कराते हुए कहा, लेकिन बेहतर यह है कि स्वयं देश को देखा जाये और सीधे उसके लोगों से मिला जाये।

मैं नेहरू के परामर्श के अनुसार चला और उनके प्रति आभार स्वीकार किया। मैंने 'अपने' भारत की खोज की—ऐसे भारत की खोज जो अपने सौन्दर्य में अनुपम है और जिसके लोग बहुत मेहनती और मिलनसार हैं।

यह ऐसा समय था जब कि उपनिवेशवादियों ने एक तरफ तो स्वतन्त्र भारत की सत्ता को स्वीकारने से इनकार कर दिया था और दूसरी तरफ उसकी आर्थिक कठिनाइयों का शोषण करके अपना प्रभाव कायम रखने की कोशिश कर रहे थे। नेहरू ने अपने देश की स्वतन्त्र विदेश नीति में सोवियत संघ के साथ मैत्री को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

हमारे दोनों देशों के मैत्री सम्बन्ध हर साल विकसित हो रहे थे। नेहरू से मेरी पहली भेंट के लगभग एक मास पश्चात् दिसम्बर १९५३ में सोवियत संघ और भारत के बीच पहला पंचवर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ। उसके बाद कई समझौते हुए। इन समझौतों में भिलाई में भारत के प्रथम इस्पात कारखाने का निर्माण, इंजीनियरिंग के भारी सामान बनाने के कारखाने का निर्माण, खदानों के संयंत्र बनाने के कारखाने का निर्माण, चश्मों के शीशे बनाने के कारखाने के निर्माण और कोरबा के कोयला क्षेत्र में कोयला खनन की सुविधाएँ प्रस्तुत करने के समझौते सम्मिलित हैं। सूरतगढ़ के सरकारी कृषि फार्म को सोवियत सहायता से विकसित करने के लिए समझौता हुआ और एक समझौता नवेली में ताप विद्युत केन्द्र बनाने के लिए हुआ। सोवियत विशेषज्ञों ने भूगर्भ सर्वेक्षण करने और देश का तेल उत्पादन बढ़ाने में अपने भारतीय मित्रों की सहायता की। भारत और सोवियत संघ के बीच नियमित वायु सेवा तथा समुद्री यात्री सेवा आरम्भ की गयी।

इन तमाम विकास कार्यों में नेहरू व्यक्तिगत रुचि लेते थे, नियमित रूप से आवश्यक विचार-विमर्श करते रहते थे और जहाँ कहीं कठिनाई पैदा होती, उसे दूर करने की पूरी कोशिश करते थे।

उन वर्षों में हमारे दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक आदान-

प्रदान भी हुआ। दर्जनों सोवियत प्रतिनिधि मंडल भारत आये और समाजवादी निर्माण में सोवियत संघ की उपलब्धियों को चित्रित करने वाली तरह-तरह की प्रदर्शनियों के आयोजन किये गये। ठीक ऐसा ही भारत ने भी किया। नेहरू ने इस आदान-प्रदान की बहुत सराहना की और इसे प्रोत्साहित किया। इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि वे भारत आने वाले प्रायः सभी सोवियत प्रतिनिधियों से मिलते रहे।

सोवियत संघ के साथ मित्रता की अपनी नीति के कारण नेहरू को कभी-कभी विरोध का सामना भी करना पड़ा। वास्तविकता यह थी कि दोनों देशों के व्यापक हितों पर आधारित एकता के पीछे जो सूझ थी, भारत मे कुछ लोग उसे शक की नजर से देखते थे। कभी-कभी तो उनका विरोध बहुत खुले रूप में सामने आता। हालांकि नेहरू नियमपूर्वक सरकार के अपने सहयोगियों के तर्कों को बहुत गौर से सुनते थे और आधारभूत महत्व के मामलों में प्रायः उनके रचनात्मक सुझावों और समीक्षा को स्वीकार भी कर लेते थे। भारत-सोवियत सम्बन्ध भी निश्चित रूप से एक ऐसा ही मामला था। नेहरू अटल और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। वह अपनी देख-रेख में भारत-सोवियत सम्बन्धों को निकटता लाने के उपायो पर अमल कराते रहे और प्रायः भारत-सोवियत मैत्री के विरोधियों के अतिरिक्त उत्साह को भी ठंडा करते रहे।

मुझे याद है कि भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अनेक बार कहा था कि जवाहरलाल नेहरू भारत के विकास के लिए समाजवादी रास्ते को स्वीकार कर सोवियत सघ के साथ मैत्री सम्बन्ध घनिष्ठ बनाने के लिए कटिबद्ध है।

नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसी प्रकार बच्चे भी उन्हें प्यार करते थे। भारत के बच्चों के लिए उनका जन्म दिन १४ नवम्बर एक पावन त्यौहार बन गया। बहुत से अवसरो पर नेहरू ने मुझे अन्तर्राष्ट्रीय बाल चित्र-कला प्रदर्शनी के विजेता रूसी बालको के लिए उपहार दिये।

नेहरू सौन्दर्य के प्रशंसक और प्रकृति-प्रेमी थे। उनकी सांस्कृतिक अभिरुचि कई दिशाओं मे फैली थी। विशेष रूप से वह राष्ट्रीय नृत्यों और शास्त्रीय संगीत मे रुचि रखते थे। यदि समय इजाजत देता तो वह भारत आने वाली रूसी बैले कम्पनियों के प्रदर्शनों को अवश्य ही देखते।

भारत में मेरे कार्यकाल के चार वर्षों मे मुझे अपने देश के राजनयिक प्रतिनिधि के रूप मे नेहरू के व्यक्तिगत मैत्रीपूर्ण सद्व्यवहार को पाने का सौभाग्य मिला। जब कभी कोई तात्कालिक महत्व की समस्या सामने हुई तो

नेहरू ने दिन अथवा रात की चिन्ता किये बिना मुझे तुरन्त समय दिया। नेहरू कोई रिपोर्ट सुनने अथवा कोई आवश्यक पत्र पढ़ने के बाद तुरन्त अपना उत्तर दे देते थे या फिर विचाराधीन विषय के बारे में उनकी राय बनती थी उसे स्पष्ट बता देते थे।

नेहरू में १७-१८ घंटे प्रतिदिन काम करने की असाधारण क्षमता थी। वह कभी छुट्टियां नहीं लेते थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा, "प्रधानमन्त्री महोदय, अपने स्वास्थ्य के प्रति इस हद तक क्रूर होना कहाँ तक उचित है ?" नेहरू ने मजाक के अन्दाज में जवाब दिया कि अगर काम दिलचस्प हो जैसा कि मेरा काम प्रायः होता है, तो वह खुद ही आराम देने वाला बन जाता है। नेहरू अपने सिद्धान्तों के प्रति आखिर तक वफादार रहे और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगातार काम करते रहे।

भारत का महान् सपूत

इवान वेनेदिक्तोव

भारत में सोवियत संघ के राजदूत (१९५८-६७), सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के उपाध्यक्ष

भारत गणतन्त्र में सोवियत राजदूत के मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे नेहरू से महत्त्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने के लिए औपचारिक रूप से और उनके निवास-स्थान पर अनौपचारिक रूप से मिलने के बहुत से अवसर मिले।

ऐसे हर अवसर पर मैं इस असाधारण राजनीतिज्ञ की गहरी राजनैतिक सूझ-बूझ के साथ ही दुर्लभ विनम्रता को देखकर चमत्कृत हुए बिना न रह सका। नेहरू में चीजों को परखने वाली तीक्ष्ण बुद्धि और साथ ही हल्की विनोदप्रियता भी थी। वह बच्चों को बहुत प्यार करते थे। वह अपने बटन-होल में नियमपूर्वक जो लाल गुलाब लगाते थे, वह उनके प्रकृति-प्रेम का सूचक था।

नेहरू के मन में अपने देश और उसके निवासियों के प्रति गहरा और अटूट

करण, उपनिवेशवाद और नस्लवाद के दुष्प्रभावों को समाप्त करना आदि हमारे समय की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर नेहरू द्वारा निर्देशित भारत के जो विचार थे, वे सोवियत संघ के विचारों के समानान्तर या फिर उनके काफी नजदीक रहे। इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि नेहरू द्वारा स्थापित भारत-सोवियत मैत्री और उनके बीच हर प्रकार का सहयोग समय के साथ-साथ और अधिक विस्तृत तथा दृढ़ होता चला जायेगा। साथ ही नेहरू का नाम उन लोगों के दिलों में हमेशा बना रहेगा, जो कि शान्ति, सामाजिक न्याय और प्रगति में विश्वास रखते हैं।

प्रेम था। उन्होंने अपना पूरा जीवन उपनिवेशवादी आतंक से मुक्ति पाने के भारतीय जनता के संघर्ष में और फिर युवा भारतीय गणतन्त्र की राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता को मजबूत करने में लगा दिया।

अपने देशवासियों के प्रति नेहरू का प्रेम उन यात्राओं में खुलकर प्रकट होता था जो कि विभिन्न औद्योगिक परियोजनाओं और बांधों, स्कूलों और प्रयोगशाला का शिलान्यास करने के लिए या फिर वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्रों अथवा सिंचाई परियोजनाओं के उद्‌घाटन के सिलसिले मे होती थी। इन यात्राओं के दौरान नेहरू अपने देश के हजारों लोगों से मिलते और उनके साथ खुलकर बातचीत करते। वे लोग नेहरू को हार्दिक मान और प्यार देते थे।

महान् प्रतिमा, गहरी सूझ-बूझ और काम करने की असाधारण क्षमता के बल पर नेहरू उस उलझी हुई प्रक्रिया को ठीक प्रकार समझ सके जो कि भारतीय समाज मे काम कर रही थी। वह रूस की महान् अक्तूबर क्रान्ति की उपलब्धियो की बहुत सराहना करते थे। सोवियत जनता समाजवादी समाज के निर्माण के लिए जो साहसिक प्रयत्न कर रही थी, नेहरू ने बहुत तल्लीनता और सहृदयता के साथ उनका अनुसरण किया। उन्होंने लिखा है कि यदि *भविष्य आशाएँ जगाता है तो इसके लिए सबसे पहले रूस को धन्यवाद देना* होगा। धन्यवाद—उस सबके लिए जो कि उसने दुनिया के लिए किया है।

भारत और रूस की मित्रता को प्रगाढ़ बनाने के लिए नेहरू के मन मे बहुत उत्साह था। वह अच्छी तरह जानते थे कि भारत सरकारी क्षेत्र मे भारी उद्योग तथा शक्ति उत्पादन केन्द्र स्थापित करके ही वास्तविक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है, इसलिए उन्होने इस्पात और भारी इंजीनियरिंग के कारखाने लगाने, कोयले और तेल की खोज के प्रतिष्ठान और विद्युत् उत्पादन केन्द्र स्थापित करने में सोवियत संघ के सहयोग को बहुत महत्त्व दिया।

सोवियत जनता नेहरू को एक ऐसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप में याद करती है, जिसने कि राष्ट्रों में आपसी विश्वास कायम करने और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तथा गुटनिरपेक्षता की नीति को अमल में लाने के लिए बराबर प्रयत्न किया। उन्होने बार-बार कहा कि भारत इस बात का खयाल किये बिना कि किसी देश मे कैसी सामाजिक व्यवस्था है, सभी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाकर ही अपनी स्वतन्त्रता को कायम रख सकता है। नेहरू द्वारा प्रतिपादित गुटनिरपेक्षता की नीति को सोवियत संघ द्वारा स्वीकृति और समर्थन प्राप्त हुआ।

सैनिक-बन्दियों की समस्या, एशिया मे सामूहिक सुरक्षा, सम्पूर्ण नि:शस्त्री-

करण, उपनिवेशवाद ग्रौर नस्लवाद के दुष्प्रभावों को समाप्त करना ग्रादि हमारे समय की महत्त्वपूर्ण समस्याग्रों पर नेहरू द्वारा निर्देशित भारत के जो विचार थे, वे सोवियत संघ के विचारों के समानान्तर या फिर उनके काफी नजदीक रहे। इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि नेहरू द्वारा स्थापित भारत-सोवियत मैत्री ग्रौर उनके बीच हर प्रकार का सहयोग समय के साथ-साथ ग्रौर ग्रधिक विस्तृत तथा दृढ़ होता चला जायेगा। साथ ही नेहरू का नाम उन लोगो के दिलों में हमेशा बना रहेगा, जो कि शान्ति, सामाजिक न्याय ग्रौर प्रगति में विश्वास रखते हैं।

आर्थिक विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधनों पर सीधे सरकार का कब्जा होना चाहिए, देश की विशाल जनता के लिए वस्तुओं तथा सेवाओं के वितरण में तथा उसे आर्थिक एवं सामाजिक न्याय दिलाने में सरकार को निर्णायक भूमिका अदा करनी चाहिए।

नेहरू द्वारा १६३०-३४ के बीच जेल की कोठरी से अपनी बेटी इन्दिरा के नाम लिखे गये पत्र, जो कि वास्तव में भारत की जनता के नाम लिखे गये थे, उनसे प्रकट है कि नेहरू पहले भारतीय थे, जिन्होंने कि देश के आर्थिक नियोजन की सम्भावना और व्यावहारिकता का पक्ष-पोषण किया।

६ जुलाई, १६३३ के पत्र में नेहरू ने लिखा, "पंचवर्षीय योजना ने रूस का नक्शा पूरी तरह बदल दिया है। वह एक सामन्तवादी देश से अचानक एक विकसित औद्योगिक देश में बदल गया है। वहाँ एक चमत्कारिक सांस्कृतिक प्रगति हुई है। वहाँ की नागरिक सेवाएँ, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ और दुर्घटनाओं के बीच की व्यवस्था पूरी दुनिया में अपना सानी नहीं रखतीं। यह ठीक है कि कुछ चीजों का अभाव अभी भी वहाँ है लेकिन बेरोजगारी और भुखमरी का भयावह खतरा, जो कि अन्य देशों के मजदूरों के सिर पर अभी भी लटक रहा है, वहाँ पूरी तरह समाप्त हो गया है।"[1] नेहरू आगे लिखते हैं, "पंचवर्षीय योजना की सफलता के बारे में सन्देह करना व्यर्थ है। इसका सही उत्तर सोवियत संघ की मौजूदा स्थितियाँ हैं। और एक दूसरा उत्तर यह सत्य है कि इस योजना ने पूरी दुनिया की कल्पनाओं को प्रभावित किया है। आज हर कोई 'योजनाओं' के बारे में—पंचवर्षीय, दसवर्षीय, त्रिवर्षीय योजनाओं के बारे में बात कर रहा है। सोवियत लोगों ने दुनिया में जादू भर दिया है।"[2] इन शब्दों में नेहरू सोवियत संघ की पहली पंचवर्षीय योजना के अपने विश्लेषण का समापन करते हैं।

भारत के राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के काफी पहले ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी आर्थिक नियोजन समिति बना दी थी।

इसीलिए भारत के स्वाधीनता प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद १६५० मे राष्ट्रीय नियोजन आयोग संगठित किया गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नही थी। नेहरू की निजी देख-रेख मे आयोग ने देश के आर्थिक विकास की पहली पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार किया। उन दिनों के अपने भाषणों में नेहरू ने आर्थिक नियोजन को एक नयी शुरुआत माना। उनके अनुसार

१. ग्लिम्पसिज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, लन्दन, १६४६, पृष्ठ ८५६-८५७।
२ वही, पृष्ठ ८५७।

आधारभूत उद्योगों का संयोजित एवं सम्यक् विकास आर्थिक नियोजन की पहली शर्त थी। यह विकास नये भारत की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के हित में यहाँ सहज-सुलभ पदार्थों तथा मानव शक्ति के साधनों को ध्यान में रखते हुए दृढ़ वैज्ञानिक आधार पर स्वयं सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधीन किया जाना चाहिए।

बहुत से देशों के आर्थिक विकास का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् नेहरू इस नतीजे पर पहुँचे कि यदि भारत को कठोर संघर्ष के बाद प्राप्त की गयी अपनी आजादी को बनाये रखना है और अपने आर्थिक तथा सामाजिक विकास की मजबूत आधारशिला रखनी है तो उसे एक आधुनिक राष्ट्रीय उद्योग के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। जब नेहरू राष्ट्रीय उद्योग का जिक्र करते थे तो जाहिर है कि उनका मतलब भारी उद्योग से होता था। इस सम्बन्ध में दूसरी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार करने वाली काउंसिल ऑफ नेशनल डेवलपमेंट के अधिवेशनों में दिये गये उनके भाषण उल्लेखनीय हैं। नेहरू ने कहा, "अगर हम भारत का औद्योगीकरण और उसका विकास चाहते हैं—और ऐसा हम सचमुच चाहते हैं—तो हमें भारत का सही मायनों में औद्योगीकरण करना चाहिए। हमे एक ऐसी मजबूत नीव रखनी चाहिए जिस पर कि औद्योगिक भारत का ढांचा खड़ा किया जा सके। तात्पर्य यह कि हमें भारी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए।"[1]

नेहरू द्वारा बनायी गयी और अमल मे लायी गयी नियोजित अर्थ नीति में देश के आर्थिक विकास के आधार के रूप में राष्ट्रीय भारी उद्योग का विकास करना मूलभूत सिद्धान्त था। नेहरू का विश्वास था कि औद्योगीकरण शक्ति-साधनों के मजबूत आधार पर खड़ा होना चाहिए, इसीलिए विद्युत् शक्ति का उत्पादन बढ़ाने के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गयी।

आर्थिक क्षमता की दृष्टि से आज भारत दुनिया के पहले दस देशों में से एक है। अब भारत के पास जल विद्युत् तथा ताप विद्युत् उत्पादन के आधुनिकतम केन्द्र, लोहे और इस्पात के विशाल कारखाने, भारी इंजीनियरिंग उद्योग के कारखाने, अणुशक्ति उत्पादन संस्थान और इलेक्ट्रोनिक उद्योग हैं। भारत यह प्रगति कर सका इसका प्रारम्भिक श्रेय समाजवादी देशों और विशेष रूप से सोवियत संघ के आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को जाता है। इस सहयोग का साक्षात प्रमाण ७० से ऊपर औद्योगिक कारखानो का निर्माण है,

१. कॉमर्स, बम्बई, जनवरी २८, १६५६, पृष्ठ १२८।

जिनमें से ५० से ऊपर कारखाने सोवियत सहयोग से लगाये गये हैं।

अभी भी भारत के उद्योग और कृषि के सामने कुछ ऐसी समस्याएँ हैं, जिन्हें कि हल किया जाना है। फिर भी किसी भी तटस्थ पर्यवेक्षक के लिए यह बात साफ हो गयी है कि भारत ने आज़ादी के बाद के वर्षों में जितनी प्रगति की है, उतनी प्रगति पिछली पूरी दो शताब्दियों में भी नहीं की थी।

भारत और सोवियत संघ के बीच आर्थिक सहयोग का सूत्रपात २ फरवरी, १९५५ को दिल्ली में दोनों देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों के बीच हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर होने से हुआ। समझौते के अनुसार भिलाई मे १,०००,००० टन वार्षिक उत्पादन की क्षमता का एक इस्पात कारखाना लगाया जाना था। नेहरू की दृढ़ इच्छा और औद्योगिक रूप से विकसित तथा समृद्ध भारत के भविष्य में विश्वास और साथ ही सोवियत संघ की अपने पड़ोसी मित्र की सहायता करने की ललक ने मिलकर भिलाई कारखाने के निर्माण के निर्णय को सम्भव बनाया।

नेहरू की यह धारणा पूरी तरह सही थी कि किसी देश के औद्योगिक विकास के लिए इस्पात और शक्ति आधारशिला का काम करते हैं। वह बार-बार कहते थे कि अगर भारत को अपनी राजनैतिक आज़ादी और एक राष्ट्र के रूप में अपनी सत्ता को कायम रखना है तो उसे आर्थिक निर्भरता प्राप्त करने के लिए पूरी-पूरी चेष्टा करनी पड़ेगी।

नेहरू समय-समय पर भिलाई नगर जाकर भिलाई परियोजना की प्रगति को निकट से देखते रहे। उन्होंने दिसम्बर १९५७ में सबसे पहले भिलाई का दौरा किया। उस समय कारखाने का निर्माण-कार्य आरम्भ ही हुआ था।

दो वर्ष बाद एक बिलेट मिल के कार्य आरम्भ करने के अवसर पर नेहरू ने शुभकामना-सन्देश भेजा, जिसमें लिखा था, "भिलाई इस्पात कारखाने की यह निरन्तर प्रगति बहुत उत्साहवर्धक है और सोवियत तथा भारतीय इंजीनियरों के आपसी सहयोग की प्रतीक है। सोवियत संघ में प्रशिक्षित बहुत से भारतीय इंजीनियर इन मिलों का संचालन करते रहेंगे। मैं इस संस्थान की सफलता के लिए भिलाई कारखाने में काम करने वाले सभी लोगों और विशेष रूप से सोवियत तथा भारतीय इंजीनियरों को बधाई देता हूँ।"[1]

अक्तूबर १९६० में एक रेल तथा स्ट्रक्चरल स्टील मिल के कार्य आरम्भ करने के अवसर पर अपनी दूसरी भिलाई यात्रा के दौरान नेहरू ने एक विशाल

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या २३-२४।

जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "भिलाई इस्पात कारखाना दो बड़े देशों के आपसी सहयोग का एक अनोखा उदाहरण है। पिछले कुछ समय से सोवियत रूस के अनुभवी इंजीनियर यहाँ रहकर हमें महत्त्वपूर्ण सहयोग देते रहे हैं। हमारे युवा इंजीनियर प्रशिक्षण के लिए रूस गये। इससे भी कारखाने की स्थापना में बड़ी सहायता मिली है। दो राष्ट्रों के मैत्री सम्बन्ध मजबूत करने के सचमुच बहुत फायदे हैं।"[1] नेहरू ने फरवरी १९६२ में भिलाई की तीसरी यात्रा की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वह जब भी भिलाई आते हैं, तभी नयी वर्कशापों, नये उत्पादनों और अनुभव से निपुण हो गये नये लोगों को देख कर बहुत प्रसन्न होते हैं। उन्होंने भिलाई को भारत तथा सोवियत संघ के आपसी सहयोग का प्रतीक बताया।

आज भिलाई कारखाना देश के कुल उत्पादन का एक-तिहाई इस्पात तैयार कर रहा है। नवम्बर १९७३ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय *समिति के जनरल सेक्रेटरी लियोनिद ब्रेझनेव भारत यात्रा पर आये तो भिलाई* कारखाने की क्षमता को ७,०००,००० टन इस्पात का उत्पादन प्रतिवर्ष तक पहुँचाने के लिए एक समझौता हुआ।

भिलाई कारखाना सोवियत सहायता से लगाया जाने वाला पहला बड़ा औद्योगिक संस्थान था। इसने दो भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं के देशों के सहयोग—दोनो पक्षों के आपसी हितों—और पूरी बराबरी पर आधारित सहयोग—की सफलता की व्यापक सम्भावनाओं को स्पष्ट कर दिया है।

भिलाई कारखाने का निर्माण-कार्य पूरा हो जाने के बाद भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाने के लिए मशीनो के निर्माण, शक्ति उत्पादन, तेल निकालने, कोयले की खदानों का विकास करने और औषधि निर्माण तथा कृषि आदि विभिन्न क्षेत्रों मे सोवियत संघ ने मित्रतापूर्ण सहयोग दिया।

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या २३-२४।

भिलाई--भारत के भविष्य का प्रतीक-चिह्न

वेनियामिन दीमशित्स

सोवियत संघ का मन्त्री परिषद् के उपाध्यक्ष,
भिलाई इस्पात कारखाने के चीफ़ इंजीनियर
इंचार्ज (१९५७-५९)

भिलाई इस्पात कारखाने के निर्माण-स्थल पर और दिल्ली में औपचारिक अवसरों पर नेहरू से मेरी बहुत-सी मुलाकातें हुईं। वह मुझे हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद रहेंगे जिसने कि अपने देश के अनेकों लोगों को उभारने और भारत-सोवियत मैत्री को स्थापित करने तथा उसे दृढ़ करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

विशेष रूप से नेहरू की दिसम्बर १९५७ के मध्य की भिलाई यात्रा मुझे याद है। इस अवसर पर उन्होंने पूरे निर्माण-स्थल का दौरा किया था। उनकी उपस्थिति में ओपन हर्थ वर्कशाप का पहला स्तम्भ खड़ा किया गया था और उसकी उसी समय रोलिंग मिल्स के पहले खंड की स्थापना की गयी थी। उन्होंने विशाल निर्माण-स्थल के हर हिस्से में पूरी रुचि ली। मैटल स्ट्रक्चर्स शॉप में उनसे अनुरोध किया गया कि वह पिछले दिनों स्थापित की गयीं शीट मैटल कटिंग मशीनों में से पहली को स्विच दबाकर चालू करने का अनुग्रह करें। शॉप का निर्माण-कार्य उस समय तक पूरा नहीं हुआ था। असल में उस समय शॉप के ऊपर छत भी नहीं थी और सूरज की लपलपाती किरणें सीधी पड़ रही थीं। नेहरू ने पूछा कि उष्ण जलवायु में सोवियत इंजीनियर यहाँ खड़े होकर कैसे काम कर पाते हैं? इंजीनियर एन. बी. लोबोत्सकी जो वहीं मौजूद थे, उन्होंने उत्तर दिया कि गर्म जलवायु के भी अपने फायदे हैं। इंजीनियर ने आगे कहा---असल में जब शॉप का निर्माण-कार्य चल रहा था और कुछ हिस्सों की स्थापना पूरी हो चुकी थी तो हमने उन हिस्सों को चालू कर दिया था, ताकि जब तक पूरी शॉप चालू हो, उस समय तक काफी मात्रा में उत्पादन किया जा सके।

भिलाई में निर्माण-कार्य आरम्भ होने के पहले दिन से ही हमें बराबर एहसास बना रहा कि नेहरू को इस बात का खयाल है कि हमारी आवश्यकताएँ समय से पूरी होती रहें। हालांकि हमारे सहयोगी इस बारे मे सतर्क थे कि नेहरू की दिलचस्पी का फायदा न उठावें, फिर भी उनमे से कुछ ने नेहरू से

ऐसी समस्याओं के बारे मे बातचीत की जिनका निर्माण-कार्य की प्रगति पर प्रभाव पड रहा था। खास तौर से विशाखापट्टनम बन्दरगाह पर सोवियत मशीनों को उतारने में जो समस्या आ खड़ी हुई थी, उसे हल कराने में नेहरू की सहायता के लिए निर्माणकर्ता बहुत आभारी हुए। एक बार उन्होंने सुझाव दिया कि भिलाई के लिए मशीनें लाने वाले जहाजो में से कुछ को बम्बई और कलकत्ता की तरफ मोड़ दिया जाये। इस सुझाव को अमल मे लाने से मशीनें निर्माण-स्थल पर बहुत तेजी से पहुँचने लगी और काम की स्थिति में बहुत बड़ा सुधार आ गया।

बाद मे १००,००० के विशाल जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक भारत के पास अपने भारी उद्योग नही होगे तब तक वह तरक्की नही कर सकता। यह ठीक है कि भारत के खेतों की सिंचाई होनी चाहिए, लेकिन सिंचाई के लिए जरूरी है कि हम बाँध बनायें, विद्युत् गृह बनायें और औद्योगिक कारखाने लगायें। इन सबको बनाने के लिए लोहे और इस्पात की जरूरत है। नेहरू ने आगे कहा—भारत के पास बहुत अच्छे किस्म के कच्चे लोहे का बहुत बड़ा भंडार है लेकिन अभी पिछले कुछ समय तक यह सम्पदा सही मायनों मे बेकार पड़ी थी। अब एक बडा इस्पात कारखाना लगाया जा रहा है। यह कारखाना भारत के भविष्य की ओर इशारा करता है। उन्होंने आगे कहा—कितनी भी दिक्कतें क्यो न आयें, भारत के लोगों को अपने लोहे और इस्पात के उद्योग का विकास करने के लिए भरपूर चेष्टा करनी चाहिए। सोवियत विशेषज्ञ भारतीयो की बहुत सहायता कर रहे हैं। उन्हे प्रशिक्षण दे रहे है और तकनीकी जानकारी तथा अपने अनुभवों मे भागीदार बना रहे हैं। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। नेहरू ने आगे कहा—भारतीय इंजीनियरों और कर्मचारियो के लिए यह परम महत्त्व की बात है कि इस समय वे अपने उद्योग का विकास स्वयं करने का प्रशिक्षण प्राप्त कर लें।

भिलाई से विदा होने से पहले नेहरू ने कहा, "जो कभी एक सपना था, अब यह शक्ल ले रहा है और एक सचाई बनता जा रहा है। भिलाई भारत के भविष्य का प्रतीक-चिह्न है।"[1]

१९६५ और १९७० में सोवियत-भारत आर्थिक सहयोग की दसवी और पन्द्रहवी वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में मुझे सोवियत सरकार के प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व करने के अवसर मिले। दूसरी परियोजनाओ को देखने के साथ मैं दोनों

१. सोवियत भूमि, १९६४, संख्या १२।

ही बार मिलाई इस्पात कारखाने को देखने भी गया। वहाँ मेरे जीवन के दो सदा याद रहने वाले वर्ष गुजरे थे। मेरी दूसरी यात्रा के दौरान जब मैं बाइ प्रोडक्ट कोक सैक्सन्स को देखने गया तो मुझे वहाँ ईरान से आये विशेषज्ञों के एक दल को देखकर बहुत खुशी हुई। यह ईरानी दल मिलाई कारखाने मे ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग कोर्स पर आया हुआ था। इस रोचक तथ्य से प्रकट हो गया कि जैसे-जैसे कारखाने का विस्तार हुआ, उसे चलाने वाले लोग भी आगे बढ़े। लोहे और इस्पात के पेचीदा संयन्त्रों का संचालन करते हुए उन्हे दूसरे देश के सहयोगियों से जो अनुभव प्राप्त हुए थे, अब वे उन अनुभवो मे अन्य देश के लोगों को भागीदार बनाने के लिए तैयार थे। मैं जानता हूँ कि अगर आज नेहरू होते तो वह उन भारतीय इंजीनियरो से बहुत खुश होते और उन पर गर्व करते जिन्होने कि कारखाने के उत्पादन को निरन्तर बढ़ाया है और अब यह कारखाना भारत के लौह तथा इस्पात उद्योग का मुख्य केन्द्र बन गया है।

नये भारत के नये तीर्थ

निकोलाई गोल्डिन

भारी उद्योग निर्माण के मन्त्री, भिलाई इस्पात, कारखाने के चीफ इंजीनियर इंचार्ज (१९५६-६१) १९७० से सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के अध्यक्ष

नेहरू की भिलाई यात्राओं के दौरान या जब कभी मुझे किसी काम के सिलसिले में दिल्ली जाना पड़ा तो बहुत बार उनसे मिलने का सुअवसर मिला। उन मुलाकातों में हुई बातचीत से मैं उनके लगनशील मस्तिष्क और खुले विचारों का प्रशसक बन गया। इन वर्षों मे विभिन्न राजनैतिक विचारधारा के समाचार पत्र उनके 'अभूतपूर्व प्रयोग' पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिख रहे थे। ऐसे समय जब कि शीत युद्ध अपने शिखर पर था और पश्चिम के कुछ देश नेहरू की सकारात्मक तटस्थता की नीति को एक शर्मनाक नीति कहकर खारिज करने की कोशिश कर रहे थे, यह नेहरू का ही काम था कि वह न केवल भारत और सोवियत संघ के बीच हर प्रकार के सहयोग का पक्ष-पोषण करते रहे बल्कि इस

बारे मे भी सतर्क रहे कि उनके विचारों पर अमल हो। भारत-सोवियत सहयोग के शत्रु बराबर 'भविष्यवाणियाँ' कर रहे थे। उनके अनुसार रूसी विशेषज्ञ अयोग्य थे, उनकी तकनीक पिछड़ी हुई थी और सोवियत लोग किसी के साथ सहयोग करने में समर्थ ही नही थे। इन तमाम बातो के अलावा 'साम्यवादी प्रचार' की साजिश के जो आरोप लगाये गये, उनका तो कहना ही क्या! इन तमाम पूर्व निर्धारित दुर्भावनाओं से अप्रभावित रह सकने, सच और झूठ में भेद कर सकने और दुनिया के पहले समाजवादी देश के साथ विभिन्न क्षेत्रो मे आपसी सहयोग बढाने की नीति पर अमल करने के लिए एक महान् राजनीतिज्ञ की सूझ और साहस की आवश्यकता थी। और नेहरू में ये सभी गुण एक साथ थे।

निर्माणाधीन भिलाई कारखाने के कामगरों की एक जनसभा में दिया गया नेहरू का एक भाषण मुझे याद है। भारत के आम लोगों के बीच बोलते समय वह बहुत सीधी और सरल भाषा का प्रयोग करते थे। उसी भाषा मे अपने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि यदि भारत सही मायनों मे एक स्वतन्त्र और मजबूत राष्ट्र बनना चाहता है और अपनी गरीबी, पिछड़ेपन तथा अशिक्षा को दूर करना चाहता है तो उसे ऐसी अर्थ-नीति अपनानी होगी, जिसमें कि सरकारी क्षेत्र मे भारी उद्योगो को लगाया जा सके। तमाम महत्त्वपूर्ण उद्योगो को सरकारी क्षेत्र में लेकर ही ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं, जिनमें कि देश के लोगो का जीवन-स्तर उभर सके। उन्होने आगे कहा—आप देख सकते हैं कि आपके रूसी भाई जो यहाँ मूलभूत औद्योगिक उत्पादनों मे आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के हमारे प्रयत्न में सहायता करने के लिए आये हैं वे कैसे काम करते हैं। वे यहाँ रहते हैं, आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं और अपने गहरे अनुभवों में आपको भागीदार बनाते है। एक समय था कि उन्हें भी ऐसे ही शुरुआत करनी पड़ी थी लेकिन उनके कठोर परिश्रम से आज रूस दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों में से एक बन गया है। मैं चाहता हूँ कि आप इन लोगों से काम करना सीखें, क्योंकि यह जानकारी भविष्य में आपको ऐसे ही बहुत से कारखाने लगाने और नये भारत के नये तीर्थ बनाने में काम आयेगी।

नेहरू भारत के औद्योगिक विकास में बहुत गहरी दिलचस्पी रखते थे। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है: भिलाई इस्पात कारखाना, जो कि इस समय भारत के कुल इस्पात का एक-तिहाई उत्पादन करता है, जब यह कारखाना निर्माणाधीन था तो नियमित रूप से सीमेंट, लोहे, इलेक्ट्रोड्स, एसिटिलीन और दूसरे आवश्यक पदार्थों की आवश्यकता पड़ती थी। उस समय भारत में इन

चीजों की कमी थी और कभी-कभी मालवाहक जहाजों को रास्ते में विलम्ब हो जाता था। जब कारखाने के पहला भाग ब्लास्ट फर्नेस का निर्माण-कार्य लगभग पूरा होने जा रहा था तो उस समय किसी भी तरह का विलम्ब बहुत महँगा पड़ता। परियोजना में मशीनों और संयन्त्रों की एक बड़ी सेना के अलावा ६०,००० आदमी काम पर लगे हुए थे। यह हिसाब लगाया गया था कि एक दिन के निर्माण-कार्य पर आने वाला खर्च १००,००० रुपये बैठता है। मैं कारखाने के किसी काम से दिल्ली गया तो मैंने प्रधान मन्त्री को स्थिति से अवगत कराया। मैं वापस भिलाई पहुँचा ही था कि यह घोषणा सुनने को मिली कि राज्य में धातु शोधन के तीन कारखाने लगाने के काम को प्राथमिकता दी गयी है।

मुझे नेहरू की अक्तूबर १९६० की यात्रा भी खूब याद है। जैसा कि प्रायः होता था, उस अवसर पर श्री स्वर्णसिंह भी उनके साथ थे। स्वर्णसिंह कई वर्षों तक इस्पात, खदान और ईंधन विभाग के मन्त्री रहे थे। उल्लेखनीय है कि श्री सिंह के साथ हमारे बहुत अच्छे कार्य-सम्बन्ध थे। वह हमारी तमाम बातों और सुझावों को गौर से सुनते थे, और छोटी या बड़ी कैसी भी समस्या हो, उसे जल्दी से जल्दी हल करने की भरपूर चेष्टा करते थे। सोवियत विशेषज्ञ जो कि उष्ण जलवायु के अभ्यस्त नहीं थे, उनके लिए एयर कंडीशनर और अच्छे से अच्छे खाने की व्यवस्था कराने में भी वे व्यक्तिगत रुचि लेते थे।

उन्हीं दिनों हम रेल एंड स्ट्रक्चरल मिल की स्थापना कर रहे थे। एकदम तकनीकी विषयों पर नेहरू के प्रश्न और टिप्पणियाँ मुझे अभी भी याद हैं। ये विषय थे—मिल का कुल उत्पादन, रेलों और चैनलों की किस्म और मात्रा, उनकी लम्बाई, वे ज्यादा लम्बे अरसे तक काम में आ सकें इसके लिए ताप-क्रिया द्वारा उनकी सतह को और सख्त करने की सम्भावनाएँ, निर्यात के लिए उनकी बिक्री की सम्भावनाएँ आदि। नेहरू अपनी आँखों के सामने इस्पात की गर्म सिल्लियों और छड़ों को उपयोगी उत्पादनों में बदलते देखकर खुश तो होते ही थे, साथ ही साथ यह भी सोचते रहते थे कि इन चमत्कारिक मशीनों से देश को और देश के लोगों को ज्यादा से ज्यादा फायदा कैसे पहुँच सकता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि सैकड़ों सोवियत विशेषज्ञ और उनके परिवार के सदस्य जो कि भिलाई, रांची, दुर्गापुर, अंकलेश्वर, सूरतगढ़ और बम्बई में रहे, नेहरू के बारे में मेरी राय से पूरी तरह सहमत होंगे। नेहरू जब भी सोवियत सहयोग से बनने वाले कारखानों की यात्रा पर गये, उन्होंने सोवियत इंजीनियरों और दूसरे विशेषज्ञों के रहन-सहन की सुविधाओं के बारे में अवश्य ही मालूमात की। वे सोवियत विशेषज्ञों के बच्चों के स्कूलों में भी गये और उन्होंने अध्याव-

सायिक मनोरंजन कार्यक्रमों और खेल-कूद प्रतियोगिताओं को भी देखा। मुझे पूरा विश्वास है कि सोवियत जनता भी आने वाली पीढ़ियाँ नेहरू को एक महान् राजनीतिज्ञ और भारत-सोवियत मैत्री के निर्माता के रूप में याद रखेंगी।

समृद्धि का स्रोत—वसुधारा

बोरिस सेमानोव
भारत स्थित सोवियत दूतावास में आर्थिक मामलों के प्रतिनिधि (१९५७-६३)

भारत में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे अनेक बार नेहरू से मिलने का अवसर मिला। वह मुलाकात मुझे विशेष रूप से याद है जब कि १६ दिसम्बर, १९५७ को नेहरू भिलाई इस्पात कारखाने का निर्माण-स्थल देखने आये। कारखाने के हर मामले में उनकी गहरी दिलचस्पी शुरू से ही जाहिर थी। उन्होंने किसी भी तरह का उतावलापन दिखाये बिना एक के बाद दूसरे विभाग का निरीक्षण किया और तरह-तरह के सवाल पूछकर कारखाने के तकनीकी पक्ष को जिस हद तक समझ सकते थे, उस हद तक समझने की कोशिश करते रहे। खास तौर से उन्होंने उस तकनीक को जानने के बारे में दिलचस्पी दिखायी जिससे कि कोक ओवन बैटरी के विशालकाय कंक्रीट पाइपों को सामान्य रूप से बनाये जाने वाले किसी आधार के बिना खड़ा किया जा रहा था और बैटरी अभी तक लगभग १०० मीटर की ऊँचाई तक उठ चुकी थी।

नेहरू ने तेल की खोज करने और उसे निकालने की समस्या पर भी बहुत ध्यान दिया। वह बहुत बार उन क्षेत्रों के दौरे पर गये, जहाँ कि सोवियत विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों के साथ इस महत्त्वपूर्ण पदार्थ की खोज में लगे थे, जो कि भारत के आर्थिक विकास के लिए परम आवश्यक है। इस सम्बन्ध में मुझे एक घटना याद आती है। एक बार नेहरू कैम्बे पहुँचे। वहाँ तेल की खोज की सम्भावनाओं का परीक्षण करने के लिए सोवियत विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों की सहायता कर रहे थे। एक स्थान पर एक तेल के कुएँ से तेल निकलकर पास ही खड़े नेहरू के ऊपर गिरने लगा। उनके साथ खड़े विशेषज्ञों ने संकोच अनुभव किया। लेकिन नेहरू बिल्कुल भी विचलित

नहीं हुए और बोले, "मैं इसी शेरवानी में संसद में भाषण दूंगा। सब लोगों को यह मालूम हो जाना चाहिए कि अब हमारे पास अपना तेल है।"[1]

नेहरू तेल के कुएँ को 'वसुधारा' अर्थात् 'समृद्धि का स्रोत' कहा करते थे।

मई १९६३ में नेहरू अंकलेश्वर के तेल-क्षेत्र के दौरे पर गये। वहाँ उन्होंने कर्मचारियों से बात करते हुए पूरा दिन बिताया। उस अवसर पर उन्होंने कहा कि सोवियत संघ के मित्रतापूर्ण सहयोग से खोजे गये अंकलेश्वर के तेल द्वारा न केवल गुजरात बल्कि पूरे भारत के आर्थिक विकास और समृद्धि को बढ़ाने मे मदद मिलेगी। नेहरू ने आगे कहा कि भारत का तेल उद्योग सोवियत संघ के मित्रतापूर्ण सहयोग का आभारी है। यह भारत का समाजवाद के मार्ग पर एक और कदम है।

बाद में नेहरू ने कोयाली में एक तेल-शोधक कारखाने का शिलान्यास किया। इस अवसर पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि गुजरात में तेल-शोधक कारखाने का निर्माण भी भारत के अच्छे मित्र सोवियत संघ के सहयोग से ही सम्भव हो सका है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि इस कारखाने के द्वारा दोनों देशों के सम्बन्धों को और ज्यादा मजबूत बनाने मे मदद मिलेगी। सोवियत संघ एक सामर्थ्यवान देश है और उसने तकनीकी क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। भारत को सोवियत अनुभवों से बहुत कुछ सीखना है। बहुत से अवसरों पर, जब भी नेहरू अंकलेश्वर आये, मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कोयाली तेल-शोधक कारखाने को और भिलाई को भी अंकलेश्वर से ही तेल भेजा जाता है।

नवम्बर १९६३ के मध्य में नेहरू रांची और दुर्गापुर आये। रांची में उन्हें सोवियत सहयोग से बने भारी मशीनों का निर्माण करने वाले कारखाने और खदान संयन्त्रों का निर्माण करने वाले कारखाने के प्रारम्भिक विभागों का उद्घाटन करना था। हम इस बात से बहुत प्रभावित हुए कि नेहरू अपनी व्यस्तता और अस्वस्थता के बावजूद प्रमुख औद्योगिक इकाइयों द्वारा आयोजित ऐसे समारोहों के लिए समय और शक्ति जुटा लेते थे।

नेहरू मुझे हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे याद रहेंगे, जिसका पूरा जीवन शान्ति और अपने देश की समृद्धि के लिए समर्पित था और जो सोवियत संघ के साथ हर क्षेत्र में निकट मैत्री तथा आपसी सहयोग के वाहक थे।

१. सोवियत भूमि, १९६४, संख्या १२।

सूरतगढ़ में नेहरू के साथ भेंट

अलेक्जेंडर सेलिवानोव

सोवियत कृषिविद, १९५६ में राजस्थान के रेगिस्तान की भूमि को खेती योग्य बनाने का अभियान शुरू करने के लिए भेजे गये दल के सदस्य, इन्होंने सूरतगढ़ में तीन वर्ष काम किया और वहाँ के रेगिस्तान को उपजाऊ बनाने में मदद दी

अप्रैल १९५९ में प्रधानमन्त्री नेहरू के सूरतगढ़ फार्म को देखने के लिए आने की खबर आसपास के गाँवों में जंगल की आग की तरह फैल गयी। गंगानगर जिले के हर कोने से स्थानीय किसान अपने परिवारों सहित सूरतगढ़ पहुँचने लगे।

जिस कार में नेहरू, इंदिरा गांधी, राजस्थान के मुख्य मन्त्री, भारत के कृषि मन्त्री और फार्म के मैनेजर को जाना था, उसे ड्राइव करने का काम मुझे सौंपा गया था। नेहरू ने मुझसे हाथ मिलाया और कहा कि आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। उन्हें याद था कि एक वर्ष पहले दिल्ली के एक समारोह में उनसे मेरा परिचय कराया गया था।

निरीक्षण का कार्य फार्म के उस क्षेत्र से शुरू हुआ, जो कि रेलवे स्टेशन के पास था। नेहरू फार्म की सभी गतिविधियों में दिलचस्पी ले रहे थे—परती भूमि को चालू करने की योजना की प्रगति? फार्म पर किस तरह की मशीनें इस्तेमाल की जा रही हैं? काम करने के लिए कितने मजदूरों की जरूरत पड़ती है? भारतीय कर्मचारी नयी मशीनों को कैसे चला रहे हैं? कार गेहूँ के एक खेत के पास पहुँची तो वहाँ फसल की कटाई का काम चल रहा था। नेहरू कार से उतर पड़े और एक कंबाइन हार्वेस्टर मशीन पर चढ गये। वह बिन में गिरते हुए अनाज को बहुत गौर से देख रहे थे।

नेहरू ने कटाई की प्रक्रिया को बहुत दिलचस्पी के साथ देखा और ट्रैक्टर ड्राइवरों, कंबाइन आपरेटरों, मिस्त्रियों और खेतों में काम करने वाले कामगरों के साथ विस्तारपूर्वक बातचीत की। वह बहुत अनौपचारिक थे और मजाक करके हमें मैत्रीपूर्ण खुशनुमा माहौल में पहुँचा देते थे। यह माहौल उनके चारों तरफ हमेशा बना रहता था।

शाम को हम देर से सूरतगढ लौटे। शहर का वह मैदान खचाखच भरा था। नेहरू मंच पर चढ़ गये और उन्होंने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। फार्म के निरीक्षण के अनुभवों का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि अगर भारत के पास इस तरह के और फार्म होते तो उसकी खाद्य-समस्या समाप्त हो जाती।

उन्होने बहुत उत्साहपूर्वक फार्म की मशीनों पर काम करने वाले कर्मचारियों की सराहना की और कहा कि उन लोगों ने एक रेगिस्तान को खेती के योग्य बढिया जमीन में बदल दिया है। फिर उन्होंने सोवियत संघ के बारे में कहा कि वह हमारे आर्थिक विकास में बहुत मदद कर रहा है और उसके विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रहे है। अन्त में उन्होंने एक नये भारत का निर्माण करने के लिए भारतीय किसानों को उनके फर्ज़ की याद दिलायी।

उस शाम खाने के समय नेहरू ने सोवियत विशेषज्ञों से रहने और काम करने के हालात के बारे मे बातचीत की और पूछा कि स्थानीय गर्म जलवायु में वे कोई असुविधा तो महसूस नही करते। उनकी उदार हृदयता और दूसरों की सुविधाओं का इस हद तक खयाल रखने की वृत्ति से हम बहुत प्रभावित हुए। मैं नेहरू को हमेशा सुलझे विचारों वाले, उदार हृदय और चरित्र की शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति के रूप मे याद रखूंगा।

गत कुछ वर्षों मे खेती मे भारत-सोवियत सहयोग तेजी से विकसित हुआ है और खेती के बहुत से उत्पादनों पर उसका सुप्रभाव पड़ा है। बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने की पांच परियोजनाओं—हिसार, रायचुरू, झारसूगुड़, जालन्धर तथा कनानोर—के लिए सोवियत संघ ने भेंट स्वरूप खेती की मशीनें, उनके संयन्त्र और स्पेयर पार्ट्स दिये हैं।

इंडियन स्टेट फार्म्स कारपोरेशन के अध्यक्ष एम. आर. कृष्णा ने एक इंटरव्यू में कहा कि सूरतगढ का मुख्य फार्म और साथ ही दूसरे सरकारी फार्म एक बड़ी मात्रा में विभिन्न फसलो के उच्च कोटि के बीज तैयार कर रहे हैं और इस बात के अच्छे उदाहरण हैं कि फार्म मशीनरी का इस्तेमाल करने से कितना फायदा उठाया जा सकता है। असल में ये फार्म ऐसे प्रयोगात्मक केन्द्र है, जहाँ भरपूर फसल उगाने की नयी से नयी तकनीक का अध्ययन किया जायेगा।

सोवियत संघ भारत के पशु विशेषज्ञो तथा कृषिविदों को सूरजमुखी तथा चुकन्दर जैसी नयी फसलो को सफलतापूर्वक उगाने मे और अच्छी किस्म की ऊन वाली भेड़ों तथा बकरियों की नस्ल सुधारने में भी सहायता दे रहा है।

कारखाने का भी बहुत बड़ा हाथ होगा। उनके प्रेरक शब्दो से हम लोगों का उत्साह कई गुना बढ़ गया और हम सब—यानि सोवियत और भारतीय इंजीनियरों, तकनीशियनों और मजदूरों ने कारखानों को जल्दी से जल्दी और अच्छे से अच्छा बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया।

आज रांची का कारखाना पूरे भारत में अपनी तरह का सबसे बडा कारखाना है। जैसे-जैसे यह अपनी नियोजित क्षमता को पूरी करता जाता है, वैसे ही इसके द्वारा होने वाला लाभ भी बढता जाता है।

रांची कारखाने के जनरल मैनेजर श्री डी. आर. शास्त्री ने समाचार-पत्र 'सोतिसयालिस्तीचेस्काया इंडस्ट्रिया' मे १८ नवम्बर १९७३ मे अपने लेख 'टेस्टिड बाइ टाइम' में लिखा है, "हमें यह जानकर बहुत खुशी है कि सोवियत संघ के ६३ संस्थान, जिनमे डिजाइन इंस्टीट्यूट भी हैं, इस कारखाने के निर्माण मे हमे अमूल्य सहयोग दे रहे हैं। ब्ल्यू प्रिंट तैयार करने से शुरू करके उनका हर प्रकार का तकनीकी सहयोग हमे सुलभ रहा है और इसी कारण कारखाना ७४० प्रकार के औद्योगिक उपयोगिता के उत्पादन करने मे सफल हो सका है। इस डाकुमेंटेशन के आधार पर भारतीय डिजाइनर अपने ग्राहकों की आवश्यकता, काम करने की स्थानीय परिस्थिति और कच्चे माल की सुलभता को ध्यान मे रखते हुए नित नये उत्पादनों के डिजाइन तैयार कर रहे हैं। सोवियत संघ विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय युवकों को प्रशिक्षित करके भारत की बहुत बडी सहायता कर रहा है। विशेष रूप से रांची के भारी मशीन निर्माण कारखाने में काम करने वाला सोवियत विशेषज्ञों का दल अपने तकनीकी ज्ञान और अनुभवों में भारतीय इंजीनियरों तथा कामगरो को उत्साहपूर्वक भागीदार बना रहा है। पूरे कारखाने मे आपसी समझ-बूझ और सच्ची मित्रता पर आधारित प्रेरक वातावरण बना हुआ है। इस वातावरण का प्रभाव निश्चय ही कारखाने के उत्पादन पर भी पड़ता है।"

आज इस कारखाने के उत्पादन भिलाई, बोकारो, अंकलेश्वर, हरद्वार, बम्बई और कलकत्ता भेजे जा रहे हैं। भारी औद्योगिक संयन्त्रों के मामले में भारत को आत्मनिर्भर देखने का नेहरू का स्वप्न आज सच्चा साबित हो रहा है।

दृक कभी न भूलने वाली याद

प्राध्यापक एलेग्जेंडर लिवोव

सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की लेनिनग्राद शाखा के बोर्ड के सदस्य। १९५८-५९ में इन्होंने भारतीय रेडक्रास के अनुरोध पर दिल्ली में रह एक सोवियत छूत रोग विशेषज्ञ दल का नेतृत्व किया। नीचे उनका वक्तव्य प्रस्तुत है

[illegible] दिल्ली के मेडिकल कालेज के बालविभाग के साथ संयुक्त थे।
[illegible] मैंने बच्चों की छूत की बीमारियों पर एक भाषण-माला प्रस्तुत की
[illegible] विषय पर एक पुस्तक भी लिखी। सोवियत रेडक्रास ने इस
[illegible] को प्रकाशित करने में मेरी सहायता की। पुस्तक में मैंने छूत की
[illegible] को रोकने और निरोधात्मक कार्रवाइयों के बारे में सोवियत अनु-
[illegible] भारतीय चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा संग्रहीत तथ्यों का सारांश प्रस्तुत
[illegible] इस पुस्तक के बारे में आपको इतने विस्तार से बता रहा हूँ तो
[illegible] कारण है। और कारण यह कि इस पुस्तक [illegible] ही मुझे
[illegible] का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत में चिकि[illegible] से
[illegible]—आयुर्वेदिक तथा यूनानी—पद्धतियों से चि[illegible] हैं।

भिजवायी। कुछ दिन बाद मुझे एक पत्र मिला, जिसे कि मैंने पिछले वर्षों में बहुत सँभालकर रखा है। पत्र इस प्रकार है :

प्रिय प्रोफेसर लिबोव,

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने बच्चो की देखभाल के बारे में भारतीय तथा सोवियत डॉक्टरों के सहयोग से प्रस्तुत की गयी पुस्तिका मुझे भिजवाने का अनुग्रह किया। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तिका उन सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगी जो कि इस महत्त्वपूर्ण विषय में दिलचस्पी रखते हैं।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

मेरी उस पाठ्यपुस्तक के प्रकाशन के कुछ दिनों बाद राजकुमारी अमृतकौर ने मुझे एक शाम दावत पर बुलाया और उस मुलाकात के दौरान जवाहरलाल नेहरू का एक पत्र दिखाया जिसमें कि उन्होंने लिखा था, "कल १३ अप्रैल को प्रश्नोत्तर काल के पश्चात् अर्थात् लगभग १२.१५ बजे संसद भवन के मेरे कमरे में प्रोफेसर लिबोव से मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी।"

निश्चित समय पर नेहरू संसद भवन के अपने कमरे में दाखिल हुए। उस समय वहाँ हम तीन थे—नेहरू, राजकुमारी अमृत कौर और मैं। नेहरू ने कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि आपने छूत की बीमारियों के बारे में एक पाठ्यपुस्तक लिखी है। ये बीमारियाँ भारत की नम्बर एक दुश्मन है और नम्बर दो दुश्मन है गन्दा पानी और उसकी निकासी के लिए नालियों की कमी। असल में भारत को तो पहली सीढी से ही शुरुआत करनी है। सोवियत धसं के अनुभव हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते है। एक समय था जबकि सोवियत लोगो के सामने भी बीमारियों पर काबू पाने और पानी की निकासी का समुचित प्रबन्ध करने की समस्या थी। आप लोगों ने समस्या पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया है और मुझे आशा है कि हम भी पा लेंगे।

इसके बाद नेहरू ने ग्रामीण क्षेत्रो में बीमारियों की रोकथाम के लिए अपनाये जाने वाले नवीनतम उपायों और सोवियत संघ में स्वास्थ्य सेवा के संगठनों के बारे में प्रश्न किये। मैंने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मुझे उनका बहुत अधिक समय नहीं लेना चाहिए, प्रश्नों के अधिक से अधिक जानकारी देने वाले उत्तर दिये। बहरहाल, नेहरू एक के बाद एक प्रश्न करते चले गये। मैंने अनुभव किया कि वे मेरे उत्तरों को भारतीय परिस्थितियों पर लागू करने के बारे में सोच रहे है। नेहरू के प्रश्नों से मेरे मन मे जरा भी सन्देह

एक कभी न भूलने वाली याद

प्राध्यापक एलेग्जेंडर लिवोव

सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की लेनिनग्राद शाखा के बोर्ड के सदस्य। १९५९-६१ में इन्होंने भारतीय रेडक्रास के अनुरोध पर दिल्ली में रह एक सोवियत छूत रोग विशेषज्ञ दल का नेतृत्व किया। नीचे उनका वक्तव्य प्रस्तुत है

हम नयी दिल्ली के मेडिकल कालेज के बालविभाग के साथ संयुक्त थे। वहाँ रहते मैंने बच्चों की छूत की बीमारियों पर एक भाषण-माला प्रस्तुत की और साथ ही इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी। सोवियत रेडक्रास ने इस पुस्तक को प्रकाशित कराने में मेरी सहायता की। पुस्तक में मैंने छूत की बीमारियों को रोकने और निरोधात्मक कार्रवाइयों के बारे में सोवियत अनुभवों तथा भारतीय चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा संग्रहीत तथ्यों का सारांश प्रस्तुत किया था। मैं इस पुस्तक के बारे में आपको इतने विस्तार से बता रहा हूँ तो इसके पीछे एक कारण है। और कारण यह कि इस पुस्तक की बदौलत ही मुझे नेहरू से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत में चिकित्सक शताब्दियों से दो प्राचीन—आयुर्वेदिक तथा यूनानी—पद्धतियों से चिकित्सा करते रहे हैं। १९५७ में नेहरू ने डॉक्टर जी. बोरकर की पुस्तक 'हैल्थ इन इंडिपेंडेंट इंडिया' की भूमिका मे इस आवश्यकता पर बल दिया कि इन पुरानी चिकित्सा-पद्धतियों का नये वैज्ञानिक तरीकों से पुनर्परीक्षण किया जाना चाहिए।

नेहरू शासकीय कार्यभार के बावजूद स्वास्थ्य के क्षेत्र मे होने वाले किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य मे दिलचस्पी लेते थे। वह अच्छी तरह समझते थे कि स्वास्थ्य के मामले में वास्तविक समस्या क्या है। उन्होने लिखा है, "राष्ट्र के स्वास्थ्य सुधार या कि स्वास्थ्य के स्तर को ऊँचा उठाने का मतलब केवल रोगों की चिकित्सा करना ही नहीं, बल्कि उन्हें रोकने के निषेधात्मक उपाय करना भी है।"

भारत में आने के कुछ ही दिनो बाद हमने अपने भारतीय सहयोगियों के साथ मिलकर 'द प्रॉबलम्स ऑफ पैडियाट्रिक्स' लिखी और उसे प्रकाशित भी करायी। इस पुस्तक की एक प्रति हमने नेहरू के निवास-स्थान पर भी

भिजवायी। कुछ दिन बाद मुझे एक पत्र मिला, जिसे कि मैंने पिछले वर्षों में बहुत संभालकर रखा है। पत्र इस प्रकार है :

प्रिय प्रोफेसर लिबोव,

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने बच्चों की देखभाल के बारे में भारतीय तथा सोवियत डॉक्टरों के सहयोग से प्रस्तुत की गयी पुस्तिका मुझे भिजवाने का अनुग्रह किया। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तिका उन सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगी जो कि इस महत्त्वपूर्ण विषय में दिलचस्पी रखते हैं।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

मेरी उस पाठ्यपुस्तक के प्रकाशन के कुछ दिनों बाद राजकुमारी अमृतकौर ने मुझे एक शाम दावत पर बुलाया और उस मुलाकात के दौरान जवाहरलाल नेहरू का एक पत्र दिखाया जिसमें कि उन्होंने लिखा था, "कल १३ अप्रैल को प्रश्नोत्तर काल के पश्चात् अर्थात् लगभग १२.१५ बजे संसद भवन के मेरे कमरे में प्रोफेसर लिबोव से मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी।"

निश्चित समय पर नेहरू संसद भवन के अपने कमरे में दाखिल हुए। उस समय वहाँ हम तीन थे—नेहरू, राजकुमारी अमृत कौर और मैं। नेहरू ने कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि आपने छूत की बीमारियों के बारे में एक पाठ्यपुस्तक लिखी है। ये बीमारियाँ भारत की नम्बर एक दुश्मन हैं और नम्बर दो दुश्मन है गन्दा पानी और उसकी निकासी के लिए नालियों की कमी। असल मे भारत को तो पहली सीढ़ी से ही शुरुआत करनी है। सोवियत संघ के अनुभव हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। एक समय था जबकि सोवियत लोगों के सामने भी बीमारियों पर काबू पाने और पानी की निकासी का समुचित प्रबन्ध करने की समस्या थी। आप लोगों ने समस्या पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया है और मुझे आशा है कि हम भी पा लेंगे।

इसके बाद नेहरू ने ग्रामीण क्षेत्रों में बीमारियों की रोकथाम के लिए अपनाये जाने वाले नवीनतम उपायों और सोवियत संघ में स्वास्थ्य सेवा के संगठनों के बारे में प्रश्न किये। मैंने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मुझे उनका बहुत अधिक समय नही लेना चाहिए, प्रश्नों के अधिक से अधिक जानकारी देने वाले उत्तर दिये। बहरहाल, नेहरू एक के बाद एक प्रश्न करते चले गये। मैंने अनुभव किया कि वे मेरे उत्तरों को भारतीय परिस्थितियों पर लागू करने के बारे में सोच रहे हैं। नेहरू के प्रश्नों से मेरे मन में जरा भी सन्देह

सोवियत प्राच्यविदों की दृष्टि में नेहरू

महान् देश का महान् सपूत

अकादमीशियन बोबोद्जन गफूरोव
सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान के निदेशक

आज की दुनिया में वे सब लोग जो कि विश्व-शान्ति तथा सामाजिक प्रगति में विश्वास रखते हैं, नेहरू के महान् मानवतावादी विचारों से अवश्य ही प्रभावित होते हैं। सोवियत संघ में लोग जवाहरलाल नेहरू को अच्छी तरह जानते हैं और वहाँ उनका बड़ा सम्मान है। उनकी देशभक्ति, दृढ़ निश्चय तथा अद्भुत कार्य-क्षमता से बहुत प्रभावित थी। उनके ये गुण विश्व-शान्ति तथा जन-सामान्य के हितों के लिए किये गये उनके संघर्ष से स्पष्ट हैं।

मुझे नेहरू से बहुत बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक असाधारण राजनीतिज्ञ, विद्वान् इतिहासकार तथा योग्य राजनैतिक पत्रकार थे।

मैं उनकी सादगी और विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ। अपने शासकीय कार्यों की व्यस्तता के बावजूद नेहरू हर वर्ग के और हर देश के लोगों से मिलने के लिए समय निकाल लेते थे।

उल्लेखनीय है कि हमारे संस्थान के जो भी सदस्य भारत गये, प्रायः उन सभी को नेहरू से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुझे नेहरू से बहुत से उच्च स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी मिलने

सोवियत प्राच्यविदों की दृष्टि में नेहरू

महान् देश का महान् सपूत

अकादमीशियन बोबोदजन गफूरोव
सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान के निदेशक

आज की दुनिया मे वे सब लोग जो कि विश्व-शान्ति तथा सामाजिक प्रगति मे विश्वास रखते हैं, नेहरू के महान् मानवतावादी विचारों से अवश्य ही प्रभावित होते हैं। सोवियत संघ में लोग जवाहरलाल नेहरू को अच्छी तरह जानते हैं और वहाँ उनका बड़ा सम्मान है। उनकी देशभक्ति, दृढ़ निश्चय तथा अद्भुत कार्य-क्षमता से बहुत प्रभावित थी। उनके ये गुण विश्व-शान्ति तथा जन-सामान्य के हितों के लिए किये गये उनके संघर्ष से स्पष्ट हैं।

मुझे नेहरू से बहुत बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक असाधारण राजनीतिज्ञ, विद्वान् इतिहासकार तथा योग्य राजनैतिक पत्रकार थे।

मैं उनकी सादगी और विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ। अपने शासकीय कार्यों की व्यस्तता के बावजूद नेहरू हर वर्ग के और हर देश के लोगों से मिलने के लिए समय निकाल लेते थे।

उल्लेखनीय है कि हमारे संस्थान के जो भी सदस्य भारत गये, प्रायः उन सभी को नेहरू से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुझे नेहरू से बहुत से उच्च स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो में भी मिलने

का सुअवसर मिला। ऐसे अवसरों पर मैंने सदा महसूस किया कि नेहरू चाहते हैं कि सम्मेलन में उन्हें एक साधारण भागीदार के रूप में ही लिया जाये। वह इस बारे में बहुत सतर्क रहते थे कि सम्मेलन में भाग लेने वाले हर व्यक्ति के सम्मान और सत्कार का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाये। नेहरू मधुर आवाज में बोलते थे लेकिन उनके तर्क प्रबल होते थे। उनके भाषण सदा विषय केन्द्रित तथा तथ्यपूर्ण होते थे।

नेहरू एक महान् देश के महान् सपूत थे।

साम्राज्यवाद के प्रबल विरोधी

अकादमीशियन येवजेनी झुकोव

नवम्बर १९६४ में दिल्ली में आयोजित विश्व-शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सोवियत प्रतिनिधि मंडल के नेता। सम्मेलन का एक सत्र नेहरू पर ही था। येवजेनी झुकोव नेहरू से बहुत बार मिले थे। सम्मेलन में दिये गये उनके भाषण का संक्षिप्त रूप यहां प्रस्तुत है

आज जवाहरलाल नेहरू के जन्म-दिवस के अवसर पर हम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र में किये गये उनके महत्त्वपूर्ण कामों तथा विभिन्न देशों के बीच शान्ति स्थापित करने और उनकी मैत्री दृढ़ करने के लिए किये गये अथक प्रयत्नों को ससम्मान याद करते हैं। भारतीय तथा सोवियत-मैत्री को घनिष्ठ बनाने में नेहरू का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सोवियत लोग जो कि भारत तथा अन्य देशों के साथ मैत्री सम्बन्ध विकसित करने में दिलचस्पी रखते हैं, इस क्षेत्र में नेहरू द्वारा किये गये कामों की बहुत कद्र करते हैं।

गुटनिरपेक्षता की नीति जिसे कि सकारात्मक तटस्थता की नीति भी कहा जाता है, असन्दिग्ध रूप से नेहरू के नाम के साथ जुड़ी है। वह इस नीति के निर्माता तथा प्रवर्तक थे। कुछ देशों के चन्द लोगों ने बिना किसी तर्क के इस नीति को निष्क्रिय नीति कहकर आक्रमण किये। उन्होंने इसे आक्रमक शक्तियों के विरुद्ध चलने वाले संघर्ष के प्रति विश्वासघात बताया और परम्परागत

अर्थ में मध्यमार्गी कहकर इसे खारिज करने की कोशिश की।

असल में नेहरू की गुटनिरपेक्षता की नीति, जिसका कि तटस्थ देशों में से अधिकाश अनुसरण कर रहे हैं, निष्क्रियता से कोई ताल्लुक नही रखती। सच तो यह आक्रामक शक्तियों के प्रतिरोध का एक रूप है और औपनिवेशिक सैनिक गुटो, विदेशी फौजी अड्डों तथा आणविक शस्त्रो के विस्तार को समाप्त करने का एक साधन है। यह नीति विकासमान देशों को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को खतरे में डालने वाली प्रतिक्रियावादी तथा आक्रामक शक्तियों के प्रतिरोध का एक प्रभावपूर्ण साधन है। उपनिवेशवादी शक्तियां अन्य देशो को अपने आक्रामक गुटों के दायरे मे लेने के लिए उन्हे तथाकथित सैनिक सहायता देने का दंभ करती हैं। वैसे उनका एकमात्र लक्ष्य अपना आधिपत्य जमाना और जिन देशों ने कुछ ही समय पहले उपनिवेशवादी सत्ता के जुए को उतारकर फेंका है, उन पर फिर वही सत्ता थोप देना है।

उपनिवेशवाद की कुटिल आकाक्षाओं के विरोध, किसी भी प्रकार के बलात अधिग्रहण के मौके पर राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा, उपनिवेशवाद की भर्त्सना तथा हर संभव रूप में उसके विरुद्ध संघर्ष के पीछे सकारात्मक तटस्थता की नीति ही होती है। इस नीति को व्यापक समर्थन मिला और पूरी दुनिया के प्रगतिशील लोगों की प्रशंसा मिली है।

मैं गुटनिरपेक्षता की उपनिवेशवाद-विरोधी प्रकृति पर खास तौर से जोर देना चाहता हूँ। जिस भी व्यक्ति ने नेहरू के जीवन का अध्ययन किया है और बहुत नाजुक मौको पर उनके क्रिया-कलापों को समझने की कोशिश की है वे निःसंदेह इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि नेहरू उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध निरंतर लड़ने वाले योद्धा थे। इन्होंने अपने जीवन के कई वर्ष उपनिवेशवादी जेलो में बिताये थे, इसलिए उनका उपनिवेशवाद-विरोधी होना स्वाभाविक ही था।

१९५५ मे मैं बाडुंग सम्मेलन मे एक पत्रकार के रूप में सम्मिलित हुआ। वहां मुझे अफ्रेशियाई देशों के इस पहले सम्मेलन में नेहरू की असाधारण सक्रियता स्वयं अपनी आंखों से देखने का अवसर मिला। बांडुंग सम्मेलन के बाद दुनिया में बडे-बडे परिवर्तन हो गये है और उपनिवेशवाद पर घातक प्रहार हुए हैं। लेकिन उपनिवेशवाद अभी भी काफी मजबूत है और उस पर बराबर निगरानी रखने की सख्त जरूरत है। जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की जिस नीति को दुनिया के सामने रखा और जिस पर उन्होंने स्वयं भी निष्ठा

उलझे हुए अन्तर्राष्ट्रीय मामलों को आपसी बातचीत के द्वारा हल करने के पक्षपाती थे।

एक अन्य फोटो मे नेहरू दिल्ली स्टेडियम मे बच्चों के एक दल से घिरे खड़े हैं। यह फोटो १६५६ के शरद में उनके जन्म-दिवस समारोह के अवसर पर ली गयी थी। इसमें फूलो का एक विशाल समुद्र, टुकड़ियों मे नाचते हुए लोग और मुस्कराते हुए खुशनुमा चेहरे दिखाये गये हैं। सार्वभौम प्रसन्नता का यह वातावरण नेहरू के प्रति लोगों के हार्दिक प्रेम को प्रकट करता है।

दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू के निवास-स्थान पर हुई भेंटों की मधुर याद अभी भी मेरे दिमाग मे ताजा है। १६५६ के शरद में नेहरू मद्रास मे आयोजित तीसरी आल इण्डिया राइटर्स कानफ्रेंस मे भाग लेकर लौटते हुए हमारे प्रतिनिधि मण्डल से मिले। लेखक बोरिस पोलेवाय, वेर्दी करबाबायेव और मैं उनके अध्ययन-कक्ष मे पहुँचे तो उत्तेजित हुए बिना न रह सके। हम तीनो ही अवसर के अनुकूल बधाई के उचित शब्द खोजने में लगे थे। नेहरू तेज कदमों से कमरे मे दाखिल हुए, हल्के से मुस्कराये और उन्होने हमें आराम से बैठ जाने के लिए कहा। उनके मृदु व्यवहार से हमारी उत्तेजना समाप्त हो गयी और मित्रतापूर्ण, अनौपचारिक वातचीत शुरू हुई।

बोरिस पोलेवाय तथा बेर्दी करबाबायेव को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि वह रूसी साहित्य के बहुत शौकीन रहे है और एक समय उन्होने ताल्सताय, चेखव, गोर्की और दूसरे रूसी लेखकों के साहित्य में से काफी कुछ पढा है। नेहरू ने आगे कहा कि हालांकि अब उन्हें कथा-साहित्य पढने के लिए अधिक समय नही मिल पाता, फिर भी वह उनकी पुस्तकों के लिए समय निकालने की पूरी चेष्टा करेंगे।

पोलेवाय ने अपने उपन्यास **एक वास्तविक आदमी की कहानी** और करबाबायेव ने अपने उपन्यास **निर्णायक कदम** के अंग्रेजी अनुवाद नेहरू को भेंट किये।

. वे सब जो कि नेहरू को जानते थे, उनकी विद्वत्ता और विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्रो में उनके बहुमुखी ज्ञान से प्रभावित हुए बिना नही रह सकते थे। *स्वयं नेहरू की रचनाओं से ही हमे पता चलता है कि भारत के लोगों ने विश्व* संस्कृति को क्या कुछ दिया है। नेहरू की रचनाएँ उनके समसामयिक दृष्टिकोण और भारत तथा विश्व के अन्य देशो के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विकास की समस्याओं के प्रति उनके स्पष्ट तथा दृढ विचारों के लिए प्रसिद्ध है। उनकी पुस्तक **भारत की खोज** सोवियत संघ मे काफी लोक-

प्रिय है।

मैंने नेहरू को अन्तिम बार ७ नवम्बर १९६३ को दिल्ली मे देखा था। उस समय वे गवर्नमेण्ट हाउस के अपने अध्ययन-कक्ष मे मिले थे। शासकीय कार्य-भार के दबाव, अस्वास्थ्य और थकान के बावजूद नेहरू ने अमृतसर में हुए अखिल भारतीय शान्ति सम्मेलन के रूसी प्रतिनिधियो से मिलने का समय निकाला।

मैं नेहरू को हमेशा उसी रूप मे याद रखूंगा, जिसमें कि मैंने उन्हें अन्तिम बार देखा था। आज भी मैं उनकी वह मधुर आवाज सुन सकता हूँ, उनके मित्रतापूर्ण हाथ मिलाने के स्पर्श को अनुभव कर सकता हूँ और उनकी खुली-खिली मुस्कान को देख सकता हूँ।

नेहरू के महान् कार्य ही उनका स्मारक हैं

व्लादिमिर बाला बुशेविच
इतिहास के निदेशक। अनेक वर्षों तक सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान के भारतीय विभाग के अध्यक्ष। सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के भूतपूर्व उपाध्यक्ष

मैं नेहरू से सबसे पहले १९२७ मे महान समाजवादी अक्तूबर क्रान्ति की दसवी वर्षगाठ के अवसर पर मास्को हाउस आफ यूनियन्स के कालम हाल मे मिला था। हाल पूरा भरा हुआ था। श्रोताओ मे विभिन्न देशो से आये हुए बहुत से अतिथि थे। सभा की कार्यवाही को चलते हुए कुछ देर ही चली थी कि अचानक हाल तालियो की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। श्रोता ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्षरत भारत की महान जनता के प्रतिनिधियों का स्वागत कर रहे थे। आगन्तुको में शान्त स्वभाव के और सफेद बालों वाले मोतीलाल नेहरू, उनके युवा तथा उत्साही पुत्र जवाहरलाल नेहरू और साथ मे उनकी पत्नी कमला और छोटी बहन। भारतीय मेहमानो का बहुत उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया और उन्हें उनके योग्य सम्मानपूर्ण स्थान मे रखा गया। इस बात पर अधिक जोर देने की आवश्यकता नही है कि अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति की दसवी वर्षगांठ के अवसर पर नेहरू की यह सोवियत यात्रा, एक ऐसी यात्रा जिसके

लिए युवा नेहरू काफी दिन से उत्सुक थे, असाधारण महत्त्व रखती है।

उस सभा में हालांकि मैं मंच से कुछ दूर बैठा था, फिर मैं जो कुछ देख सका, उससे अत्यधिक प्रभावित हुआ। उस समय मैं एक युवा भारतीय विद्याविद् था और अब उन व्यक्तियों को साक्षात् अपने सामने देख रहा था, जिन्हें कि मैंने बहुत अच्छी तरह पढा था और जो कि उपनिवेशवाद के विरुद्ध भारत के संघर्ष के प्रतीक थे।

उसके काफी वर्ष बाद जनवरी, १९६४ में दिल्ली मे हुई प्राच्यविदो की २६वी कांग्रेस के उद्घाटन के अवसर पर नेहरू से मेरी फिर भेंट हुई। मुझे इस भेंट की भी बहुत-सी बातें याद है। जवाहरलाल नेहरू मंच पर आये तो श्रोताओं ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। सदा की तरह नेहरू का भाषण तर्कसम्मत एवं प्रभावपूर्ण था। उन्होंने उस अवसर पर कहा कि भूतकाल का अध्ययन केवल जानकारी प्राप्त करने के लिए ही नही, बल्कि उस जानकारी की रोशनी मे आज की समस्याओ के समाधान ढूँढने के लिए किया जाना चाहिए। भाषण के बाद नेहरू मंच से उतरे तो उन्होने कुछ प्रतिनिधियो से हाथ मिलाये। उन प्रतिनिधियो मे से एक मैं भी था। उस समय मुझे ज्ञात नही था कि नेहरू से यह मेरी अन्तिम भेंट होगी। आज भी मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन है कि नेहरू नही रहे; क्योकि उन्होंने जो महान् कार्य किये, वे आज भी जीवित है। वे महान् कार्य ही नेहरू का सबसे अच्छा स्मारक है।

महान् विद्वान्—जवाहरलाल नेहरू

सैवोखात अजीमद्जनोवा

इतिहास के डॉक्टर, सोवियत-भारत सास्कृतिक सम्बन्ध समिति की उज़बेक शाखा के उपाध्यक्ष, उज़बेक विज्ञान अकादमी के प्राच्य अध्ययन सस्थान के निदेशक

हम—सोवियत उज़बेकिस्तान के वैज्ञानिक और अध्येता नेहरू को केवल एक महान् राजनीतिज्ञ के रूप मे ही नही, बल्कि एक ऐसे विद्वान् के रूप मे भी देखते हैं जिसने कि प्राच्य विद्या के समसामयिक अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उनकी असाधारण महत्त्व की रचनाएँ, जैसे कि 'भारत की कहानी'

और 'आत्मकथा' जिनमें कि भारत के इतिहास, संस्कृति तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की बहुत ही अच्छी विवेचना प्रस्तुत की गयी है, सोवियत पाठकों में बहुत लोकप्रिय है। नेहरू वैज्ञानिक दूरदर्शिता से युक्त एक असाधारण इतिहासकार थे।

मैं, एक साधारण उजबेक महिला और भारतीय अध्ययन के क्षेत्र की एक शोध कार्यकर्त्री, तीन बार नेहरू से मिलने का सौभाग्य कर प्राप्त कर सकी।

दिसम्बर १९६० के अंत में मैं भारत-सोवियत मैत्री संघ के तत्वावधान में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ऊपर होने वाले एक अधिवेशन में सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की प्रतिनिधि के रूप में भारत गयी। अधिवेशन बम्बई में हुआ था। अधिवेशन के एक सत्र में नेहरू ने महान् भारतीय कवि के जीवन और कृतित्व के ऊपर एक अभिभाषण पढ़ा। यह हमारे लिए आश्चर्य की बात थी। हम एक लम्बे अरसे से नेहरू को एक महान् राजनीतिज्ञ मानते रहे थे, लेकिन वह तो साथ ही विद्वान् भी सिद्ध हुए।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सम्बन्ध में नये किन्तु गम्भीर विचारों से युक्त उनके भाषण से हम बहुत प्रभावित हुए। नेहरू की अपने कथ्य को सीधी-सरल भाषा में प्रस्तुत करने की कला तथा उनके अन्दाज ने अभिभाषण को बहुत ही प्रभावशाली बना दिया।

नेहरू से मेरी दूसरी भेंट १९६१ में उजबेकिस्तान में तब हुई जब कि वह रूस की शासकीय यात्रा पर आये। वे जहाँ-जहाँ गये, वहीं उनका एक सच्चे मित्र जैसा उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ। ऐसा स्वागत उन्हीं लोगों को मिल पाता है, जिन्हें कि बहुत अधिक प्यार और उतना ही सम्मान दिया जाता है। हम—उजबेकी प्राच्यविद् यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि नेहरू ने हमारे प्राच्य विद्या संस्थान का अवलोकन करने की अनुमति दे दी है। इस अवसर पर उनसे अनौपचारिक तथा मित्रतापूर्ण वातावरण में बातचीत हुई। नेहरू ने संस्थान के कार्यकर्ताओं के काम में गहरी दिलचस्पी ली। संस्थान के प्राचीन पाण्डुलिपियों के विभाग में हुसरो देहलवी की एक पाण्डुलिपि का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कहा कि यह कवि भारत में भी सुपरिचित तथा प्रशंसित है और साथ ही कहा कि भारतीय तथा उजबेक संस्कृतियों में बहुत समानता है।

नेहरू के साथ ४ जनवरी, १९६४ को हुई अन्तिम भेंट मुझे अच्छी तरह याद है। यह भेंट दिल्ली में उस समय हुई जबकि उन्होंने प्राच्यविदों के एक अधिवेशन में भाषण दिया। दस वर्ष बीत गये लेकिन अभी भी मंच से

बोलते हुए उनका वह सादा किन्तु आकर्षक रूप और वे पारदर्शी आँखें मेरे सामने हैं।

नेहरू आज भी जनता के दिलों में समाये हैं

अलेक्सी लेवकोव्स्की,
अलेक्जेंडर चिचेरोव
सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान में भारतविद्

अप्रैल १९६३ की वह सुनहरी सुबह हमें हमेशा याद रहेगी, जब कि इंदिरा गांधी ने हमें जवाहरलाल नेहरू से मिलने का आमंत्रण दिया था। उस समय हम दोनों सोवियत भारतविद् अपने कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर रहे थे।

भेंट से पहले हम दोनों बुरी तरह उत्तेजित थे क्योंकि हमें बराबर एहसास बना हुआ था कि नेहरू के स्तर के नेता से मिलने वाले व्यक्ति पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। सच तो यह कि हमें इसी बात पर आश्चर्य था कि नेहरू ने अपने तमाम शासकीय दायित्वों के बावजूद हम जैसे लोगों से मिलने के लिए समय कैसे निकाल लिया।

हम कुछ संकोच के साथ विदेश मंत्रालय के उनके कमरे में दाखिल हुए। हालांकि हमारी बातचीत संक्षिप्त थी, लेकिन उसका हमारे ऊपर बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। हम विशेष रूप से नेहरू की शालीनता तथा विचारों की महानता से और साथ ही साथ उनकी विनम्रता और गहन दायित्व बोध से प्रभावित हुए। हमने उन्हें रूस में भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा अर्थ-शास्त्र के अध्ययन की प्रगति के बारे में बताया तो उन्होंने बहुत तल्लीनता से हमारी बात सुनी। हमने सोवियत भारतविदों की पुस्तकों के रूप में अपनी तुच्छ भेंट भी उन्हें अर्पित की।

नेहरू ने हमें धन्यवाद दिया और कहा कि वह सोवियत भारतविदों की रचनाओं में और विशेष रूप से उन रचनाओं में जो कि भारत और सोवियत जनता के सम्बन्धों को निकटतर लाने में सहायक हैं, बहुत दिलचस्पी रखते हैं। उन्होंने पूछा कि सोवियत भारतविद् आजकल किन-किन विषयों का अध्ययन कर

रहे है ? श्रौर जब हमने बताया कि वे प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत के इतिहास तथा संस्कृति श्रौर यहाँ के स्वाधीनता सग्राम के इतिहास श्रौर साथ ही साथ समकालीन भारत के सामाजिक तथा श्रार्थिक विकास से सम्बद्ध श्रनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नो का विशेष श्रध्ययन कर रहे हैं तो नेहरू ने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की।

विशेषज्ञ होने के नाते हमने नेहरू से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्बन्ध में वहुत से प्रश्न पूछे। नेहरू मुस्कराये श्रौर बोले कि ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के संक्षिप्त श्रौर चालू किस्म के जवाब देना मुझे पसन्द नही है श्रौर फिर श्राप क्योकि पत्रकार नही, विशेषज्ञ हैं, इसलिए ऐसे उत्तरों से श्राप संतुष्ट भी नही हो सकेंगे। इसके बजाय, बेहतर यह है कि जब श्राप श्रपना काम श्रौर देश की यात्रा पूरी कर चुकें तो हम एक बार फिर मिलें। यहाँ के बारे में श्रापकी राय जानने के बाद मैं श्रापके सवालों के जवाब श्रौर विस्तार से दूंगा।

उसके बाद क्योकि नेहरू का स्वास्थ्य बहुत ज्यादा खराब हो गया श्रौर उन्हें श्राराम के लिए दिल्ली से बाहर जाना पडा, इसलिए उनसे हमारी दूसरी भेंट सम्भव नही हो सकी।

भारत के प्रधानमंत्री से हुई वह मुलाकात हमें सदा याद रहेगी। वे सोवियत संघ के घनिष्ठ मित्र, एक महान् राजनीतिज्ञ तथा विद्वान् श्रौर साथ ही साथ श्राश्चर्यजनक रूप से सादे, विनम्र श्रौर मानवीय गुणों से भरपूर थे।

महान् मानवतावादी

वे तमाम सोवियत नागरिक जिन्हें कि नेहरू से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उनके मानवतावाद से प्रभावित हुए बिना नही रह सके। हमारा विश्वास है कि इस प्रभाव ने ही भारत के महान् राष्ट्रीय नेता नेहरू के बारे में उनकी धारणाओं को निर्धारित किया। सुविख्यात सोवियत प्राच्यविद्, अकादमीशियन बोबोद्जन गफुरोव का कहना है कि नेहरू के स्तर के राजनीतिज्ञ और चिंतक के लिए मानवतावाद के सिद्धांतों, आदर्शों और उसकी समस्याओं में रुचि लेना स्वाभाविक था क्योंकि ये तमाम समस्याएँ भारत की राष्ट्रीय प्रगतिशील विचारधारा की परम्परा में से तो उभरी ही थीं, साथ ही नेहरू के काल के भारत मे भी जुड़ी थीं। वे भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और रूढ़िग्रस्त मध्यकालीन भारत की परम्पराओं के विरुद्ध तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध चल रहे संघर्ष में से सहज रूप से उभरी थीं। वे नये भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक पुर्ननिर्माण के उपायों के लिए चल रही सतत खोज की स्थिति में भारत के जनमानस के सक्रिय सहयोग का स्वाभाविक प्रस्फुटन थी।

ऐसी परिस्थिति में नेहरू को एक राजनीतिज्ञ के रूप में देश की बागडोर सँभालनी पड़ी। अपनी रचनाओं में उन्होंने प्रायः एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के महत्व का विश्लेषण किया है। इस सम्बन्ध में नेहरू का लेनिन के सिद्धांत तथा कर्म का विश्लेषण उल्लेखनीय है। हालाँकि वह लेनिन के व्यक्तित्व के विभिन्न अंगों—नेता, सिद्धातकार तथा राजनीतिज्ञ को पूरी तरह सराहने में असमर्थ रहे हैं, फिर भी उन्होने बहुत बार लिखकर और बोलकर लेनिन की प्रशंसा की है।

नेहरू ने लेनिन को एक ऐसे महान् व्यक्ति के रूप मे देखा है, जिसने कि मजदूर वर्ग के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया। उन्होने लेनिन को एक महान् चिंतक तथा ऐतिहासिक महत्त्व के ऐसे नेता के रूप मे भी देखा जो कि क्रांतिकारी सिद्धांत को क्रांतिकारी व्यवहार से जोडने मे समर्थ था।

नेहरू ने लिखा है कि जैसे-जैसे समय गुजरता जा रहा है, लेनिन महान् से महानतर बनते जा रहे है। वह दुनिया की कुछ एक चुनी हुई अमर विभूतियों मे से एक हैं। आज वह अपने स्मारकों और तस्वीरो मे नही, बल्कि उस महान् काम के रूप मे जिन्दा हैं, जो कि उन्होंने किया। और वह जिन्दा हैं उन करोड़ों मजदूरो के दिलों में जो कि उनके उदाहरण से प्रेरणा लेते हैं और एक बेहतर दिन के आने की उम्मीद करते हैं।

मार्क्स और लेनिन की रचनाओं का अध्ययन करने के बाद नेहरू ने लिखा, "इतिहास की और समाज विकास की इस लम्बी श्रृंखला मे निश्चय ही एक विशेष अर्थ गर्भित है। कुछ परिस्थितियों पर और भविष्य पर अस्पष्टता की जो धूल पडी थी, वह एक हद तक साफ हो गयी है।"[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि दुनिया के प्रति नेहरू के दृष्टिकोण पर ऐतिहासिक तथा द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का गहरा प्रभाव था।

एक नये समाज का निर्माण करने की सोवियत संघ की व्यावहारिक उपलब्धियों का भी नेहरू के ऊपर कम प्रभाव नही पड़ा। इससे वह विकास की उस प्रक्रिया को समझने मे समर्थ हो सके हैं जो कि दुनिया मे आज कार्यरत है। उन्होने इन उपलब्धियों को लेनिन द्वारा महान् मानवतावादी विचारों को दिये गये मूर्त आकार के रूप मे देखा।

भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान नेहरू को विश्वास हो गया कि किसी भी प्रकार का शोषण और दमन, सामंतशाही का शोषण चक्र, धार्मिक अंधविश्वास, नस्लभेद, इतिहास में किसी जातिविशेष के महत्त्व को कम आंकना, उपनिवेशवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद व्यक्ति के और फिर सम्पूर्ण मानवता के संतुलित तथा सम्पूर्ण विकास मे सबसे बड़े अवरोधक है।

नेहरू के मानवतावादी सिद्धातो की साक्षी उनके साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष के रूप मे मिलती है। उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष को विश्वव्यापी स्वाधीनता संघर्षों के पूरक के रूप

१. द डिस्कवरी आफ इंडिया, पृष्ठ १४।

में देखा।

भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के बाद भी नेहरू उपनिवेशवाद के विरुद्ध बराबर संघर्ष करते रहे। सच तो यह है कि उन्होंने प्रत्येक समसामयिक समस्या को उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की रोशनी में ही देखा। उनके लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह उपनिवेशवाद और उसके भयानक कुपरिणामों के विरुद्ध संघर्ष को नव-स्वतंत्रताप्राप्त देशों की जनता के महान मानवतावादी लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते।

असल में नेहरू पूंजीवादी व्यवस्था के दोषों से भली-भांति परिचित थे। यही कारण था कि जब भारत का स्वाधीनता संग्राम चल रहा था, तभी उन्होंने सामाजिक तथा आर्थिक मामलों में कुछ ऐसे उपाय सुझाये, जिन पर चलकर भारत न केवल औपनिवेशिक तथा सामन्ती दमन से बच सकता था बल्कि पूंजीवाद के मार्ग पर चलने से भी बच सकता था।

कई दशकों तक नेहरू बराबर भारत की जनता से कहते रहे कि समाजवाद आदर्श समाज-व्यवस्था है। अप्रैल १९३६ में लखनऊ में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में दिये गये नेहरू के निम्नांकित वक्तव्य की बहुत चर्चा हुई थी। उन्होंने कहा था, "मुझे पूरा विश्वास है कि पूरी दुनिया की और इसीलिए भारत की भी समस्याओं के समाधान की कुंजी केवल समाजवाद के पास है। मैं जब समाजवाद शब्द का प्रयोग करता हूँ तो अस्पष्ट मानवीय रूप में नहीं, बल्कि इसके सही वैज्ञानिक तथा आर्थिक संदर्भ में करता हूँ। समाजवाद केवल एक विशेष प्रकार की आर्थिक व्यवस्था ही नहीं, यह जीवन-दर्शन भी है; और इसीलिए मुझे प्रिय है। भारत के लोगों की गरीबी और बेरोजगारी तथा उनके पतन और आत्महीनता को समाप्त करने का समाजवाद के अतिरिक्त और कोई उपाय मुझे नजर नहीं आता। समाजवाद में राजनैतिक तथा सामाजिक ढांचे में विशाल परिवर्तन करना, भूमि तथा उद्योगों में से निहित स्वार्थों को अलग करना और साथ ही सामन्ती तथा स्वेच्छतापूर्ण राज्य व्यवस्था को समाप्त करना शामिल है। इसका तात्पर्य हुआ निजी सम्पत्ति को समाप्त करना और मुनाफे की वर्तमान व्यवस्था को एक आदर्श सहकारी व्यवस्था में बदलना। इसका मतलब है कि अंततः हमें अपने संवेगों और आदतों तथा आकांक्षाओं में परिवर्तन करना है। संक्षेप में इसका अर्थ हुआ—वर्तमान पूंजीवादी सभ्यता से सर्वथा भिन्न एक नई सभ्यता स्थापित करना।"[1]

१. जवाहरलाल नेहरू, इंडियाज फ्रीडम, लंदन १९६२, पृष्ठ ३५।

नेहरू ने देखा कि मानवतावादी आदर्श सोवियत संघ में सचमुच गहरी जड़ें जमा चुके हैं। उन्हें विश्वास हो गया था कि आज की दुनिया के महत्वपूर्ण प्रश्न जैसे कि युद्ध तथा शांति, उपनिवेशवाद की समाप्ति, सामाजिक दमन के विरुद्ध तथा मनुष्य मात्र की प्रगति के लिए संघर्ष ऐसे प्रश्न हैं जो कि भारत तथा सोवियत संघ के लोगो को एक-दूसरे के निकट लाते और एक-दूसरे के प्रति गहरी सूझबूझ और आपसी मित्रता की मजबूत आधारशिला रखते हैं।

नेहरू के मानवतावादी विचारो ने विश्व के विभिन्न देशों के बीच शांति तथा मित्रता स्थापित करने के उनके प्रयत्नों के रूप में आकार ग्रहण किया। नेहरू इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि विभिन्न देशों के बीच शांति का प्रश्न अततः भारत की विकराल समस्याओ के प्रति उनकी सजगता के साथ जुड़ा है। उनका विश्वास था कि यदि भारत को अपना पुनर्निर्माण करना है तो उसके लिए शांति परम आवश्यक है। उन्होंने कहा था कि अगर दुनिया युद्ध मे उलझ जाती है तो नये भारत के भविष्य के सपने धूल मे मिल जायेंगे। नेहरू की दृष्टि मे शांति भारत में ही नही बल्कि दूसरे देशो में भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए और फिर मानवमात्र के लिए मानवतावादी आकांक्षाओं की पूर्ति की अनिवार्य शर्त थी। उन्होने इस बात पर बल दिया कि हमारा काम शांति की रक्षा करना है, जिसका वास्तविक मतलब है—अपनी सभ्यता की रक्षा करना।

हम अगर गहराई से सोचें तो यह स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है कि नेहरू सोवियत संघ तथा भारत के बीच विभिन्न क्षेत्रो मे आपसी सहयोग बढाने के प्रति प्रतिबद्ध क्यों थे।

१९४६ मे जबकि भारत से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन समाप्त होने जा रहा था तो नेहरू ने दिल्ली में *आयोजित एशियाई एकता सम्मेलन में भाग* लेने के लिए सोवियत प्रतिनिधियो को निमंत्रित किया। तब से सोवियत सघ और भारत के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान निरंतर विकसित होता गया है। सास्कृतिक आदान-प्रदान के लिए होने वाले वार्षिक समझौतों के अधीन शिक्षा, कला, विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में दोनों देशो के बीच आपसी सहयोग बढता गया है। इन समझौतो के अनुसार उपरिलिखित क्षेत्रो के लोगो के तथा महिलाओं और युवा संगठनो के प्रतिनिधि मंडलो के एक-दूसरे के देशो मे जाने की संख्या तेजी से बढती जा रही है। एक-दूसरे की साहित्यिक कृतियो का अनुवाद करने, ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों की पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का आदान-प्रदान करने और आपसी सहयोग के आधार पर प्रदर्शनियाँ आयोजित करने को हर प्रकार से समर्थन तथा प्रोत्साहन दिया गया है।

सोवियत संघ और भारत के बीच होनेवाले इस सम्पूर्ण आदान-प्रदान मे स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, एक असाधारण मानवतावादी और विचारक जवाहरलाल नेहरू का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

कलाकार, राजनीतिज्ञ और भारत का सच्चा सपूत—नेहरू

इल्या एहरनबर्ग

लेखक, अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार के विजेता। १९५६ मे भारत का दौरा किया। अपने लेख, 'इम्प्रेशन्स ऑफ इण्डिया' में उन्होंने अपनी इस यात्रा का वृत्तान्त प्रस्तुत किया है

मेरी दिल्ली यात्रा संयोग से मेरे पैंसठवें जन्म दिवस के अवसर पर हुई। कुछ लोगों का कथन है कि वृद्धावस्था में व्यक्ति २० वर्ष की उम्र के मुकाबले ज्यादा बेहतर ढंग से समझने लगता है। मैं नहीं जानता कि यह कहां तक सच है। अगर सचमुच ऐसा है और उम्र के साथ-साथ मनुष्य का ज्ञान बढता है तो भी वह प्रकृति की एक अमूल्य भेंट से वंचित हो जाता है। यह अमूल्य भेंट—आश्चर्यचकित हो सकने की क्षमता—युवावस्था की अपनी विशेषता है। भारत को देखकर मैं आश्चर्यचकित हुआ। इसे देखकर मैंने महसूस किया गोया मैं दुनिया को एकदम नयी दृष्टि से देख रहा हूं।

जिस भी व्यक्ति ने नेहरू की पुस्तकें पढी हैं, वह जानता है कि नेहरू एक असाधारण किस्म के दिलचस्प बातचीत करने वाले रहे होंगे। उन्हें विविध विषयो का गहरा ज्ञान प्राप्त था और उनका जीवन नाटकीय घटनाओं तथा अनुभवो से भरा था। मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला तो स्वाभाविक रूप से मेरी दिलचस्पी विश्व शांति की स्थापना मे भारत के योगदान जैसे महत्त्व-पूर्ण विषय में थी। नेहरू अपने देश की शांतिप्रियता की नीति पर बहुत विस्तार से और गम्भीरतापूर्वक बोले। उनमे एक अनुभवी राजनीतिज्ञ की दृष्टि और एक कलाकार की अभिव्यक्ति-कुशलता थी। वह भारत के साधारण लोगों के निकट सम्पर्क में रहते थे और उनसे हार्दिक प्रेम करते थे।

मुझे जवाहरलाल नेहरू का वह रूप भी अच्छी तरह याद है जब कि वह

मास्को के वासमत्राया मार्ग पर गाड़ी में गुजरे। याद है कि स्वागत के उत्साह मे भरे लोगों ने कैसे उनकी कार को फूलों से लाद दिया था। वे गहरे कासनी रंग के उत्तर के फूल थे और उस दिन मास्को का हृदय उत्साह से प्रफुल्लित था।

मुझे नेहरू से मिलने और उनसे बातचीत करते हुए एक पूरी शाम बिताने का सुअवसर मिला। नेहरू ने कहा कि वह विषय को दार्शनिक ढंग से पेश नही करना चाहते, क्योंकि वह जानते हैं कि यह दार्शनिकों का प्रदेश है।

मैं पेशेवर राजनीतिज्ञ नही हूँ और इसीलिए यह निर्णय दूसरों के लिए छोड़ता हूँ कि नेहरू ने अपने देश के लिए क्या किया और क्या नही किया। उनका देश उपनिवेशवादियों द्वारा लूटा गया एक प्राचीन, विविध तथा गहन सस्कृति का देश है। मैं तो केवल खुले विचारों के उस आदमी के बारे मे बात करना चाहता हूँ, जिससे कि विभिन्न विषयो पर सहज ढंग से विचार-विमर्श किया जा सकता था।

नेहरू का व्यक्तित्व केवल राजनीतिक समस्याओं तक ही सीमित नही था। वह उन प्रश्नो मे भी गहरे उतरते थे जो कि समसामयिक राजनीति के दायरे से बाहर के हैं। यह शायद उनके देश की शताब्दियो पुरानी सास्कृतिक परम्पराओं की विरासत के कारण सम्भव था। भारतीयता नेहरू की हड्डियो तक मे समायी थी लेकिन उनकी दृष्टि मे भारत की राष्ट्रीय प्रतिमा के सास्कृतिक उत्कर्ष का अर्थ कभी भी आध्यात्मिक अलगाव और जीवन की समस्याओं से दूर भागना नही होता था।

नेहरू ने मुझसे तॉलस्ताय, रोमा रोलॉ और बर्नार्ड शा की रचनाओं पर बातचीत की। वह इन महान् लेखकों के भाषण सुन चुके थे। उन्होंने मुझे उन परिस्थितियो के बारे मे बताया, जिनमे कि उन्हे अक्तूबर क्रांति की खबर मिली थी। बातचीत में नेहरू ने लेनिन को एक ऐसा व्यक्ति बताया जिसने कि मनुष्य की चेतना को जाग्रत करने के काम मे बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

एक बार जब कि विश्व शान्ति परिषद् के ब्यूरो की नयी दिल्ली मे बैठक हो रही थी तो हमें एक बार फिर नेहरू से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उस अवसर पर उन्होंने बहुत उत्साहपूर्वक कहा कि शान्ति के लिए कार्य करना हमारे समय का सबसे बडा आन्दोलन है।

शान्ति तथा अफ्रो-एशियाई एकता के प्रबल समर्थक

अनातोली सोफ्रोनोव

लेखक, अफ्रो-एशियाई एकता की सोवियत समिति के उपाध्यक्ष

भारतीय इतिहास का एक पूरा युग—राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनता का संघर्ष और फिर पुनर्जागरण तथा जनता के लिए बेहतर जीवन जुटाने का संघर्ष जवाहरलाल नेहरू के नाम के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा है।

पिछले दो दशकों में मुझे अनेक बार भारत की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने भारत और सोवियत संघ के बीच मित्रता को उभरते और मजबूत होते हुए देखा है। भारतीय जनता के विभिन्न वर्गों में इस मैत्री की गहरी जड़ें देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि यह मैत्री दोनों देशों की आपसी सूझ-बूझ और गहरे विश्वास के आधार पर खड़ी है और यह एक ऐसा महान् कार्य है, जिसमें कि नेहरू ने व्यक्तिगत रूप से बहुत योगदान किया।

नेहरू अफ्रो-एशियाई एकता आन्दोलन के संवाहक थे।

पहली अफ्रो-एशियाई एकता कान्फ्रेन्स की तैयारी के सिलसिले में १९५५ में अपने अस्सी दिन के भारत प्रवास के दौरान मैं और दूसरे बहुत से देशों के प्रतिनिधि प्रायः नेहरू से मिलते रहे। उसके बाद प्रधानमन्त्री ने नई दिल्ली में एशियाई लेखक सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में भाग लिया। नेहरू से मिलने वाला कोई भी व्यक्ति विभिन्न विषयों में उनकी गहरी दिलचस्पी की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। वह राजनीतिक, दार्शनिक और लेखक—तीनों एक साथ थे।

विश्व शान्ति के प्रबल समर्थक और महान् मानवतावादी के रूप में नेहरू का सम्पूर्ण जीवन और उनके कार्य सोवियत संघ सहित दुनिया के करोड़ों लोगों की प्रशंसा प्राप्त कर चुके हैं।

नेहरू अफ्रो-एशियाई जगत में एक असाधारण व्यक्तित्व रखते थे। उन्होंने विभिन्न उपनिवेशवाद-विरोधी शक्तियों के बीच एकजुटता और दृढ़ता कायम करने में उल्लेखनीय योगदान किया। नेहरू ने बार-बार कहा कि एशियाई और अफ्रीकी देशों की एकता कोई अमूर्त अथवा संयोगात्मक धारणा नहीं है। इसके

विपरीत इन देशों की एक-दूसरे के निकट आने की ललक स्वाभाविक है और उनकी उस समान ऐतिहासिक नियति में से प्रस्फुटित हुई है जिसे कि उन सबको अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अत्यन्त घृणित उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करते समय झेलना पड़ा।

नेहरू ने ठीक ही कहा था कि जो देश राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके है, उनके सामने अत्यंत गम्भीर और तात्कालिक महत्त्व के काम हैं—अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा करना और उलझी हुई सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को हल करना। इसीलिए नेहरू ने जोर देकर कहा कि अफ्रो-एशियाई एकता का आन्दोलन केवल समान ऐतिहासिक मार्ग, समान भौगोलिक परिस्थितियों और समान सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं पर ही आधारित नहीं, बल्कि ये देश भूतकाल में और अब भी अपनी एक विशेष समानता के कारण एक रहे हैं। यह समानता है—हर सम्भव रूप मे उपनिवेशवाद और नस्लवाद का विरोध करना। नेहरू ने फिर कहा कि जो देश उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के शिकंजे से अपने को मुक्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उन्हे समर्थन देना अफ्रो-एशियाई एकता की आधारभूत स्थापनाओं मे से एक है। इस प्रकार के समर्थन के लिए नेहरू द्वारा की गई अपीलों को व्यापक तथा उत्साहपूर्ण प्रत्युत्तर मिले।

नेहरू ने नये उपनिवेशवाद की घुसपैठ का दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उन्होंने उत्साह-भरे शब्दों मे अफ्रीकी जनता द्वारा चलाये जा रहे शौर्यपूर्ण संघर्ष की सराहना की और कहा कि उनकी यह जागृति और स्वाधीनता संघर्ष बीसवीं शताब्दी की बहुत महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं।

अफ्रो-एशियाई एकता की समस्या पर नेहरू के विचार और विभिन्न प्रगतिशील आन्दोलनों के बीच निकट संबंध स्थापित करने के लिए उनकी अपीलें इस सचाई के साथ जुड़ी हैं कि नेहरू एशिया, अफ्रीका और पूरी दुनिया में शान्ति स्थापित करने के संघर्ष के प्रति किस सीमा तक सजग थे। नेहरू ने बार-बार कहा कि नये स्वतंत्र हुए देश केवल शांति की स्थिति में ही अपने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की कठिन समस्याओं को हल कर सकते हैं।

नेहरू की याद

इरावली अवाशीद्जे

कवि, नेहरू पुरस्कार के विजेता

दिसम्बर १९५६ में दिल्ली मे आयोजित एशियाई लेखक सम्मेलन के मंच पर जैसे ही नेहरू पहुँचे, मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। उनकी पुस्तक भारत की कहानी १९५५ में रूसी में प्रकाशित हुई थी और मैंने उसे बहुत रुचि के साथ पढ़ा था। अब मैं उस व्यक्ति को अपनी आँखों से देख रहा था, जिसने कि पुस्तक लिखी थी। मैं उस स्मरणीय सम्मेलन के मौके पर ही नहीं, बल्कि पुस्तक पढ़ने के बाद पिछले पूरे साल मे नेहरू का प्रशंसक रहा था। इस समय मैं एक ऐसे महान् योद्धा को देख रहा था, जिसने कि अपनी जिन्दगी के बेश-कीमती साल औपनिवेशिक भारत की जेलों में बिताये थे। वह पूर्व के एक महान् चिंतक, कलाकार, कवि और भारत के प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने स्वयं अपने बारे में लिखा है, "मैं भी एक ऐसा असामान्य व्यक्ति था, जिसके भीतर अनोखे रहस्य और ऐसी गहराइयाँ थी, जिन्हे कि खुद मैं भी कभी नहीं नाप सका।"[१]

शायद मैं नेहरू को उनकी सम्पूर्णता में कभी भी समझ नहीं सका और न ही अब समझ पाने में समर्थ हूँ। लेकिन, लगता है, मैं उनके व्यक्तित्व के उस पक्ष को जरूर समझ सका जो कि कम से कम मेरी दृष्टि मे भारत के इस महान् सपूत की मानसिकता का प्रमुख लक्षण है। उनका दृढ विश्वास था कि संसार के एक ज्यादा बड़े हिस्से में मानव जाति को जो कुछ प्राप्त है, वह उससे कहीं ज्यादा की हकदार है। नेहरू उस मार्ग को जानते थे जिस पर चलकर मानवता उससे कही ज्यादा को प्राप्त कर सकती है। नेहरू के सामने सोवियत संघ का उदाहरण था। सोवियत संघ यानि उस लेनिन की जन्मभूमि, जिसकी नेहरू सदा प्रशंसा करते थे।

भारतीय प्रधानमंत्री ने एक शानदार भाषण दिया, जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी की इस माँग पर बहुत जोर दिया, "आज हमें जीवन के अत्यंत महत्त्व-पूर्ण विषयों को लेना है,…मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ो

१. जवाहरलाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ २७।

लोगों से अपनी बात कह सके।"[1]

महात्मा गांधी ने ये शब्द संघर्षरत भारत के कलाकारों तथा साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहे थे। नेहरू ने तमाम देशों के सृजनात्मक रचनाकारों से अनुरोध किया कि ऐसे समय हमें बहुत सतर्क रहने की जरूरत है, जब कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपना प्रभाव बढ़ाने मे लगी हैं। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शान्ति, प्रगति तथा मानवतावाद, स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपने प्रयास दुगुने कर देने चाहिए। जो देश कुछ समय पहले ही स्वतन्त्र हुए हैं, उन देशों के साहित्यकारो की जिम्मेदारियो पर नेहरू ने विशेष बल दिया। उन्होंने उन देशों की कठिनाइयों और समस्याओ, विशेष रूप से भाषा तथा साहित्य के विकास की समस्याओं की चर्चा भी की।

हम सोवियत लेखक के उस दायित्व को अच्छी तरह अनुभव करते है जो कि उसने हमारे देश को एक नये समाजवादी देश में बदलने और हमारे दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष मे निभाया है। जवाहरलाल नेहरू सम्भवतः उस अनुभव के बारे में अच्छी तरह जानते थे, जो कि सोवियत साहित्य और कला ने प्राप्त किया था। उन्होंने सोवियत सघ की वास्तविकताओं का गहराई से अध्ययन किया था और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी उपलब्धियों से प्रभावित हुए थे।

१३ जून १९५५ एक गर्म दिन था। उस समय हम तबिलिसी हवाई अड्डे पर अपने भारतीय मेहमानों का इन्तजार कर रहे थे। मजाक मे किसी ने कहा कि हमने उनके उपयुक्त मौसम बना लिया है। नेहरू अपनी बेटी इन्दिरा गांधी और दल के दूसरे सदस्यो के साथ तबिलिसी पहुँचे।

जब वायुयान के दरवाजे खोले गये तो एक लम्बा व्यक्ति अपने देश की राष्ट्रीय वेश-भूषा मे और हाथ मे चन्दन की छड़ी लिये हुए नजर आया। वह माइक्रोफोन के पास पहुँचा और स्वागत भाषण के उत्तर मे उसने कहा: "आपके इस महान् देश मे हमारा हर जगह भव्य स्वागत हुआ है। इन सभाओ में मुझे पता चला कि सोवियत जनता हमारे देश को कितना प्यार करती है। मुझे विश्वास है कि शान्ति हमेशा सब देशों की एक बडी आवश्यकता रही है, और आज तो यह और भी बडी आवश्यकता बन गई है।"[2]

उसी शाम मेहमानों को लोहे के रस्सों पर चलने वाली रेल का तबिलिसी की सबसे ऊँची चोटी पर बना प्लेटफार्म दिखाने का आयोजन किया गया।

१. डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३४२।
२. सोवियत लैंड, १९७३, संख्या १०।

इस प्लेटफार्म से पूरे शहर का दृश्य दिखाई देता है और रात में जब कि शहर बिजली के कुमकुमों से चमचमा रहा होता है, तो यह दृश्य बहुत ही मनोरम बन जाता है। नेहरू और इन्दिरा गांधी बहुत उत्साहपूर्वक इस दृश्य की प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन नेहरू और इन्दिरा गाधी को रुस्तावी नामक नगर दिखाया गया। यह नगर तबिलिसी से २० किलोमीटर दूर है और पिछले महायुद्ध के बाद बसाया गया है। आज रुस्तावी सोवियत संघ में इस्पात का सबसे बड़ा केन्द्र है। शहर का दौरा करने के बाद नेहरू ने कहा कि जल्दी ही भारत मे भी सोवियत सहायता से ऐसा ही एक कारखाना बनाया जायेगा। असल में वह भिलाई कारखाने का जिक्र कर रहे थे। आज भिलाई का यह कारखाना पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। संयोग से भिलाई इस्पात कारखाने मे जार्जिया के विशेषज्ञों ने भी काम किया है। १९७० मे जबकि मैं दिल्ली मे था तो भिलाई मे काम करनेवाले जार्जिया के कुछ इंजीनियर वहाँ आये और जनपथ होटल मे मुझसे मिले। उन्होंने मुझे भारत मे बीत रहे अपने जीवन के बारे मे बहुत-सी दिलचस्प बातें बतायी और कहा, "लेकिन एक दिन हमें फिर तबिलिसी ही जाना है।"

नेहरू और उनके दल ने शहर के आसपास के दर्शनीय स्थानो को देखने का कार्यक्रम बनाया। १४ जून को विदा होने से एक दिन पहले उन्होने अपने एक विदाई भाषण में कहा, "मैं आपको और खूबसूरत जार्जिया के सभी नागरिको को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे अपनी यह यात्रा सदा याद रहेगी।"

संयोग से नेहरू की इस यात्रा के दौरान हमें उनके बारे मे एक नयी जानकारी मिली। स्वेरदवलोवस्क मे नेहरू ने एक भू-गर्भ संग्रहालय का अवलोकन किया। बाद में उन्होने दर्शकों की पुस्तिका मे लिखा "यह एक अच्छा संग्रहालय है। यह वैसे तो सभी लोगो के लिए दिलचस्प है, लेकिन जिन्होंने भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा है, उनके लिए तो विशेष रूप से आकर्षक है, क्योकि मैंने विद्यार्थी जीवन मे भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा था, इसलिए इस संग्रहालय को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। संग्रहालय मे विभिन्न प्रकार की कच्ची धातुओं का जो संग्रह किया गया है, उसका विस्तृत अध्ययन करके मुझे और भी खुशी होगी।"

उस समय नेहरू के जीवन के बारे मे बहुत अधिक नही जानता था। यह जून १९५५ की बात है और भारत की कहानी उसके बाद सोवियत संघ मे प्रकाशित हुई। लेकिन नेहरू के बारे में मेरी अपनी खोज तो उसी समय शुरू हो गई।

लोगो से अपनी बात कह सके ।"[1]

महात्मा गांधी ने ये शब्द संघर्षरत भारत के कलाकारों तथा साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहे थे । नेहरू ने तमाम देशो के सृजनात्मक रचनाकारो से अनुरोध किया कि ऐसे समय हमे बहुत सतर्क रहने की जरूरत है, जब कि साम्राज्यवादी शक्तियां अपना प्रभाव बढाने मे लगी हैं । उन्होने आग्रह किया कि हमे शान्ति, प्रगति तथा मानवतावाद, स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपने प्रयास दुगुने कर देने चाहिए । जो देश कुछ समय पहले ही स्वतन्त्र हुए हैं, उन देशों के साहित्यकारो की जिम्मेदारियों पर नेहरू ने विशेष बल दिया । उन्होने उन देशो की कठिनाइयों और समस्याओ, विशेष रूप से भाषा तथा साहित्य के विकास की समस्याओ की चर्चा भी की ।

हम सोवियत लेखक के उस दायित्व को अच्छी तरह अनुभव करते है जो कि उसने हमारे देश को एक नये समाजवादी देश मे बदलने और हमारे दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष मे निभाया है । जवाहरलाल नेहरू सम्भवत: उस अनुभव के बारे मे अच्छी तरह जानते थे, जो कि सोवियत साहित्य और कला ने प्राप्त किया था । उन्होने सोवियत संघ की वास्तविकताओं का गहराई से अध्ययन किया था और विभिन्न क्षेत्रों मे उसकी उपलब्धियों से प्रभावित हुए थे ।

१३ जून १९५५ एक गर्म दिन था । उस समय हम तबिलिसी हवाई अड्डे पर अपने भारतीय मेहमानों का इन्तजार कर रहे थे । मजाक मे किसी ने कहा कि हमने उनके उपयुक्त मौसम बना लिया है । नेहरू अपनी बेटी इन्दिरा गांधी और दल के दूसरे सदस्यों के साथ तबिलिसी पहुंचे ।

जब वायुयान के दरवाजे खोले गये तो एक लम्बा व्यक्ति अपने देश की राष्ट्रीय वेश-भूषा मे और हाथ मे चन्दन की छडी लिये हुए नजर आया । वह माइक्रोफोन के पास पहुंचा और स्वागत भाषण के उत्तर मे उसने कहा : "आपके इस महान् देश मे हमारा हर जगह भव्य स्वागत हुआ है । इन सभाओं मे मुझे पता चला कि सोवियत जनता हमारे देश को कितना प्यार करती है। मुझे विश्वास है कि शान्ति हमेशा सब देशों की एक बडी आवश्यकता रही है, और आज तो यह और भी बड़ी आवश्यकता बन गई है ।"[2]

उसी शाम मेहमानों को लोहे के रस्सों पर चलने वाली रेल का तबिलिसी की सबसे ऊँची चोटी पर बना प्लेटफार्म दिखाने का आयोजन किया गया ।

१. डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३४२ ।
२. सोवियत लैंड, १९७३, संख्या १० ।

इस प्लेटफार्म से पूरे शहर का दृश्य दिखाई देता है और रात में जब कि शहर बिजली के कुमकुमों से चमचमा रहा होता है, तो यह दृश्य बहुत ही मनोरम बन जाता है। नेहरू और इन्दिरा गांधी बहुत उत्साहपूर्वक इस दृश्य की प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन नेहरू और इन्दिरा गाधी को रुस्तावी नामक नगर दिखाया गया।। यह नगर तबिलिसी से २० किलोमीटर दूर है और पिछले महायुद्ध के बाद बसाया गया है। आज रुस्तावी सोवियत संघ मे इस्पात का सबसे बड़ा केन्द्र है। शहर का दौरा करने के बाद नेहरू ने कहा कि जल्दी ही भारत मे भी सोवियत सहायता से ऐसा ही एक कारखाना बनाया जायेगा। असल मे वह भिलाई कारखाने का जिक्र कर रहे थे। आज भिलाई का यह कारखाना पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। संयोग से भिलाई इस्पात कारखाने मे जार्जिया के विशेषज्ञों ने भी काम किया है। १९७० में जबकि मैं दिल्ली में था तो भिलाई मे काम करनेवाले जार्जिया के कुछ इंजीनियर वहाँ आये और जनपथ होटल में मुझसे मिले। उन्होंने मुझे भारत मे बीत रहे अपने जीवन के बारे में बहुत-सी दिलचस्प बातें बतायी और कहा, "लेकिन एक दिन हमें फिर तबिलिसी ही जाना है।"

नेहरू और उनके दल ने शहर के आसपास के दर्शनीय स्थानों को देखने का कार्यक्रम बनाया। १४ जून को विदा होने से एक दिन पहले उन्होंने अपने एक विदाई भाषण मे कहा, "मैं आपको और खूबसूरत जार्जिया के सभी नागरिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे अपनी यह यात्रा सदा याद रहेगी।"

संयोग से नेहरू की इस यात्रा के दौरान हमें उनके बारे मे एक नयी जानकारी मिली। स्वेरदवलोवस्क मे नेहरू ने एक भू-गर्भ संग्रहालय का अवलोकन किया। बाद में उन्होंने दर्शकों की पुस्तिका में लिखा "यह एक अच्छा संग्रहालय है। यह वैसे तो सभी लोगों के लिए दिलचस्प है, लेकिन जिन्होंने भू-गर्भ विज्ञान पढा है, उनके लिए तो विशेष रूप से आकर्षक है, क्योंकि मैंने विद्यार्थी जीवन मे भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा था, इसलिए इस संग्रहालय को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। संग्रहालय मे विभिन्न प्रकार की कच्ची धातुओं का जो संग्रह किया गया है, उसका विस्तृत अध्ययन करके मुझे और भी खुशी होगी।"

उस समय नेहरू के जीवन के बारे मे बहुत अधिक नही जानता था। यह जून १९५५ की बात है और भारत की कहानी उसके बाद सोवियत संघ में प्रकाशित हुई। लेकिन नेहरू के बारे मे मेरी अपनी खोज तो उसी समय शुरू हो गई।

लोगों से अपनी बात कह सके।"[1]

महात्मा गांधी ने ये शब्द संघर्षरत भारत के कलाकारों तथा साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहे थे। नेहरू ने तमाम देशों के सृजनात्मक रचनाकारों से अनुरोध किया कि ऐसे समय हमें बहुत सतर्क रहने की जरूरत है, जब कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपना प्रभाव बढ़ाने में लगी हैं। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शान्ति, प्रगति तथा मानवतावाद, स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपने प्रयास दुगुने कर देने चाहिए। जो देश कुछ समय पहले ही स्वतन्त्र हुए हैं, उन देशों के साहित्यकारों की जिम्मेदारियों पर नेहरू ने विशेष बल दिया। उन्होंने उन देशों की कठिनाइयों और समस्याओं, विशेष रूप से भाषा तथा साहित्य के विकास की समस्याओं की चर्चा भी की।

हम सोवियत लेखक के उस दायित्व को अच्छी तरह अनुभव करते हैं जो कि उसने हमारे देश को एक नये समाजवादी देश में बदलने और हमारे दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष में निभाया है। जवाहरलाल नेहरू सम्भवतः उस अनुभव के बारे में अच्छी तरह जानते थे, जो कि सोवियत साहित्य और कला ने प्राप्त किया था। उन्होंने सोवियत संघ की वास्तविकताओं का गहराई से अध्ययन किया था और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी उपलब्धियों से प्रभावित हुए थे।

१३ जून १९५५ एक गर्म दिन था। उस समय हम तबिलिसी हवाई अड्डे पर अपने भारतीय मेहमानों का इन्तजार कर रहे थे। मजाक में किसी ने कहा कि हमने उनके उपयुक्त मौसम बना लिया है। नेहरू अपनी बेटी इन्दिरा गांधी और दल के दूसरे सदस्यों के साथ तबिलिसी पहुँचे।

जब वायुयान के दरवाजे खोले गये तो एक लम्बा व्यक्ति अपने देश की राष्ट्रीय वेश-भूषा में और हाथ में चन्दन की छड़ी लिये हुए नजर आया। वह माइक्रोफोन के पास पहुँचा और स्वागत भाषण के उत्तर में उसने कहा: "आपके इस महान् देश में हमारा हर जगह भव्य स्वागत हुआ है। इन सभाओं में मुझे पता चला कि सोवियत जनता हमारे देश को कितना प्यार करती है। मुझे विश्वास है कि शान्ति हमेशा सब देशों की एक बड़ी आवश्यकता रही है, और आज तो यह और भी बड़ी आवश्यकता बन गई है।"[2]

उसी शाम मेहमानों को लोहे के रस्सों पर चलने वाली रेल का तबिलिसी की सबसे ऊँची चोटी पर बना प्लेटफार्म दिखाने का आयोजन किया गया।

१. डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३४२।
२. सोवियत लैंड, १९७३, संख्या १०।

इस प्लेटफार्म से पूरे शहर का दृश्य दिखाई देता है और रात मे जब कि शहर बिजली के कुमकुमो से चमचमा रहा होता है, तो यह दृश्य बहुत ही मनोरम बन जाता है। नेहरू और इन्दिरा गांधी बहुत उत्साहपूर्वक इस दृश्य की प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन नेहरू और इन्दिरा गांधी को रुस्तावी नामक नगर दिखाया गया। यह नगर तबिलिसी से २० किलोमीटर दूर है और पिछले महायुद्ध के बाद बसाया गया है। आज रुस्तावी सोवियत संघ मे इस्पात का सबसे बड़ा केन्द्र है। शहर का दौरा करने के बाद नेहरू ने कहा कि जल्दी ही भारत मे भी सोवियत सहायता से ऐसा ही एक कारखाना बनाया जायेगा। असल मे वह भिलाई कारखाने का जिक्र कर रहे थे। आज भिलाई का यह कारखाना पूरी दुनिया मे प्रसिद्ध है। संयोग से भिलाई इस्पात कारखाने मे जार्जिया के विशेषज्ञों ने भी काम किया है। १९७० में जबकि मैं दिल्ली मे था तो भिलाई मे काम करनेवाले जार्जिया के कुछ इंजीनियर वहाँ आये और जनपथ होटल मे मुझसे मिले। उन्होंने मुझे भारत मे बीत रहे अपने जीवन के बारे मे बहुत-सी दिलचस्प बातें बतायी और कहा, "लेकिन एक दिन हमें फिर तबिलिसी ही जाना है।"

नेहरू और उनके दल ने शहर के आसपास के दर्शनीय स्थानो को देखने का कार्यक्रम बनाया। १४ जून को विदा होने से एक दिन पहले उन्होंने अपने एक विदाई भाषण मे कहा, "मैं आपको और खूबसूरत जार्जिया के सभी नागरिको को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे अपनी यह यात्रा सदा याद रहेगी।"

संयोग से नेहरू की इस यात्रा के दौरान हमे उनके बारे मे एक नयी जानकारी मिली। स्वेरदवलोवस्क मे नेहरू ने एक भू-गर्भ सग्रहालय का अवलोकन किया। बाद मे उन्होने दर्शको की पुस्तिका मे लिखा "यह एक अच्छा सग्रहालय है। यह वैसे तो सभी लोगो के लिए दिलचस्प है, लेकिन जिन्होंने भू-गर्भ विज्ञान पढा है, उनके लिए तो विशेष रूप से आकर्षक है, क्योंकि मैंने विद्यार्थी जीवन में भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा था, इसलिए इस संग्रहालय को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। संग्रहालय मे विभिन्न प्रकार की कच्ची धातुओं का जो संग्रह किया गया है, उसका विस्तृत अध्ययन करके मुझे और भी खुशी होगी।"

उस समय नेहरू के जीवन के बारे में बहुत अधिक नही जानता था। यह जून १९५५ की बात है और भारत की कहानी उसके बाद सोवियत सघ मे प्रकाशित हुई। लेकिन नेहरू के बारे मे मेरी अपनी खोज तो उसी समय शुरू हो गई।

"'यह लिखते समय मुझे बार-बार एहसास हो रहा है कि नेहरू जैसे महान् व्यक्ति के नाम पर जो पुरस्कार दिया जाता है, उसे पानेवाले लेखक के ऊपर बहुत-सी जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। हम उस पृथ्वी पर रहते हैं, जो कि एक ऐसे बड़े घर की तरह है, जिसमें कि बहुत-से लोग एकसाथ रहते हैं। इस घर की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है। अगर हम सब जवाहरलाल नेहरू की तरह पूरी लगन से शान्ति की रक्षा के लिए प्रयत्न न करें, तो किसी भी समय इस घर पर विपत्ति आ सकती है। मुझे जो पुरस्कार मिला है, वह केवल मुझे ही नहीं, बल्कि सोवियत संघ के बुद्धिजीवियों ने भारत एवं सोवियत मैत्री के लिए और मनुष्य मात्र के भविष्य को और सुखी बनाने के लिए जो प्रयत्न किया है, उसके लिए भी दिया गया है। हम इस संघर्ष में अपने दायित्व के प्रति, मनुष्य मात्र के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में पूरी तरह सजग हैं।

वह आज भी मेरे गीतों में जिन्दा हैं

रसूल रजा
अजरबाईजान के कवि

मैं भारत दो बार गया हूँ। अपनी दूसरी यात्रा के दौरान मुझे जवाहरलाल नेहरू से मिलने का सौभाग्य मिला। यह १९६३ की बात है। उस समय मुझे सोवियत संसद् सदस्यों के एक दल के रूप में भारतीय संसद को देखने का मौका मिला। एक बैठक के बाद हमें बताया गया कि अगले दिन हमें भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास-स्थान पर मिलना है। हम वहाँ दोपहर ग्यारह बजे पहुँचे और हमें एक सादे ढंग से सजाये गये कमरे में बैठाया गया। फौजी वर्दी में एक अधेड़ व्यक्ति दरवाजे के पास खड़ा था। उसने हमसे बैठने के लिए कहा और अन्दर के कमरे में चला गया। लौटने पर उसने बताया कि नेहरू आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वह क्षण अभी भी मेरी स्मृति में ताजा है। नेहरू ने खुली मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया। उनकी आँखों में एक बहुत ही तीखी अभिव्यक्ति थी। लगभग आधा घण्टे तक हमारी बातचीत चलती रही। नेहरू ने सोवियत संघ के साहित्य और विज्ञान की प्रगति के बारे में विशेष रूप से और पूरे देश के

बारे में सामान्य रूप से बहुत से प्रश्न पूछे। वह जानना चाहते थे कि सोवियत संघ के विभिन्न प्रदेश वहाँ की संस्कृति की परम्पराओं को बनाये रखने के लिए क्या कुछ कर रहे है और विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं का विकास करने के लिए क्या किया जा रहा है। नेहरू ने मेरी कविताओं और कहानियों में बहुत दिलचस्पी ली, जो कि मैंने भारत के बारे मे लिखी थी। मैंने उन्हे रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियों का वह सकलन भेंट किया जो कि अजरबाईजान की भाषा मे प्रकाशित हुआ था और वहाँ बहुत लोकप्रिय था। उस भेंट को पाकर वह भी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि एक लम्बे समय से पूर्वी देशो के लोग सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सम्बन्ध बनाये हुए है। अब इन सम्बन्धों को आगे बढाने का समय आ गया है। उनका विश्वास था कि समय और राजनीतिक मतभेदों ने जो अवरोध इन देशों के बीच खड़े कर दिये हैं, उन्हे साहित्य और कविता के द्वारा काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

हमारी बातचीत के बाद नेहरू ने आश्वासन दिया कि हमारी भारत यात्रा को अधिक से अधिक सुखद और लाभप्रद बनाने के लिए वह हर सम्भव प्रयत्न करेंगे।

बहुत-से ऐसे लोग होते है, जिनसे कि हम वर्षों तक बराबर मिलते रहते हैं, लेकिन जब उनसे अलग होना पडता है, तो हमे कोई खास तकलीफ नहीं होती। इसके विपरीत कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिनसे कि हमे थोड़ी ही देर के लिए मिलने का मौका मिलता है, लेकिन उनसे विदा होते समय मन बहुत भारी होता है और उनकी याद जीवन-भर बनी रहती है। नेहरू एक ऐसे ही व्यक्ति थे। वह आज भी मेरी स्मृति मे जिन्दा है और जब तक मैं रहूँगा, जब तक इसी तरह बने रहेगे।

मेरे जीवन में भारत

राशिद वी० बुतोव
सोवियत संघ के जन कलाकार

कहा जाता है कि कुछ ही ऐसे लोग होते हैं, जो सपनों मे रंग देखते है। मैं चार बार भारत गया और इन चारो यात्राओं मे मैंने रंगीन सपने देखे। मेरी पहली भारत यात्रा १९५३ में हुई।

भारत मे जहाँ-जहाँ मेरे कार्यक्रम हुए, लोगों ने बहुत बडी संख्या मे उनमे भाग लिया। मैं विभिन्न शहरों और गाँवों मे गया और मंचो पर तथा खुली जगहो मे अपने गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बहुत बार तो रेलवे स्टेशनों पर जब कि लोग मेरा स्वागत करने आये, तो मुझे वहाँ गाने का अवसर मिला। मुझे मालूम था कि हालाँकि मेरे गाने रूसी या अजरबाईजान की भाषा मे है, फिर भी भारतीय मित्र उन्हे सुनना पसन्द करते थे। असल मे "सारे जहाँ से अच्छा" एकमात्र ऐसा गाना था, जिसे कि मैं हिन्दी में गाता था। रूसी और अजरबाईजान भाषा के गानो को भारत मे बहुत लोकप्रियता मिली।

भारत में हुई बहुत-सी बैठको की याद मुझे अभी तक है, लेकिन जवाहरलाल नेहरू के साथ हुई भेंट विशेष महत्त्व रखती है। मैं उनसे अपनी पहली दो यात्राओ के दौरान मिला। नेहरू ने अपने शानदार निवास-स्थान पर ही हमारा स्वागत किया। हमारे लिए एक गार्डन पार्टी का आयोजन किया गया था। उसके दौरान नेहरू ने मुझसे कहा—मुझे पता चला है कि आप भारतीय गानो को ठीक उसी तरह गाते है, जैसे कि हम। क्या आप गाने की कृपा करेंगे?

मैंने "सारे जहाँ से अच्छा" गाया। गाना समाप्त हुआ तो नेहरू ने कहा कि उन्होने हर शब्द गौर से सुना है। आश्चर्य है कि आपका उच्चारण बिल्कुल सही है। उन्होंने पूछा कि क्या आप काफी लम्बे समय तक हिन्दी पढ़ते रहे हैं?

इसके बाद नेहरू ने हमे शाम के खाने का निमन्त्रण दिया। नेहरू अपनी उँगलियों से खाना खा रहे थे। मैंने भी उनका अनुकरण किया। नेहरू हँस और बोले: आप लगभग वैसे ही खा रहे हैं जैसे कि हम खाते हैं। पार्टी काफी देर तक चलती रही और बहुत आनन्ददायक रही। विदा होते समय नेहरू ने पूछा कि अगर वह बुलायेंगे, तो क्या हम फिर भी आयेंगे। मैंने उत्तर

दिया कि भारत तो मेरी मातृभूमि बनता जा रहा है। नेहरू ने मुझे गले लगाया और कहा कि वह हमसे जल्दी ही फिर मिलेंगे।

अजरबाईजान लौटने पर मैंने कुछ और भारतीय गीत तैयार किये। कुछ साल बाद फिर भारत यात्रा पर जाना हुआ, तो मैं नेहरू से मिला। इस बार भी नेहरू हमें बगीचे मे ही मिले। उन्होंने एक पुराने मित्र की तरह हमारा स्वागत किया और पूछा कि क्या इस बार आप कुछ नये भारतीय गीत लाये हैं? सोवियत प्रतिनिधि मण्डल के दूसरे सदस्यो की तरफ मुडते हुए उन्होंने मजाक मे कहा, "आप मे से बहुत-से लोग पहली बार भारत आये हैं, लेकिन आपके बीच एक ऐसे सदस्य भी है, जिन्हें कि हम अपना प्रतिनिधि मानते हैं। यदि आपके सामने कोई कठिनाई हो, तो आप राशिद से कहें, वह उसे दूर कर देंगे।"

उसके बाद दो बार फिर मुझे भारत आने का मौका मिला। मेरी अन्तिम भारत यात्रा इन्दिरा गाधी के निमन्त्रण पर थी। इस बार मैं एक सोवियत गायन महोत्सव मे भाग लेने के लिए भारत आया था और सोवियत प्रतिनिधि मण्डल का कला-निदेशक था। श्रीमती गाधी बहुत उत्साह के साथ मुझसे मिलीं। वे मेरे बहुत-से गायन कार्यक्रमो मे सम्मिलित हो चुकी थी और उन्होने मेरे भारतीय तथा रूसी गानों को बहुत पसन्द किया था। १३ भारतीय नगरों मे मैंने अपने गायन के कार्यक्रम प्रस्तुत किये और उनमे भारतीय तथा रूसी दोनों ही प्रकार के गाने गाये। आखिरी कार्यक्रम समाप्त होने पर इन्दिरा गाधी मंच पर आयी और उन्होंने मुझे एक फूलो की माला भेंट की।

वह मेरे पिता के समान थे

एलीमीरा रागीमोवा
अजरबाईजान के प्रसिद्ध कलाकार

भारत के बारे में मेरी दिलचस्पी उसके गीतों से बढी। २१ जनवरी, १९५५ को मास्को मे भारत के सम्बन्ध मे होने वाले एक उत्सव में मुझे आमन्त्रित किया गया था। वहां मैंने भारतीय फिल्मो (आवारा, बैजू बावरा) से बहुत से गाने गाये। श्रोताओ मे भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन

भी थे। कार्यक्रम के बाद श्री मेनन ने मुझे उस आनन्द के लिए धन्यवाद दिया, जो कि कार्यक्रम मे उन्हे प्राप्त हुआ था। साथ ही उन्होंने कहा कि वे इस बार दिल्ली जायेंगे, तो प्रधानमन्त्री नेहरू से मेरी चर्चा करेंगे।

मेरी पहली भारत यात्रा से काफी पहले अजरबाईजान के श्रोता भारतीय फिल्मों के गानों के मेरे कार्यक्रम सुनते रहे थे और उन्हें पसन्द करते रहे थे। यह गाने मैंने भारतीय फिल्म देखकर याद कर लिये थे और उन्हें जनता को सुनाना शुरू कर दिया था।

सितम्बर १९५७ में मुझे स्वयं जवाहरलाल नेहरू का एक तार मिला। उन्होंने मुझे भारत आने का निमन्त्रण दिया था। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। कुछ दिन बाद मैंने अपने मित्रों से विदा ली और भारत के लिए रवाना हो गया। कभी-कभी मुझे अटपटा लगता है कि लोग क्यूँ समारोह के बारे में जो कि भारत में मेरे स्वागत में आयोजित किये गये, बेपनाह सवाल पूछने लगते हैं। मुझे वह अवसर बहुत अच्छी तरह याद है, जबकि मुझे पहली बार प्रधानमंत्री नेहरू से मिलाया गया। यह रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय की घटना है। वहाँ मुझे कला विभाग में प्रथम वर्ष की छात्रा के रूप मे दाखिल किया गया था। मेरे सहपाठी मित्रों ने आग्रह किया कि जब मैं नेहरू से मिलूँ तो मुझे साड़ी पहननी चाहिए। कुछ समय बाद हम कई छात्राएँ प्रधानमंत्री से मिलने के लिए एक कमरे में गईं। वे हमसे उत्साहपूर्वक मिले और थोडी ही देर बाद उन्होने पूछा, "सोवियत संघ से आयी हुई लड़की कहाँ है ?" मैं नेहरूजी के ठीक सामने खडी हुई थी और महसूस कर रही थी कि दूसरी भारतीय लडकियों के बीच वे मुझे अलग से नही पहचान पा रहे हैं। जब उनसे मेरा परिचय कराया गया तो उन्होने मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे परिचय कराने वाले पर विश्वास न कर रहे हों। अपने दल के दूसरे सदस्यों की तरफ मुडते हुए नेहरू ने कहा, "मैं इस लडकी को कल सुबह चाय पर बुला रहा हूँ। उस समय मैं इसे इसकी अपनी राष्ट्रीय वेशभूषा में देखना पसन्द करूँगा।"

अगले दिन सुबह मैंने अपनी अजरबाईजान की राष्ट्रीय वेशभूषा पहनी और जब मै नेहरूजी के कमरे पर स्वागत के लिए पहुँची, तो मैंने देखा कि शान्ति निकेतन के सभी विदेशी छात्र वहाँ मौजूद थे। मेरा स्वागत करते हुए उन्होंने कहा, "अब तुम सचमुच रूसी बन गई हो।" उस सारे आयोजन मे मैं नेहरू के पास बैठी रही। एक मौके पर उन्होने मुझे अजरबाईजान का राष्ट्रीय गीत गाने के लिए कहा। मैं नेहरू की सादगी से बहुत प्रभावित हुई।

वह बहुत मजाक करते थे और ऐसी हँसी हँसते थे जो कि दूसरों को भी हँसा देती थी। उन्होंने कहा कि तुम आश्चर्यजनक रूप से भारतीय लडकी हो। लगता है यह ईश्वर की गलती से हुआ है कि तुम्हें अजरबाईजान में पैदा कर दिया।

मैंने कुछ अजरबाईजान के गाने गाये, इस पर नेहरू ने आग्रह किया कि अगर मैं गा सकूं, तो भारतीय गाना भी गाऊँ। इस पर मैंने भारतीय फिल्मों के भी गाने गाये, जो कि रूस मे रहते हुए सीखे थे। नेहरू ने मुझसे पूछा कि क्या तुम इन गानों का मतलब भी समझती हो ? मैंने हां की, तो उन्होंने एक-एक लाइन की व्याख्या मुझसे करवाई।

इस बैठक के दौरान नेहरू बराबर छात्रों से घिरे बैठे रहे। उस स्मरणीय बैठक के बाद छात्रों ने मुझे भारतीय कवयित्री मीरा के अनुकरण पर 'मीरा दी' कहकर पुकारा। मीरा की कविताओं पर आधारित भारत के राष्ट्रीय गीत गाने के लिए बहुत मुश्किल माने जाते हैं। अगली बार नेहरू स्नातक छात्रों के दीक्षांत समारोह मे शान्तिनिकेतन आये, तो मैंने उन्हे मीरा का एक भजन भी सुनाया।

भारत में अपने प्रवास के दौरान मैंने और भी बहुत से भारतीय गीत सीखे। एक साल पूरा होने के बाद मुझे दूसरे साल भी भारत मे रहने के लिए निमन्त्रित किया गया। मैंने प्रसन्नतापूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और दूसरे साल भारत में रहकर वहाँ के राष्ट्रीय नृत्यो का अभ्यास किया।

भारत मे रहते हुए मैं दो बार नेहरू से मिली। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि शासकीय काम मे व्यस्त रहने के बावजूद नेहरू कभी-कभी विश्व-विद्यालय में मेरी प्रगति के बारे मे पूछते रहे है।

शान्तिनिकेतन विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मैं तीन बार फिर भारत गई हूँ। अब नेहरू जीवित नही थे। जब मै पहली बार नेहरू से मिली थी, तो उस घटना को कई वर्ष बीत चुके थे, लेकिन उसकी याद अभी तक मेरे मन मे ताजा है। मैं उस अद्भुत व्यक्ति को हमेशा याद रखूंगी, जिसने कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए इतना कुछ किया। सच तो यह है कि वे मेरे लिए पिता के समान थे।

नये भारत के निर्माता—नेहरू

रोमन कारमेन
फिल्म निदेशक, लेनिन पुरस्कार के विजेता

१९५५ का वह दिन मुझे अभी तक याद है, जबकि जवाहरलाल नेहरू मेगनितनाया पर्वत के ऊपर एक प्लेटफार्म पर खडे हुए थे। यह प्लेटफार्म मेगनीत-गोसर्क नगर की एक ऊँची पहाडी पर बनाया गया है, जिससे कि वहाँ खड़े होकर नगर और आसपास के इलाके को अच्छी तरह देखा जा सके। वहाँ खडे हुए नेहरू ने एक रूसी अधिकारी से कहा : यह दृश्य कितना शानदार है और खास तौर से नीचे फैले हुए यह विशाल कारखाने। उन्होने आगे कहा, हमे ऐसे बहुत से कारखाने लगाने होगे। यह बहुत आवश्यक है, क्योकि अब भारत ने आर्थिक विकास की ओर तेजी से कदम बढा दिये हैं।

यह सम्भव है कि उस समय नेहरू अवश्य भिलाई के इस्पात कारखाने के बारे मे सोच रहे होगे। क्योकि कुछ ही वर्ष बाद इस विशाल कारखाने का निर्माण कार्यक्रम आरम्भ हो गया। नेहरू से मेरी दूसरी भेंट कुछ साल बाद हुई; जबकि एक सोवियत प्रतिनिधि मण्डल के साथ मैं एक फिल्म के कार्यकर्ता के रूप मे वहाँ गया। उस अवसर पर नेहरू ने कई भाषण दिये, जो कि विशेष रूप से इन दो महान् देशो के आपसी मैत्री के सम्बन्ध मे थे। उनके भाषणो से पता चलता था कि उन्हे सोवियत तथा भारत मैत्री से कितना प्रेम है और पुराने समय से उनके जो सम्बन्ध रहे है, नेहरू उन्हे किस सीमा तक आगे ले जाना चाहते थे।

हमारा फिल्मी दस्ता भारत के सम्बन्ध में एक डाकूमेन्टरी फिल्म 'भारत का उदय' बनाना चाहता था। नेहरू ने हमे आमन्त्रित किया। उन्होने फिल्म का पूरा कथानक हमसे सुना और उस पर अपनी राय प्रकट की। धीरे-धीरे फिल्म से बात आपसी मैत्री-सम्बन्धों पर आ गयी। नेहरू ने हमे अपने देश के लोगो के बार मे, उसके भूतकाल के बारे मे, वर्तमान स्थितियो के बारे में और भविष्य के बारे मे बहुत-सी बातें बताईं। मै उस महापुरुष की बातें बडे गौर से सुन रहा था और मेरे मस्तिष्क की आँख बराबर उस फलक पर लगी हुई थी, जिस पर नेहरू का जीवन-संघर्ष चित्रित था। उन्होने कैसे भारत को उपनिवेश-वाद के पंजे से मुक्त किया और कैसे वे एक महान् विचारक और मानवतावादी के रूप मे स्थापित हुए।

उस भेंट क बाद मुझे नेहरू से फिर कई बार मिलने का सौभाग्य मिला। मैंने उनके अध्ययन-कक्ष मे पुस्तकों, तस्वीरो और फोटोग्राफ से घिरे नेहरू की फिल्म खीची। उनका घर हमेशा खेलते हुए, मुस्कराते-चहचहाते बच्चों से घिरा रहता था। बच्चो के प्रति नेहरू का प्रेम उनके दो नातियों के प्रति गहर आकर्षण में भी देखा जा सकता है।

वहुत बार मैंने नेहरू की ऐसी फिल्में भी खीची, जिनमें कि वे उन बच्चो मे घिरे हुए है, जो कि उन्हें बेहद प्यार करते हैं।

भारत के महान् नागरिक

निकोलाई पैंस्तुरो
पत्रकार

जवाहरलाल नेहरू ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष को और वहां के लोगो के जीवन को बेहतर बनाने के लिए समर्पित कर दिया। नेहरू एक असाधारण राजनीतिज्ञ, कट्टर देशभक्त और विश्व शान्ति के योद्धा थे। वह एक प्रभावशाली वक्ता और प्रतिभाशाली पत्रकार थे और साथ ही अपने देश के इतिहास और संस्कृति के बारे में अमित ज्ञान रखने वाले विद्वान् भी। वह बहुत उदार हृदय, ईमानदार और सचमुच महान् थे।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और रूस की अक्तूबर क्रांति ने दुनिया में जो कुछ किया, नेहरू ने उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की और उन्होंने ससार मे पहले समाजवादी देश सोवियत संघ के मानवीय तथा रचनात्मक सिद्धान्तों को बहुत सराहा।

भारत का राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण नेहरू के जीवन तथा कार्यों मे अविभाज्य रूप से जुड़ा है। भारत मे प्रावदा के विशेष संवाददाता के कार्यकाल में मुझे अनेक बार नेहरू से मिलने के अवसर मिले। मैंने संसद् मे, जलसो मे तथा औपचारिक समारोहों में बहुत बार उनके भाषण सुने और उनके पत्रकार सम्मेलनो में भाग लिया। भारत के उनके दौरों के अवसरों पर और सोवियत सघ की यात्राओं मे भी मैं उनके साथ रहा। बहुत बार मुझे उनसे बातचीत करने का सौभाग्य भी मिला।

नेहरू की अतिरिक्त सजगता, निर्दोष वेशभूषा, उनके फुरतीलेपन—कुल

मिलाकर उनके जादूभरे व्यक्तित्व ने मुझे बहुत प्रभावित किया। बहुत से मौकों पर वह अपने नोट्स को एक तरफ रख देते और सीधे-सीधे जो बात मन में आती, उसे ही श्रोताओं के सामने प्रस्तुत कर देते। उनमें पर्याप्त मात्रा में शिष्ट तथा मधुर हास्य था लेकिन यदि मौका मजबूर करता तो तीखे व्यंग्य-प्रहार करने से भी वह न चूकते। जब उनके विरोधी उन्हें किसी व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझाना चाहते तो वह कोई सीधा किन्तु अकाट्य तर्क उपस्थित करके उनका मुँह बंद कर देते। पत्रकार सम्मेलनों में पश्चिमी देशों के, पीछे पड़ जाने वाले, संवाददाता एक के बाद एक प्रश्न पूछकर उन पर आक्रमण करते तो कभी-कभी वह आवेश में आ जाते और उन संवाददाताओं को हतोत्साह कर देने के लिए अपने तर्कों को ऐसे दबंग तरीके से पेश करते कि संवाददाताओं का उत्साह धीमा पड जाता।

इसके विपरीत, समाजवादी देशों के पत्रकारों के साथ वह बहुत आदरतथा विनय का व्यवहार करते। वह हमारी बात बहुत गौर से सुनते और प्रश्नों के विस्तृत उत्तर देते। कभी वह किसी प्रश्न को हल्के से मजाक से खारिज कर देते लेकिन इस बारे में हमेशा सावधान रहते कि मजाक मजाक ही रहे।

नेहरू को उनके पूरे जीवन-काल में भारतीय लोगों का अपार स्नेह प्राप्त रहा। सोवियत संघ की जनता ने भी उन्हें बहुत मान दिया। आज हम भारत के उस महान् सपूत को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हम उन भारत-वासियों की भी बहुत सराहना करते है जो कि नेहरू द्वारा प्रज्वलित भारत-वासियों के कल्याण तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की ज्वाला को थामे आगे बढ़ रहे है।

नेहरू

अलिम केशोकोव
सोवियत कबारदा कवि

सपने देखने की आजादी ?
लेकिन एक गरीब
जिसकी छीन ली गयी है रोटी
और छीन लिया गया है मकान
सो सकता है ?
मुझे शक है—
शक है कि जब विदेशी सिपाहियों के बूटों की
जंगी गड़गड़ाहट के बीच
भूखे बच्चों की चीखों की आवाज
डूब जाती है तो कौन है
जो सो सकता है !

सपने देखने की आजादी ?
लेकिन कोई सो सकता है
ऐसे देश में
जो लिपटा हो वाद-विवाद की लपटों में
और जहां

सीमाएँ नही, टीसते हुए जख्म
आदमी और आदमी
और भाषा और भाषा के बीच
लकीरें खीचते हो !
नेहरू ! इस अँधेरे पहर मे
स्वाधीनता की तुम्हारी पुकार
सपने मे नही, सचाई मे
चीरती चली गयी
पूरे देश ने गुलामी की मट्टी से बाहर झाँककर
साँस ली,
स्वतन्त्रता सेनानियों के दिल
विश्वास और उत्साह से भर गये ।

तुम्हे बंद कर दिया गया था
सीखचो मे लेकिन तुम्हारी आवाज
पूरे देश मे गूँजती रही
लोगो ने बन्दूकें उठा ली
और शरीक हो गये उस दस्ते मे
जो तुम्हारे झंडे के नीचे खडा
स्वतन्त्रता संग्राम में तुम्हारे
पीछे चलने की प्रतीक्षा कर रहा था ।
आखिर युद्ध का समय आया
लोगों ने अपनी बन्दूकें भर ली
बारूद से ? नही, विदेशियो के
प्रति तीखी घृणा से
'प्रतिकार की अजेय तलवार
खिच गयी
तुमने युद्ध का आह्वान किया'
और तुम्हारे नेतृत्व में
जनता की विजय हुई ।

सूरज और चाँद

सैमुअल मारशक
सोवियत कवि

नीले निरभ्र आकाश के नीचे
कांपती हुई लहरें दौड़ रही हैं
एक चमचमाता स्टीमर घर की तरफ लौट रहा है
पूरा दृश्य सूरज की सफेद धूप से नहाया है

दूर भारत से आने वाला यह स्टीमर
लाया है—मित्रता की एक मधुर भेंट
इसमे एक अनोखा सामान है
दो अद्भुत जीव

जैसे ही स्टीमर ओदेसा मे पहुँचा
हजारो लोग स्वागत मे उमड़ पड़े
लोग जो फूलों की मालाएँ लिये बैठे थे
उनमे सबसे आगे है बच्चे

दूर से और नजदीक मे
आते ही रहते हैं ओदेसा मे जहाज

लेकिन कह सकता है कोई
इन जहाजों मे आये हो कभी
सूरज और चाँद ?

ये दो आने वाले अद्भुत जीव
आ रहे हैं शायद सीधे आकाश से
नहीं, ये तो हैं सिर्फ नाम उन बच्चों के
हाथी के बच्चो के, जो आ रहे है साथ-साथ

ये भारतीय मेहमान खडे हैं चुपचाप
हाथियो को पसंद नही है शोर और आवाज
भारत की ओर से नेहरू ने भेजा है उन्हें
सोवियत लडकियों और लडकों के लिए

भारत से वे लाये हैं एक पत्र
भारत जो कि हमसे है इतनी दूर
सीधी भाषा मे यह पत्र एक ऐलान है
ऐलान कि शांति के प्रहरी हैं वे

सूरज और चांद स्टीमर से उतरते हैं
और चल देते हैं सीधे बाहर की तरफ
सधे कदमो से वे धीरे-धीरे चलते हैं
सूंड उनकी लटक रही है नीचे

अपनी यात्रा मे उन्होने आधी दुनिया देखी है
वे कितने शात हैं और कितने शानदार
अब वे हमारे सोवियत देश मे धीरे-धीरे
बड़े हो जायेंगे ठीक मकानो की तरह
दूर देश से आने वाले इन मेहमानों का
हार्दिक स्वागत किया है हमने
दोनो देशों की मित्रता निरंतर बढती रहे
जैसे कि हाथी के ये दोनों बच्चे ।

सोवियतलैंड, सं० २०, १९५५

नेहरू की भस्म

मिर्दजा कैम्पे
सोवियत लिथुम्रानिया कवयित्री

मै कभी साक्षात शरीर थी और अब
केवल भस्म हूँ
सुनो, भस्म क्या कहती है।
मुझे उठाओ, आकाश तक उठाओ
मैं पंखों वाली भस्म हूँ और
उड़ना चाहती हूँ !

मुझे नीले आकाश तक उठाओ और वहां से
बिखेर दो पूरे भारत की छाती पर
उसे पूरे को ढक दो
जैसे एक आंचल से
और तब मै धीरे-धीरे फुसफुसा कर कहूँगी :
—मां, क्या तुम मेरे स्पर्श को महसूस कर रही हो ?
जीवन हो या मृत्यु
मै ज्वाला रहूँ या बन जाऊँ भस्म
मैंने अपने को पूरी तरह
तुम्हें समर्पित कर दिया है

मुझे छाती से लगाकर
भारत माता कहती है—
बिना शब्दों के चुपचाप :
जवाहरलाल, मेरे प्रिय पुत्र, मैं तुझे आराम से
नहीं बैठने दूंगी और न ही जाने दूंगी
मृत्यु के मुंह मे
तुम्हारी भस्म ललक रही है
लाल गुलाब की कलियों के लिए

तुम्हारे जीवन का कमल
सदा-सदा मुझमे खिला रहेगा ।

मैं कभी समुद्र की हरी लहर की तरह
था अजेय
और अब बन गया हूँ—
शांत मटमैली भस्म
सुनो, भस्म क्या कहती है :
—मुझमे से एक मुट्ठी भर उठाओ और उसे बहा दो
इलाहाबाद मे गंगा के किनारे से
वहाँ से मैं पहुँच जाऊँगी
अनन्तता की गंगा मे
वह मुझे बहाकर ले जाएगी धीरे-धीरे
और फैला देगी दुनिया भर के
समुद्रो मे

मैं मनुष्य के विचारों को
और वे मुझसे पूछेंगे :
—शांति के मित्र,
तुम चुप क्यों हो ?
सब इकट्ठे हो जाओ और एक-दूसरे के गले लगो
ऐसी भस्म को सिर पर लगाओ
लहर पुकार कर उत्तर देगी
और एक दूसरी लहर का आलिंगन करके
स्वयं उसमें विलीन हो जाएगी
और फिर वह लहर इस अशांत संसार मे
आगे बढ़ती रहेगी
बढ़ती रहेगी हर जगह प्रेम और शांति पुकारते हुए
प्रेम और शांति ।

—सोवियतलैंड, सं० १०, १९६५

जवाहरलाल नेहरू के बाकू आने पर

तौफीक बैराम

सोवियत अजरबैजानियायी कवि

तुमने उसे कहाँ देखा ?
संसार के इस पवित्र नगर में।
तुमने उसे सबसे पहले कहाँ सुना ?
वहाँ, जहाँ कि मेरी जन्मभूमि है।
तो फिर उससे मिले कैसे ?
मैंने उसे फूलों से लाद दिया…
और तब हर सड़क पर और
हर गली में, मैंने बिखेर दी
मुस्कानें और करतल ध्वनि।
मुझे बताओ कि उसका आलिंगन कैसे किया जाय ?
आलिंगन—यावेकों की विशाल भुजाओं में।
उस पृथ्वीपुत्र का स्वागत कैसे किया ?
वीर केरेग्लुओं के आत्मसम्मान के साथ।
तुमने उसके साथ कैसा व्यवहार किया ?
अपने मन की पूरी उष्णता से।
मैंने कामना की—
यह मित्रता और यह आत्मविश्वास
ठीक कपाज की तरह
दृढ़ और चिरायु हो !

मुझे याद है—खूब याद है—
जनता का वह उमड़ता हुआ समुद्र
हमारे सबसे प्रिय मेहमान को
दिया गया पर्वत शिखर जैसा सम्मान।
वह उस राष्ट्र का मस्तिष्क और प्राण था
जो कि अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ा।

उसके भूरे बाल
गंगा की चाँदी जैसी लहरों के समान थे।
तुमने देखा—उसकी आँखें
कैसी चमकीली थीं!
उसका उदार सहयोग
सभी के लिए सुलभ था।

मैंने उसे देखा और फिर
देखा स्वयं अपने को—
उस प्राचीन तथा एकान्त जगह मे।
मैंने देखा—दिल्ली और कलकत्ता
खुली भुजाओं से मेरा स्वागत।
मैंने उसकी तरफ देखा और
मुझे याद आया—भारत
उसकी धरती और आकाश
और फिर याद आया—
स्वतन्त्रता के प्रकाश का उद्गाता
प्रोमेथियुस।
बाकू के तमाम निवासियों ने हर्ष ध्वनि की
उन हाथों के स्वागत में
जिन्होंने तोड़ दी अंग्रेजी दासता की जंजीरें।
सब उसे स्वतन्त्रता सेनानी कहते हैं
लेकिन जवाहरलाल नेहरू तो
पूरी दुनिया के लोगों का जवाहर और लाल था।

मैं उसकी यात्रा को कभी नहीं भूलूँगा।
वह दृश्य मुझे हमेशा याद रहेगा—
मैं आगे बढ़ा और भीड़ में शामिल हो गया
"हो सकता है—वह मुझे देखें।"
मैं हाथ में फूलों का एक गुच्छा लिये हुए
भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा
लेकिन मेरा हाथ उसके हाथ तक नहीं पहुँचा

भ्रौर तब मुझे उसकी मधुर ग्रावाज सुनायी दी।
हो सकता है—उसने मुझे सम्बोधित किया हो,
हो सकता है—उसने मुझे बधाई दी हो
लेकिन लोगो ने बताया
उसने तो मेरे पूरे देश को पुकारा था।
जैसे ही उसने भ्रपना हाथ हवा में लहराया
मेरे देश के लोगो मे खुशी की लहर दौड़ गयी।
लगा जैसे कि पूरा भ्रजरबाईजान
पूरे हिन्दुस्तान के गले लग रहा है।
उसकी भ्राँखो मे करोड़ों हिन्दुस्तानियों की
भ्राँखों की चमक भ्रा गयी
भ्रौर उसके होठो पर
करोड़ों होंठों की मुस्कान खेल गयी।

वह दो दिन तक हमारा मेहमान रहा
भ्रौर इस बीच पूरा देश
उसके स्वागत मे जागता रहा।
मैंने पूरी रात भ्रपने दरवाजे खुले रखे
कही ऐसा न हो कि रात में वह भ्रा जाये।
नेरे यहाँ नही तो वह पडोसी के यहाँ भ्रा जाये
इसलिए मैं सारी रात जागता रहा
लेकिन व्यर्थ, वह नही भ्राया
भ्राश्चर्य! तब मुझे एक सपना दिखायी दिया—
भविष्य में मैं मेहमान बन कर उसके यहाँ गया हूँ।
मैं बच्चा था भ्रौर उस समय ये सपने
कितने भ्रच्छे भ्रौर कितने लुभावने लगते थे!
भ्रौर तब मैंने कामना की—
प्यारे जवाहरलाल स्थायी मेहमान बनकर रहे
मेरे देश के लोगो के दिलों मे!

—सोवियतलैंड, संख्या २१, १९७२

उसके भूरे बाल
गंगा की चाँदी जैसी लहरों के समान थे।
तुमने देखा—उसकी आँखें
कैसी चमकीली थीं !
उसका उदार सहयोग
सभी के लिए सुलभ था।

मैंने उसे देखा और फिर
देखा स्वयं अपने को—
उस प्राचीन तथा एकान्त जगह में।
मैंने देखा—दिल्ली और कलकत्ता
खुली भुजाओं से मेरा स्वागत।
मैंने उसकी तरफ देखा और
मुझे याद आया—भारत
उसकी धरती और आकाश
और फिर याद आया—
स्वतन्त्रता के प्रकाश का उद्‌गाता
प्रोमेथियुस।
बाकू के तमाम निवासियों ने हर्ष ध्वनि की
उन हाथों के स्वागत में
जिन्होंने तोड दी अंग्रेजी दासता की जंजीरें।
सब उसे स्वतन्त्रता सेनानी कहते हैं
लेकिन जवाहरलाल नेहरू तो
पूरी दुनिया के लोगों का जवाहर और लाल था।

मैं उसकी यात्रा को कभी नहीं भूलूंगा।
वह दृश्य मुझे हमेशा याद रहेगा—
मैं आगे बढा और भीड में शामिल हो गया
"हो सकता है—वह मुझे देखें।"
मैं हाथ में फूलों का एक गुच्छा लिये हुए
भीड को चीरता हुआ आगे बढा
लेकिन मेरा हाथ उसके हाथ तक नहीं पहुंचा

ग्रौर तब मुझे उसकी मधुर ग्रावाज सुनायी दी।
हो सकता है—उसने मुझे सम्बोधित किया हो,
हो सकता है—उसने मुझे बधाई दी हो
लेकिन लोगों ने बताया
उसने तो मेरे पूरे देश को पुकारा था।
जैसे ही उसने ग्रपना हाथ हवा में लहराया
मेरे देश के लोगों मे खुशी की लहर दौड़ गयी।
लगा जैसे कि पूरा ग्रजरबाईजान
पूरे हिन्दुस्तान के गले लग रहा है।
उसकी ग्रांखों मे करोड़ों हिन्दुस्तानियों की
ग्रांखों की चमक ग्रा गयी
ग्रौर उसके होंठों पर
करोड़ों होंठों की मुस्कान खेल गयी।

वह दो दिन तक हमारा मेहमान रहा
ग्रौर इस बीच पूरा देश
उसके स्वागत मे जागता रहा।
मैंने पूरी रात ग्रपने दरवाजे खुले रखे
कही ऐसा न हो कि रात में वह ग्रा जाये।
मेरे यहां नही तो वह पड़ोसी के यहां ग्रा जाये
इसलिए मैं सारी रात जागता रहा
लेकिन व्यर्थ, वह नही ग्राया
ग्राश्चर्य ! तब मुझे एक सपना दिखायी दिया—
भविष्य में मैं मेहमान बन कर उसके यहां गया हूँ।
मैं बच्चा था ग्रौर उस समय ये सपने
कितने ग्रच्छे ग्रौर कितने लुभावने लगते थे !
ग्रौर तब मैंने कामना की—
प्यारे जवाहरलाल स्थायी मेहमान बनकर रहें
मेरे देश के लोगों के दिलों मे !

—सोवियतलैंड, संख्या २१, १९७२

नेहरू और 'सोवियतलैंड' पत्रिका

"भारत गणतंत्र की चौदहवी वर्षगाँठ पर मैं सोवियतलैंड को अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ। इन चौदह वर्षों मे हमे बहुत-सी सफलताएँ मिली है तो कुछ असफलताएँ भी। हम असफलताओं से हतोत्साह नही हुए हैं। वे भविष्य के प्रयत्नो के लिए प्रेरक बनती हैं। हमे विश्वास है कि ये प्रयत्न सफल होंगे और जो काम हमारे सामने है, उसमे हमें सफलता मिलेगी। यह काम है आधुनिक विज्ञान और तकनीक पर आधारित खेती तथा उद्योग का विकास करना अर्थात् एक नये भारत का निर्माण करना और अपने देश के लोगो के जीवन-स्तर को ऊपर उठाना। हम समाजवादी व्यवस्था की ओर आगे बढ़ना चाहते है।

"इस महान् काम मे हमे दूसरे देशो के मित्रो से और विशेष रूप से सोवियत सघ से बहुत सहायता मिली है। सोवियत संघ से हमारे बहुत ही घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध हैं और आशा है कि ये सम्बन्ध न केवल बने रहेंगे बल्कि निकटतर होते जायेंगे।"[1]

भारत मे सोवियत दूतावास द्वारा प्रकाशित 'सोवियतलैंड' अंग्रेजी पत्रिका को नेहरू की तरफ से भेजा गया यह अंतिम बधाई-संदेश है। इस पत्रिका का प्रकाशन भारत के राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद नवम्बर १९४७ मे किया गया था। तब से यह पत्रिका निरंतर भारत तथा सोवियत संघ के मैत्री सम्बन्धों के आरम्भ से लेकर सुदृढ होने तक की उनकी

१. 'सोवियतलैंड', १९६४, स० २

प्रगति को और विभिन्न क्षेत्रों में दोनो देशों के बीच होने वाले आपसी सहयोग को प्रस्तुत करती रही है। भारतीय पाठकों के सामने सोवियत जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करने के लिए इस पत्रिका ने एक झरोखे का काम किया है और साथ ही साथ दोनो महान् देशों के बीच निरन्तर बढ़ रहे सम्बन्धों के प्रत्येक पक्ष को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है। इस क्षेत्र मे स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री द्वारा किये गये प्रयत्नो को 'सोवियतलैंड' ने प्रमुखता देकर प्रकाशित किया है।

पत्रिका ने नेहरू के सम्बन्ध में बहुत से लेख प्रकाशित किये है। भारत को औद्योगिक दृष्टि से एक आत्मनिर्भर देश बनाने की नेहरू की नीति और उनकी गुटनिरपेक्षता तथा शातिपूर्ण सहअस्तित्व और साथ ही विश्वशांति तथा निःशस्त्रीकरण के क्षेत्रों में किये गये उनके अथक प्रयत्नो पर सोवियत सघ के अग्रणी पत्रकारों तथा वरिष्ठ राजनैतिक विश्लेषकों के लेख प्रकाशित किये गये है।

नेहरू समय-समय पर पत्रिका के अनुरोध पर पाठकों के लिए बधाई-संदेश देते रहे है और भारत-सोवियत मैत्री सम्बन्धों के बारे में भारत सरकार के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए इंटरव्यू देते रहे हैं।

यही कारण था कि नेहरू की मृत्यु का समाचार पाकर पत्रिका के सभी कर्मचारी शोक मे डूब गये। पत्रिका की १९६४ की ११वी संख्या के एक विशेष परिशिष्ट में जो शोक-सूचना प्रकाशित की गयी उसमे लिखा था, "श्री जवाहरलाल नेहरू के दुखद देहावसान से हम सबको गहरा धक्का लगा है। उनकी मृत्यु भारत के लिए और फिर पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी हानि है। नेहरू के रूप में भारत ने एक महान् सपूत और प्रिय नेता खो दिया है। सोवियत संघ ने अपना एक अच्छा दोस्त खो दिया है और बाकी दुनिया ने एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिज्ञ खो दिया है।"

भारत के महान् सपूत और सोवियत संघ के परम मित्र जवाहरलाल नेहरू की स्मृति को अक्षय बनाने के लिए 'सोवियतलैंड' ने १९६४ में "सोवियत-भारत मैत्री की दृढ़ता के लिए" एक कोष स्थापित किया। इस कोष से प्रति वर्ष सोवियत-भारत मैत्री तथा विश्व-शाति को समर्पित,-सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं तथा पत्रकारिता पर जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। नेहरू पुरस्कार रूसी तथा सोवियत सघ की अन्य भाषाओं की क्लासकीय साहित्यिक रचनाओं के भारतीय भाषाओं में श्रेष्ठ अनुवादों पर भी दिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त नेहरू पुरस्कार जन-नेताओ, कला के क्षेत्र के प्रमुख

बहुमुखी प्रतिमा के एक पक्ष को अच्छी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है··· जवाहरलाल नेहरू के कवि, देश-भक्त तथा राजनीतिज्ञ विभिन्न पक्षों को एक-जुट करने वाले सूत्र को और पूरी दुनिया में शांति कायम करने तथा मनुष्य-मनुष्य और देश-देश को एक-दूसरे के निकट लाने के लिए भारत और सोवियत संघ की आपसी मैत्री के सूत्र को सोवियतलैंड ने बहुत सम्मानपूर्ण और शानदार स्वीकृति दी है।"[1]

उस अवसर पर इंदिरा गांधी ने अपने भाषण मे दूसरी बहुत-सी बातो के साथ यह भी कहा, "वह (जवाहरलाल नेहरू—सं०) कई कारणो से सोवियत संघ की बहुत प्रशंसा करते थे। मूलत: तो इसलिए कि देश की जनता को एक नया जीवन देने के लिए सबसे पहले सोवियत संघ में ही इतना बड़ा अभियान चलाया गया; दूसरे इसलिए कि वहाँ नारी जाति के प्रति व्यवहार का एक नया मापदण्ड स्थापित किया गया और फिर वहाँ की वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के लिए।" इसके बाद उन्होने नेहरू की सोवियत यात्राओं और उनके एवज में सोवियत नेताओं की भारत यात्राओं की चर्चा करने के बाद कहा, "इससे दुनिया मे एक नयी प्रक्रिया का आरम्भ हुआ।

"जवाहरलाल नेहरू विभिन्न देशों के बीच पुलों के निर्माण में विश्वास करते थे। सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार समिति की स्थापना नेहरू के उस काम को आगे बढ़ाना है। मुझे विश्वास है कि भविष्य मे दोनों देशों के बीच ऐसे और भी बहुत से पुल बनाये जायेंगे।"[2]

अगले वर्ष जब कि इंदिरा गाधी अपने देश की प्रधान मंत्री बन चुकी थी, उन्होने पुरस्कार विजेताओ के एक नये दल का स्वागत करते हुए भारत-सोवियत मैत्री के महत्त्व पर जोर दिया और कहा, "यह केवल दो देशो की सरकारों के बीच की मित्रता नही बल्कि दो पड़ोसी देशो की जनता की मित्रता है। यह मित्रता आपसी लेन-देन पर नहीं, बल्कि कुछ निश्चित सिद्धातो पर आधारित है। यह मित्रता पूरी दुनिया के हित में है।"[3]

नेहरू पुरस्कार विजेताओं की सूची में ऐसे लेखक, कवि, पत्रकार तथा कलाकार सम्मिलित हैं जैसे सुमित्रानन्दन पंत, हरिवंशराय बच्चन, शंकर कुरुप, वी. एस. मेनन, कृष्णचन्दर, आर. के. करंजिया, पी. वी. गाडगिल,

१. सोवियतलैंड, १९६५, संख्या २४।
२. वही।
३. वही।

एल. एन. भावे, विनोद करुणादिकर, वृन्दावनलाल वर्मा, मखदूम मोहिउद्दीन, अली सरदार जाफरी, बनारसीदास चतुर्वेदी और दूसरे बहुत से लोग।

१९६७ में भारत सरकार ने सोवियत संघ के बुद्धिजीवियों–लेखकों, कवियों, पत्रकारों, चित्रकारों वैज्ञानिकों को, जिन्होंने भारत-सोवियत मैत्री को दृढ बनाने और सोवियत जनता को भारत के इतिहास, संस्कृति तथा यहाँ की वर्तमान स्थिति से परिचित कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, प्रतिवर्ष नेहरू पुरस्कार देने का निश्चय किया। सोवियत प्रधानमंत्री एलेक्सी कोसिगिन नेहरू पुरस्कार समिति के संरक्षक हैं।

कवि मायोजेलेतिस, चित्रकार वेसिली छुकोव, संगीतकार सरजेई बाला-सान्यान तथा वैज्ञानिक येवजेनी चेलीशेव नेहरू पुरस्कार पाने वाले बहुत से विजेताओं में से कुछ सुपरिचित नाम हैं। ये पुरस्कार उस महान् मानववादी, देशभक्त और विश्वशांति तथा दुनिया-भर के लोगों की खुशहाली के प्रहरी जवाहरलाल की स्मृति को अक्षय बनाये रखने के लिए दिये जाते हैं।

चाचा नेहरू

नेहरू बच्चों के बहुत अच्छे मित्र थे। सोवियत बच्चे भी उन्हे उतना ही प्यार करते थे जितना कि नेहरू बच्चों को। नेहरू कहा करते थे कि उन्हे बच्चो से बातें करने और यहाँ तक कि उनके साथ खेलने का भी बहुत शौक है। उन्होने कहा है कि जब वह बच्चो के बीच होते है तो अपनी उम्र भूल जाते हैं।

बच्चो के लिए उनके घर के दरवाजे सदा खुले थे। जब कभी भी समय मिलता, वह भारत के नन्हे नागरिको को अपने यहाँ बुलाते। वह उनसे तरह-तरह की बातें करते। उन्हें सृष्टि के अनन्त सौन्दर्य के बारे मे, देश-भक्ति के बारे मे, विभिन्न देशो की मित्रता और भाईचारे के बारे में बताते। नेहरू बच्चो के जीवन को ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत और खुशहाल बनाने के लिए जो कुछ कर सकते थे, उन्होने किया।

नेहरू जब-जब शासकीय यात्राओ पर सोवियत संघ गये तो वहाँ के बच्चो ने बहुत उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। नेहरू बाल भवनो में अथवा छोटे बच्चो के कैम्पों मे जाते तो बच्चे फूलों से उनका स्वागत करते और गले मे बाँधने का लाल रंग का रूमाल उनकी गर्दन के चारों तरफ लपेट देते। वे उन्हे आकर्षक खिलोने भेंट करते, सपनो मे चाचा नेहरू को देखते और उन्हे बडे प्यारे पत्र लिखते।

मास्को के बोर्डिंग स्कूल संख्या-१३ के छात्रों द्वारा नेहरू को १९५९ मे लिखा गया एक अनोखा पत्र यहाँ प्रस्तुत है :

"प्रिय चाचा जवाहरलाल नेहरू,

यह पत्र सोवियत संघ के बच्चों के दल ने लिखा है। हमें मालूम है कि १४

नवम्बर को आप अपना जन्म-दिन मनायेंगे। इसीलिए हम यह पत्र भेज रहे हैं। अफसोस है कि इस अवसर पर आपको एक पुष्पहार भेंट करने के लिए हम भारत नहीं आ सकते। अधिक से अधिक हम जो कुछ कर सकते हैं, वह यही कि आपके स्वास्थ्य और हजार वर्ष की लम्बी उम्र की कामना करते हुए यह पत्र लिख रहे हैं।

"चाचा नेहरू, हालांकि हमें कभी भी आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ लेकिन हम प्रायः सोचते हैं कि वह दिन कब आयेगा, जब हम आपके साथ बैठकर विश्व-शांति और भारत के लोगों के जीवन के बारे में बातें करेंगे। हमारे अध्यापकों ने हमे बताया है कि आप भारत के लोगों के लिए और साथ ही पूरी दुनिया के लोगों के लिए शांति की व्यवस्था करने के महान् कार्य में मन-प्राण से लगे हैं। हमे मालूम है कि भारत में आपका जन्म-दिवस बाल-दिवस के रूप मे मनाया जाता है।

"हम—सोवियत बच्चों ने इस अवसर पर आपको कुछ बहुत खूबसूरत भेंट देने का निश्चय किया है। हमारे स्कूल की प्रथम कक्षा की छात्रा ओल्या फोमीचोवा ने एक रूमाल पर आपका नाम रेशमी धागों से काढ़ा है। इस काम में दस दिन लगे। उसने रूमाल पर आपका नाम हिन्दी अक्षरों मे काढा है। इस स्कूल मे हम सब बच्चे हिंदी और उर्दू पढ़ रहे है। पांचवी और छटी कक्षाओं के बच्चे कुछ भारतीय भाषाओं को पढ़ने और लिखने लगे हैं लेकिन हममें सबसे छोटा बच्चा भी 'शान्ति' और 'मित्रता' शब्दों से परिचित है। सोवियत संघ मे हर व्यक्ति 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई!' शब्दों से परिचित है। लेकिन हमारे स्कूल के बच्चे भारत के बारे मे दूसरे सोवियत बच्चों से अधिक जानते हैं, क्योंकि यह भारतीय भाषाओं का एक विशेष स्कूल है। यहाँ बहुत से विषय भारतीय भाषाओं के माध्यम मे ही पढाये जाते हैं। हम भारतीय भाषाओं के पाठों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं और उससे भी ज्यादा दिलचस्पी 'बाल यात्रियों का भारत क्लब' मे लेते हैं।

"हम भारत की परी-कथाओं और कविता को बहुत शौक से पढ़ते है, साथ ही प्राचीन भारत के बारे मे लिखी गई कहानियों मे भी हमारी बहुत दिलचस्पी है। हमारे अध्यापक ने बताया कि भिलाई कारखाने ने इस्पात का उत्पादन शुरू कर दिया है। इस पर हमने अपने अध्यापक से अनुरोध किया कि वह हमें तीन बार 'हुर्रा' करने की अनुमति दें। अध्यापक ने धीरे से हुर्रा करने की अनुमति दे दी, जिससे कि दूसरी कक्षाओं के बच्चों का ध्यान न बंटे! हमारी कोशिश के बावजूद दूसरी कक्षाओं के बच्चों ने हमारी आवाज सुनी और बाद में पूछा

कि किस शुभ अवसर के लिए 'हुर्रा' किया गया था।

"चाचा नेहरू, हम भारत के बारे में और अधिक जानने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं और जब कोई भी भारतीय हमारे स्कूल में आते हैं तो हमें बहुत खुशी होती है।

"प्रिय चाचा नेहरू, यह बहुत मजेदार बात हो कि अगर आप भी हमारे स्कूल को देखने के लिए आयें। जब आप आयेंगे तो हम आपको बहुत ही स्वादिष्ट केक और अपने स्कूल के बगीचे के सेब पेश करेंगे। हमें बताया गया है कि कुछ वर्ष पहले आप सोवियत संघ की यात्रा पर आये थे और हमसे बड़े छात्रों ने आपको देखा था। अफसोस! उस समय हम बहुत ही छोटे थे। इसलिए हम आशा करते हैं कि आप एक बार फिर हमारे देश की यात्रा पर और हमारे इस स्कूल में भी आयेंगे। अगर आप आये तो हमें बहुत ही खुशी होगी।

"अच्छा चाचा नेहरू, विदा। इस पत्र के साथ एक पार्सल भी आपको मिलेगा। इसमें कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें कि हम बच्चों ने आपके लिए अपने हाथों से तैयार किया है। एक बार फिर आपको हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

"सादर, आपके सोवियत मित्र—

इरियाना सिमिनोवा, तात्याना, जोतिना व्याचेस्लेव युवको, वलेरी वुजिनोव, आन्द्रेई नेमेदोव, अनान्ते कोनोव और आइगोर अगेयेव

मास्को के बोर्डिंग स्कूल नं० २३ के सभी छात्रों की ओर से।"

इस पत्र के लेखक तब से अब तक बड़े हो गये हैं और उन सभी के मन में नेहरू की मीठी यादें बसी हैं। उनके पत्र मे नेहरू के प्रति सम्मान और प्रेम की जो भावना अभिव्यक्त हुई है वह निश्चय ही पूरे सोवियत देश के निवासियों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है और उनके मन में नेहरू तथा उनके देश व निवासियों के प्रति जो प्रेम व आदर है, उसे अभिव्यक्त करती है।

रामायण के प्रदर्शन के अवसर पर नेहरू

—गैनेडी पेचनिकोव

सोवियत संघ के एक प्रसिद्ध कलाकार, नेहरू पुरस्कार के विजेता। सम्प्रति मास्को की केन्द्रीय बाल नाट्य संस्था से सम्बद्ध। संस्था द्वारा १९६० में किये गये रामायण के पहले प्रदर्शन से अब तक राम का अभिनय करते रहे हैं और प्रदर्शन के निदेशक भी रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू अपनी सोवियत यात्रा के दौरान इस प्रदर्शन को देखने गये तो उस समय की बहुत-सी मधुर यादें आज भी संस्था के सदस्यों के दिलों में हैं। १९७४ के साल में मास्को की बाल-नाट्य संस्था भारत की यात्रा पर आयी थी

सितम्बर १९६१ में नेहरू मास्को में थे। ८ सितम्बर को हमें रामायण का मंचन प्रस्तुत करना था। उस दिन सुबह सवेरे हमें बताया गया कि श्रोताओं में स्वयं जवाहरलाल नेहरू भी रहेंगे। हमारे लिए यह विश्वास करना मुश्किल था कि एक इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति हमारे प्रदर्शन को देखने के लिए समय निकालेगा। असल में, हमें मालूम था कि उनके हर मिनट का कार्यक्रम पूर्व निश्चित है। इसके बावजूद हमें आशा बँध गयी कि वह अवश्य आयेंगे। हमें याद आया कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में 'रामायण' और 'महाभारत' दो महान् भारतीय महाकाव्यों के बारे में क्या लिखा है। नेहरू ने लिखा है कि इन दो महाग्रन्थों का भारतीय जनता के दिलों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है और आज भी ये दोनों ग्रन्थ भारतीय जनता की मानसिकता की संरचना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। रामायण ने हम लोगों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति और साथ ही उसके इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और जनता के प्रति गहरी दिलचस्पी पैदा की है। हमें विश्वास था कि रामायण के पात्र जो कि हर भारतीय को बचपन से ही प्रिय होते हैं, रूस जैसे भारत के मित्र देश में प्रस्तुत किये जायेंगे तो नेहरू को अवश्य ही आकर्षित करेंगे।

हम सब—अभिनेता, निर्देशक, रूपसज्जाकार तथा दर्शक व्यग्रतापूर्वक अपने विशेष अतिथि के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रदर्शन आरम्भ हुए।

थोड़ा ही समय हुआ था कि हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। हमने नेहरू को हाल में प्रवेश करते हुए देखा और तमाम दर्शकों ने उन्हें पहचान लिया।

मध्यान्तर मे नेहरू नाट्यशाला के विशिष्ट कक्ष में पधारे। वहाँ भारत के सम्बन्ध में कुछ फोटोग्राफ लगाये गये थे। वहाँ बच्चों ने नेहरू को घेर लिया तो वह उनसे बहुत उत्साह के साथ मिले। कुछ मिनट तक उनसे बातें करते रहे और फिर उनके साथ फोटो खिचवाये। उन्होंने दर्शक-पुस्तिका मे हस्ताक्षर भी किये और अन्त मे मंच के पीछे कम्पनी के कलाकारो से मिलने के लिए गये।

नेहरू धीरे-धीरे हमारी तरफ आ रहे थे और अभिनेताओं की तरफ बहुत गौर से देख रहे थे जैसे रामायण के पात्रो के साथ उनकी तुलना कर रहे हो। निकट आने पर उन्होने बधाई दी और हमने उनके लिए जो मनोरंजन प्रस्तुत किया था, उसके लिए धन्यवाद दिया। मुझे उनका दृढ़ता से हाथ मिलाना, उनकी आँखों की स्नेहभरी चमक, उनके चेहरे पर सदा व्याप्त रहने वाली मधुर मुस्कान, उनके बटन के काज मे लगा वह छोटा-सा गुलाब और उनकी सफेद टोपी—सभी कुछ बहुत अच्छी तरह याद हैं। हमने उनसे एक ग्रुप-फोटो खिचवाने का अनुरोध किया। उन्होने खुशी से स्वीकार कर लिया। वह सोफा पर बैठ गये और प्रदर्शन के बारे मे अपनी राय देते रहे। हम सब सावधान थे और उनके मुख से प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न थे। तभी दूसरे भाग के शुरू होने का सकेत देने वाली तीसरी घण्टी बजी। नेहरू ने हम सबसे हाथ मिलाये और फिर मिलने का वादा करके अपने बाक्स की तरफ तेजी से चले गये। हम सबने जो कि दूसरे भाग मे अभिनय कर रहे थे, अच्छे से अच्छा अभिनय करने का प्रयत्न किया। हमे लग रहा था कि आज पूरा भारत, उसका इतिहास और उसकी जनता हमे देख रही है।

हमारे थियेटर मे आने से पहले नेहरू बहुत से शासकीय कार्यक्रमों मे सम्मिलित हो चुके थे और उससे थक गये थे। इसलिए उन्होने थोड़े आराम और मनोरंजन के खयाल से हमारा प्रदर्शन देखने की अनुमति दी थी। थियेटर के कलाकारो और दर्शकों से मिलकर और अभिनेताओं का उत्साहपूर्ण अभिनय देखकर नेहरू सचमुच बहुत प्रसन्न थे।

मुझे विश्वास है कि नेहरू ने बाल-नाट्य संस्था के रामायण के प्रदर्शन को देखने की अनुमति बच्चों के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम के कारण भी दी होगी। सितम्बर की उस शाम हम सब कलाकार तथा दर्शक इस सचाई को बार-बार अनुभव करते रहे।

नेहरू के जन्म-दिवस १४ नवम्बर को, जो कि भारत में बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है, मास्को के केन्द्रीय नाट्य-संस्थान में रामायण का प्रदर्शन हुआ। नवम्बर १९७१ में हमारी कम्पनी ने रामायण का १५०वाँ प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

बहुत समय नही बीता जबकि केन्द्रीय बाल-नाट्य संस्थान ने निकोलाई *आस्त्रोवस्की के उपन्यास 'हाउ द स्टील वाज टेम्पर्ड' के इसी नाम के नाट्य-रूपान्तर* का रिहर्सल पूरा किया। इस नाटक के मंच-निर्देश देते समय मुझे अक्सर नेहरू की याद आयी। कारण यह कि नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत की कहानी' का समापन मनुष्य जीवन के वास्तविक अर्थ के बारे में आस्त्रोवस्की की प्रसिद्ध उक्ति से किया है : "मनुष्य के पास सबसे मूल्यवान चीज उसका जीवन है। यह जीवन क्योंकि केवल एक बार जीने के लिए उसे मिला है, इसलिए इसे इस तरह जीना चाहिए कि कायरतापूर्ण तुच्छ भूतकाल की शर्म के मारे वह कठोर न हो जाये, इस तरह जीना चाहिए कि वह बरसों तक बेमकसद यातना न झेलता रहे, इस तरह जीना चाहिए कि मरते समय वह कह सके, 'मेरा पूरा जीवन और पूरी शक्ति दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य मनुष्य मात्र की मुक्ति' को समर्पित रहे हैं।' "

मेरे विचार से यह सिद्ध करता है कि नेहरू हमारे समय को कितनी बारीकी से समझते थे, भविष्य को परखने की उनमें कितनी अद्भुत क्षमता थी और सोवियत साहित्य के वे कितने अच्छे पारखी और प्रशंसक थे। इससे यह भी प्रकट है कि नेहरू ने सोवियत साहित्य के नायकों से प्रेरणा ग्रहण की और वह भारत की नयी पीढ़ी को सचेत करने के प्रति किसी हद तक जागरूक थे। इसीलिए उन्होंने सोवियत लेखकों के उपन्यासों के पात्रों के प्रेरक उदाहरणों की ओर संकेत किया।

मुझे १९७४ में तुलसीकृत रामायण की ४००वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित समारोहों में भाग लेने के लिए 'इंडियन काउन्सिल फार कल्चरल रिलेशन्स' के निमन्त्रण पर भारत की यात्रा का सौभाग्य मिला। सबसे पहले मैं नेहरू संग्रहालय देखने गया। वहाँ मैंने दर्शकों की पुस्तिका में लिखा कि मास्को के केन्द्रीय बाल नाट्य-संस्थान के कलाकार तथा अन्य कर्मचारी नेहरू को सदा याद रखेंगे, क्योंकि हम जब भी रामायण का प्रदर्शन प्रस्तुत करते हैं तो हमें उस समय की मधुर स्मृतियाँ घेर लेती हैं, जब कि नेहरू हमारे संस्थान को देखने आये थे।

नेहरू ने अपना वादा पूरा किया

मिरजा मखमुतोव

तातार स्वायत्तता प्राप्त सोवियत समाजवादी गणतन्त्र के शिक्षा मन्त्री। मिरजा मखमुतोव ने १९६१ में अध्यापक संघ के जबलपुर में आयोजित अधिवेशन में भाग लिया।

हम भारत के विभिन्न दर्शनीय स्थानों के दौरे से वापस दिल्ली लौटे थे कि हमें सोवियत दूतावास के एक अधिकारी ने बताया कि प्रधान मन्त्री नेहरू सोवियत संघ में राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा सुविधाओं के विस्तार के बारे में, विशेष रूप से संघ तथा स्वायत्तता प्राप्त गणतन्त्रों में रूसी तथा अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की शिक्षा के बारे में और विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच संचार के माध्यम के रूप में भाषा को योगदान के बारे में दिलचस्पी रखते हैं। यही कारण है कि वे सोवियत शिक्षाविदों के प्रतिनिधि मंडल से मिलना चाहते हैं।

हम निश्चित समय पर नेहरू के निवास-स्थान पर पहुंचे। हम छः व्यक्ति यानि पूरा सोवियत प्रतिनिधि मंडल वहाँ था। नेहरू हमें अपने अध्ययन कक्ष के दरवाजे पर ही मिल गये। उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया और सबसे अलग-अलग हाथ मिलाये। इस अवसर पर भारत में सोवियत संघ के राजदूत आई० ए० बेनेदिक्तोव भी उपस्थित थे। मैं दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रों में से एक के प्रधान मन्त्री और दुनिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक के साथ मिलने के लिए अत्यधिक उत्सुक और उत्तेजित था। संसार मे कुछ लोग होते है, जिनका व्यक्तित्व इतना प्रभावपूर्ण होता है कि लगता है जैसे उनमें से एक आन्तरिक प्रकाश फूट रहा है। नेहरू भी उन्ही व्यक्तियो में से एक थे। उनसे जो भी व्यक्ति मिलता, वह उनकी मुख मुद्राओं, धीमी आवाज, जादूभरी मुस्कान और उनके सम्पूर्ण व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रहता और उसके मन में नेहरू के प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हो जाती।

उन दिनों शायद शासन का काम अधिक बढ़ा हुआ था—प्रधान मन्त्री कुछ थके हुए से दिखायी दिये।

नेहरू को बताया गया था कि हम लोगों मे ताशकन्द की एक अध्यापिका रोनो कायुमोवा भी है। वह उज़बेक के स्कूली बच्चों की कई हिन्दी पाठ्य-

पुस्तकों की सह-लेखिका हैं। हमने नेहरू को हिन्दी अक्षर-ज्ञान की दो पुस्तकें भेंट की थीं। नेहरू ने उन पुस्तकों को बहुत गौर से देखा और कहा कि भारत को एक ऐसी भाषा की बहुत बड़ी आवश्यकता है, जिसके द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी जनता के बीच सम्पर्क स्थापित किया जा सके। उन्होंने कहा कि अगर वे तमाम भारतीय स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था कर सकें तो यह एक उपलब्धि होगी। दुर्भाग्य से हमारे देश मे कुछ ऐसे लोग हैं, जो हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करने में हिचकते है लेकिन मुझे विश्वास है कि देश की बहुभाषी जनता के हितो को ध्यान मे रखते हुए, वे लोग बाद में हिन्दी के प्रति अपने रुख परिवर्तन कर लेंगे।

सोवियत राजदूत ने नेहरू को बताया कि हमारे प्रतिनिधि मंडल मे एक प्रतिनिधि तातार स्वायत्तता प्राप्त गणतन्त्र का भी है। नेहरू ने मुझसे हमारे गणतन्त्र की स्कूली शिक्षा के बारे मे बहुत-से सवाल पूछे। साथ ही यह भी पूछा कि मैंने अंग्रेजी कहाँ सीखी—मास्को मे या कज़ान मे? मैंने उत्तर दिया कि मैंने अंग्रेजी मास्को मे पढ़ी है। तब मैंने प्रधान मन्त्री को बताया कि मेरे पास कज़ान की एक स्कूली लड़की का पत्र है। मैंने कहा, "जब आप जून १६५५ मे अपनी बेटी के साथ कज़ान गये तो हवाई अड्डे पर आपका स्वागत करने वालो मे एक स्कूली लड़की भी थी। उसने फूलों से आपका स्वागत किया था। अब उस लडकी ने मुझसे कहा कि मैं उसकी शुभकामनाएँ आप तक पहुँचा दूँ और आपसे कहूँ कि उसके लिए भारत मे एक अच्छा पॅन-फ्रेंड तलाश करने मे उसकी सहायता करे।"

नेहरू मुस्कराये और तभी उन्होने अपने एक सहायक को आदेश दिया कि इस अनुरोध पर तुरन्त गौर की जाए। उन्होने कहा, "यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण अनुरोध है। हमारे दोनो देशों के नन्हे नागरिक हमारी मित्रता को बहुत दृढ कर सकते हैं।"

नेहरू कुछ क्षण सोचने-समझने के लिए रुके और फिर उन्होंने हाथी-दांत का एक छोटा-सा टुकडा उठाया, जिस पर कि अशोक के शान्ति-संदेश खुदे हुए थे। नेहरू ने वह टुकडा मुझे दिया और कहा, "कृपया इसे अपने नगर के नन्हे नागरिक तक पहुंचा दीजिए।"

बातचीत समाप्त होने पर हम लोगो ने नेहरू के साथ एक सम्मिलित फोटो-ग्राफ खिचवाया। इसके बाद नेहरू हमे दरवाजे तक छोड़ने आये और उन्होंने हम सबको विदाई दी।

मैं नेहरू के साथ हुई इस स्मरणीय भेंट को कभी नही भूलूंगा। वह हाथी-

दांत का टुकड़ा अब कजान के एक संग्रहालय में है। नेहरू अपने वायदे को नहीं भूले और अब एक भारतीय छात्र तथा उपरोक्त तातार लड़की में नियमित पत्र-व्यवहार हो रहा है।

सोवियत संघ में नेहरू की रचनाओं का प्रकाशन

पूरे सोवियत संघ में नेहरू की रचनाओं को बहुत दिलचस्पी के साथ पढा जाता है। कुछ अपवादो को छोड़कर उनकी प्राय: सभी रचनाएँ रूसी भाषा मे अनूदित हैं और बहुत बडे संस्करणो मे प्रकाशित हो चुकी हैं।

भारत की कहानी

१९५५ मे इनोस्त्रान्ताया लितरेचर प्रकाशन ने नेहरू की भारत की कहानी का प्रकाशन किया।

इसके रूसी सस्करण की भूमिका में नेहरू ने अपनी सोवियत संघ की यात्रा से कुछ ही समय पहले दिल्ली में २८ मई १९५५ को लिखा, "मुझे प्रसन्नता है कि मेरी पुस्तक 'भारत की कहानी' का रूसी भाषा में अनुवाद किया जा रहा है। यह पुस्तक बारह वर्ष पहले उस समय लिखी गयी थी जब कि मैं जेल मे था और युद्ध दुनिया के एक बडे भूभाग मे पंजे फैलाये था। इससे मेरी उस वक्त की मनःस्थिति और विचारों का पता चलता है।

"पिछले दस वर्षों मे दुनिया मे बहुत बड़े परिवर्तन हुए है और इस शताब्दी के पाँचवें दशक के आरम्भिक वर्षों के मुकाबले हम बहुत आगे निकल आये है। लेकिन पुस्तक मुख्य रूप से भारत के भूतकाल से सम्बन्धित है और समवत: इस प्राचीन देश की पृष्ठभूमि को समझने में किंचित् सहायक हो सकती है। शायद यह उन घटनाओं को समझने में भी कुछ सहायक हो जिनका प्रभाव भारत की आज की पीढी पर पड़ रहा है।

"कुछ ही दिनों में, आशा है, मुझे इस महान् देश—सोवियत संघ—की यात्रा करने का सौभाग्य मिलेगा। जिस देश के बारे में मैं इतना कुछ पढ़ता रहा हूँ उसे अपनी आँखों से देखने और उन शक्तियों को किसी हद तक समझने का मौका मिलेगा, जो कि संसार को व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले इस विराट तथा महान देश के निर्माण में संलग्न रही हैं। मेरे लिए यह विशेष प्रसन्नता की बात है कि यह पुस्तक जो कि मेरे कारावास जीवन के एकान्त क्षणों की उपलब्धि है, अब रूसी भाषा में प्रकाशित होने जा रही है।"[1]

मेरी आत्मकथा

उसी वर्ष १९५५ में सोवियत संघ में नेहरू की आत्मकथा का प्रकाशन भी किया गया। सोवियत संस्करण की भूमिका में नेहरू ने लिखा :

"लगभग छः मास पूर्व मैंने अपनी पुस्तक 'भारत की कहानी' के रूसी अनुवाद की भूमिका लिखी थी। उस भूमिका को लिखने के कुछ ही समय बाद मुझे सोवियत संघ की यात्रा का सुअवसर मिला। मैं पन्द्रह दिन वहाँ रहा। इस अवधि मे उस महान देश और उसकी महान जनता का बहुत ही गहरा प्रभाव मेरे मन पर पड़ा। मेरी यात्रा यद्यपि संक्षिप्त थी, फिर भी इसके द्वारा मैं सोवियत संघ की महान प्रगति और वहाँ की जनता की आत्मीयता, प्रेम और शांतिप्रियता के बारे मे काफी कुछ जान-समझ सका। उस यात्रा की याद बहुत दिनों तक मेरे साथ रहेगी।

"यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरी पुस्तक का सोवियत संघ मे स्वागत हुआ है और उसे बहुत लोगों ने पढ़ा है। यह जानकर मुझे स्वाभाविक रूप से एक लेखक का गर्व अनुभव हुआ। लेकिन साथ ही यह आशा भी बँधी कि इससे रूसी लोगों को भारत को और अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी।

"अब मुझे दूसरी पुस्तक 'आत्मकथा' के रूसी अनुवाद की भूमिका लिखने के लिए कहा गया है। मैं प्रसन्नतापूर्वक इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि यह आत्मकथा मैंने अब से बीस वर्ष पहले लिखी थी। दूसरी पुस्तक की तरह यह भी जेल मे लिखी गयी थी। पुस्तक में कुछ तत्कालीन सामयिक महत्त्व के विषयों पर लिखा गया है, जो शायद आज उतना महत्त्व नहीं रखते। लेकिन इससे तत्कालीन भारत की और विशेष रूप से स्वाधीनता संघर्ष में जूझ रहे लोगों की मानसिक संरचना को समझने में

१. सोवियतलैंड, १९५५, सं० १२।

मदद जरूर मिलती है।

"उस समय से अब तक बहुत-सी घटनाएँ घट चुकी हैं और इस घटना-प्रवाह में स्वाभाविक रूप से हम मे से बहुत से लोग आगे बढ गये हैं या बदल गये है।

"मुझे आशा है कि यह पुस्तक भी सोवियत तथा भारतीय जनता के बीच गहरी सूझ-बूझ और आत्मीयता स्थापित करने में सहायक होगी।"

इंडियाज फ़ारेन पॉलिसी

सोवियत संघ में 'भारत की कहानी' तथा 'आत्मकथा' के प्रकाशन के दस वर्ष बाद मास्को के प्रोग्रेस पब्लिशर्स ने नेहरू के भाषणों का एक संकलन प्रकाशित किया। उनके ये भाषण १९४६ तथा १९६४ के बीच अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, सयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली के अधिवेशनों मे, भारतीय संसद मे और उनकी सोवियत संघ तथा अन्य देशो की यात्राओं के दौरान दिये गये थे।

विश्व इतिहास की झलक

मास्को के नौका पब्लिशर्स ने नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक 'ग्लिपसिज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' का रूसी अनुवाद तैयार करा लिया है और यह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। निःसन्देह यह महत्त्वपूर्ण प्रकाशन न केवल भारत के विषय में अध्ययन करने वाले सोवियत छात्रों मे बल्कि सोवियत जनता के सामान्य पाठकों में भी दिलचस्पी के साथ पढ़ा जाएगा।

जनता की स्मृति में नेहरू का नाम अमर है

भारत के स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद सोवियत संघ के विभिन्न क्षेत्रो के व्यक्ति निरंतर भारत आते रहे हैं। सोवियत सघ के बुद्धिजीवी एक के बाद एक यहां आते रहे हैं। यहां से लौटने के बाद वे अपनी रचनाओं में नये भारत के विभिन्न पक्षो—उसकी सांस्कृतिक विरासत और वहां के लोगों की स्वतंत्रता तथा खुशहाली का जीवन बिताने की आकाक्षाओं को अभिव्यक्त करते रहे हैं। सोवियत संघ मे ये रचनाएँ सुपरिचित हैं।

नेहरू और सोवियत चित्रकार

सोवियत चित्रकार जो कि समय-समय पर नेहरू से मिले, उन्होंने भारत की महान जनता की भावनाओं, उसकी सूझ-बूझ और मानवीयता के साकार रूप मे नेहरू को देखा। यही कारण है कि नेहरू ने बहुत बार सोवियत चित्रकारों को प्रेरित किया।

जिन सोवियत चित्रकारो ने नेहरू के चित्र बनाये, उनमे अलेक्ज़ेंडर जेरासिमोव और कोंसटेशियन फिनोजेनोव जैसे प्रसिद्ध पोर्ट्रेट-चित्रकार भी सम्मिलित है। उपरोक्त दोनों चित्रकारों ने भारत मे ही नेहरू के चित्र बनाये।

बाद मे अपनी पुस्तक 'एक चित्रकार का जीवन', जो कि १९६३ में प्रकाशित हुई, में अलेक्ज़ेंडर जेरासिमोव (१८८१-१९६३) ने लिखा कि भारत मे एक चित्रकार के लिए विषयो का एक अपरिमित स्रोत है, इसलिए मुझे अपने को भारतीय जनता के विशिष्ट प्रतिनिधियो के पोर्ट्रेटो की एक शृंखला तक ही सीमित रखना पड़ा। जेरासिमोव आगे लिखते हैं कि शासकीय कार्यों

मे व्यस्त रहने के कारण नेहरू को दो बार पोर्ट्रेट के लिए बैठने के कार्यक्रम को रद्द कर देना पड़ा। अपनी भारत यात्रा की समाप्ति से पहले किसी तरह जेरासिमोव ने नेहरू का पोर्ट्रेट पूरा कर ही लिया और बाद में उसे उन्हें भेंट कर दिया। सोवियत संघ वापस आने पर जेरासिमोव तथा फिनोजेनोव ने नेहरू के उस व्यवहार की बहुत प्रशंसा की जो कि उन्होने चित्रकारो के काम के दौरान उन्हे दिया।

अन्य सोवियत चित्रकारो ने नेहरू के पोर्ट्रेट उनकी सोवियत संघ की यात्रा के दौरान बनाये। उनमे से कुछ स्मृति से और कुछ फोटोग्राफ की सहायता से विभिन्न शैलियो मे बनाये गये थे। सेरवो तथा खनिन के पोर्ट्रेट तैल चित्रों के रूप मे हैं तो कुछ दूसरे चित्रकारो ने जल रंगों तथा अन्य तकनीको का प्रयोग किया है।

मित्रता के फूल

१९७४ के बसत मे 'द मास्को हाउस ऑफ फ्रैंडशिप' ने दूसरे देशों के व्यक्तियों के साथ सुविख्यात सोवियत पुष्प विशेषज्ञ लियोनिद कोलेस्निकोव को श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से एक सभा का आयोजन किया। इस सभा मे उनकी पुत्री को 'इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ लिलक ग्रोवर्स' द्वारा संचालित पुरस्कार 'द गोल्डन लिलक ब्राच' प्रदान किया गया।

लियोनिद कोलेस्निकोव ने अपने जीवन काल मे लिलक की ३०० किस्मे विकसित की थी। उनमे से बहुत-सी किस्में अब बल्गेरिया, कनाडा, पोलैंड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, चेकोस्लोवाकिया, ब्रिटेन, फ्रांस और हालैंड मे उगायी जा रही है।

कोलेस्निकोव ने सबसे पहले १९१६ मे लिलक के दो पौधे लगाये। बाद मे जबकि वह अपने लिलक के बगीचे मे और कुछ किस्मे शामिल कर चुके थे तो उन्होंने इसे राष्ट्र को भेंट मे देने का निश्चय किया। आज उनके लिलक दुनिया के हर भाग मे खिलते हुए पाये जा सकते हैं। संयोग से इनमे से कुछ के नाम भारतीय हैं।

१९५० के बसन्त मे लिलक की एक कली गहरे बैंजनी रंग के फूल के रूप मे खिली तो लियोनिद कोलेस्निकोव ने उसे नाम दिया 'इंडिया'। कोलेस्निकोव भारत को हमेशा स्नेह तथा सम्मान के साथ याद करते थे।

१९५५ मे नेहरू की सोवियत संघ की यात्रा के दौरान लिलक के पौधों पर हल्के बैंजनी रंग के फूल खिले हुए थे तो कोलेस्निकोव ने उन्हे नाम दिया

'जवाहरलाल नेहरू'।

अनाज के दानों से बना नेहरू का चित्र

काकेशस प्रान्त के ग्रोर्दझोनिकिद्ज नामक स्थान के इगनेति अल्दातोव ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अनाज के दानों से नेहरू का चित्र बनाया। अल्दातोव ने इस अनोखी शैली में चित्र बनाकर उसे अच्छी तरह पैक किया और मास्को स्थित भारतीय दूतावास को भेज दिया। यह घटना १९५८ की है। चित्र भेजने के कुछ ही दिन बाद अल्दातोव को नेहरू का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था :

"प्रिय मित्र,

मास्को में हमारे राजदूत ने आपका पत्र और आपके द्वारा बनाया गया चित्र मुझे भेजा है। मेरे विचार में यह अच्छा चित्र है और इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

मैं आपकी इस भेंट के लिए आभारी हूँ और उससे भी ज्यादा आभारी हूँ आपके उन भावों के लिए, जो कि आपने अपने पत्र में शान्ति के बारे में प्रकट किये हैं।

शुभकामनाओं सहित,
आपका
जवाहरलाल नेहरू"

राजपथ

इस नाम का चित्र एक शौकिया चित्रकार और भारतीय अध्ययन विशेषज्ञ एस० आई० पोटेबैन्को ने बनाया है। पोटेबैन्को का कहना है, "यह चित्र मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है। मेरे खयाल में हर कलाकार को अपनी रचनाओं में से कुछ विशेष प्रिय होती हैं। मैंने भारत में जितने भी चित्र बनाये, उन सबमें यह मेरे लिए विशेष महत्त्व का है। १९६३ के भारतीय गणतन्त्र दिवस की वह सुनहरी सुबह मुझे सदा याद रहेगी और याद रहेंगे राजपथ पर भारत के राष्ट्रपति के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए, सफेद शेरवानी पहने नेहरू, उनका युवकोचित फुर्तीला व्यक्तित्व, उनकी गौरवपूर्ण मुख-मुद्रा और उल्लास-भरे उत्सव की कार्यवाही।

कुछ व्यक्तियों के जीवन की तुलना चमकदार सितारों से की जा सकती है। खगोलशास्त्री बताते हैं कि कुछ चमकदार सितारे जब समाप्त हो जाते

है, उसके बाद काफी समय तक उनका प्रकाश पृथ्वी पर आता रहता है। नेहरू का जीवन भी एक ऐसे सितारे का जीवन ही था।

नेहरू शिखर

तियान शान पर्वत शृंखला मे एक ऊँचे शिखर का नाम जवाहरलाल नेहरू शिखर है। मास्को के बौमान हायर टैक्निकल स्कूल के एक पर्वतारोही दल ने समुद्री सतह से ६,७४२ मीटर ऊँचे इस शिखर को महान भारतीय नेता का नाम दिया था। इस दल मे वी. इवानोव, ए. ओवचिन्निकोव, ओ. गालकिन, एल. डोबरोवोलस्की, वी. मैक्सिमोव, वाई-कुतोव, इ. मायस्लोवस्की तथा वी. पुतरिन नामक आठ सदस्य थे। इस पर्वतारोही दल ने १२ अगस्त १९७० को नेहरू शिखर पर चढ़ने मे सफलता प्राप्त की। मार्ग बहुत कठिन था। उन्हें लम्बे समय तक केवल बर्फ पर ही चलना पड़ा। अक्सर रस्सों के सहारे चढना पड़ा। रस्से पर चढ़ते समय वे किसी भी क्षण गिर सकते थे। भयंकर तूफानो का मुकाबला करते हुए और जीवन तथा मृत्यु के बीच संघर्ष करते हुए वे एक के बाद एक दुर्गम चट्टानो पर विजय प्राप्त करते चले गये।

१९७२ मे नेहरू शिखर पर चढने का एक और प्रयत्न हुआ। इस बार वी. ग्लुबोव और वी. यावरोव, बी. सोस्टिन, वी. जैस्तस्की और बी. पैट्रक नामक पाँच पर्वतारोहियो के दल ने नेहरू शिखर पर चढते समय पूरे आठ दिन वहाँ के तूफानी मौसम मे व्यतीत किये। उन आठ दिनों में बर्फ निरन्तर ढलानो पर से फिसलती रही और ३०° सी तापमान में पर्वतारोहियों की हड्डियाँ तक जम गयी, लेकिन उन्होंने हिम्मत नही हारी और बराबर आगे बढ़ते गये। आखिर १५ अगस्त १९७२ को उन्होंने नेहरू शिखर पर पहुँचने मे सफलता प्राप्त कर ही ली।

नेहरू की स्मृति में डाक-टिकट

मई १९६४ के अन्त मे जबकि पूरे सोवियत संघ मे नेहरू की मृत्यु का शोक मनाने के लिए सभाएँ हो रही थीं तो वहाँ के संचार मन्त्रालय ने नेहरू की स्मृति मे एक डाक-टिकट जारी किया। उसकी लाखों प्रतियाँ तुरन्त ही बिक गयी।

डाक-टिकट पर छपे चित्र के चित्रकार सरजेई सोकोलोव का कहना है, "मैंने नेहरू को सबसे पहले १९६१ में उनकी मास्को यात्रा के दौरान देखा। मैंने उनका एक पूरा बड़ा चित्र बनाने के उद्देश्य से बहुत-से स्कैच बनाये।

मुझे प्रसन्नता है कि भारतीय जनता और उसके प्रिय नेता के प्रति सोवियत लोगो के मन में जो प्रेम की भावना है, उसे मेरे डाक-टिकट के माध्यम से अभिव्यक्ति लेने का अवसर मिला है।

तुर्कमान के कालीन बुनने वालों की एक कलाकृति

एक पुरानी तुर्कमानी कहावत है, "तुम अपना कालीन खोलो, मैं तुम्हारी आत्मा को पहचान लूंगा।" अश्खाबादा के कालीन बनाने के कारखाने के डिजाइनर द्‌जुयार रदनिलोव ने कालीन बुनने वाले कर्मचारी नवात मुखमेदोवा तथा अविनूर कोचुमोवा के साथ मिलकर कालीन मे जवाहरलाल नेहरू का एक चित्र बुना है, जो कि कालीन-कला का एक अच्छा उदाहरण है। यह कालीन तुर्कमान सरकार द्वारा भारत सरकार को भेंटस्वरूप देने के लिए एक जल्दी के आर्डर पर तैयार किया गया।

नव्रात का कथन है, "नेहरू सोवियत संघ के बहुत अच्छे मित्र थे। अपनी सोवियत यात्रा के दौरान वह देश-दर्शन के लिए निकले तो हमारे नगर मे भी आये थे। यहाँ वे जिस मकान में ठहराये गये अब उसका नाम 'नेहरू हाउस' ही है। नेहरू सदा हमारी याद मे बसे रहेंगे।"

नेहरू की मृत्यु से सोवियत जनता को गहरा धक्का लगा। शहरों मे और गाँवों मे, कारखानों मे और स्कूलों मे—हर जगह शोक-सभाएं हुई। भारत के उस महान् सपूत और सोवियत संघ के महान् मित्र नेहरू की मधुर याद सोवियत लोगो के दिलों मे हमेशा ताजा रहेगी।